रेशम वाणी

अंक : 60 (दिसम्बर, 2024)

के.रे.बो.-केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

पिस्का नगड़ी, राँची–835303, झारखण्ड

प्रधान सम्पादक की कलम से...

रेशम वाणी का अंक-60 आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अतिशय हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका का राजभाषा हिन्दी में प्रकाशन अद्वितीय एवं अनूठा है। जैसा की हम सभी जानते हैं कि मानव संसाधन बहुमूल्य सम्पदा है एवं सभी संसाधनों में सर्वाधिक कीमती भी। भाषा एवं संस्कृति मानव की बहुमूल्य सम्पदा है। तसर रेशम उद्योग मानव संसाधन, संस्कृति, पर्यावरण की सम्पदा का विलक्षण अवयव है। आज हमें इन सभी को समन्वित रूप में संकलित करने की आवश्यकता है क्योंकि बिना भाषा एवं संस्कृति के मनुष्य अन्य प्राणियों की तरह निरीह व निर्बल होता एवं उसका जीवन भी अधूरा होता। भाषा में यह चमत्कारिक गुण है जो हमें अन्य प्राणियों की अपेक्षा उच्चतर कोटि में स्थापित करता है। अत: यह मानव को प्रदत्त एक अनमोल वरदान है। मस्तिष्क एवं हृदय में उत्पन्न संवेदनाओं का सम्प्रेषण हम भाषाओं के द्वारा ही करते हैं। तसर रेशम उद्योग में राजभाषा हिन्दी की अतिशय महत्ता है क्योंकि देश के अधिकतर भागों में यह अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा में अंतर्निहित आंतरिक गुणों की वजह से व्यक्ति अथवा भाषिक समुदाय का इसके साथ अपनत्व, जुड़ाव व एकात्मकता सहज एवं प्राकृतिक है। भाषा एवं संस्कृति किसी राष्ट्र के आधार स्तम्भ होते हैं। भाषा का महत्व और अधिक इसलिए बढ़ जाता है कि इसमें संस्कृति के तत्व संरक्षित होते हैं। संस्कृति की प्राण वायु है – भाषा। भारत एक विशाल देश है। किसी भी देश का व्यक्तित्व उसकी संस्कृति, वेशभूषा, भाषा, कार्य-कलाप अथवा आर्थिक विकास पर निर्भर होता है। अतः भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक संस्कृति, वेशभूषा, भाषा तथा अन्य क्षेत्रों में अनेक विभिन्नताएँ हैं। अनेक विभिन्नताओं के होते हुए भी एकता है जिसके आधार पर हम विश्व समाज में अपना विशिष्ट स्थान ग्रहण करते हैं। इसी दृष्टिकोण से राष्ट्रीय स्तर पर सम्पर्क एवं संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को यह दर्जा मिला है और हिन्दी इस दायित्व का बखूबी निर्वहन कर रही है। रेशम वाणी पत्रिका तसर रेशम उद्योग के तकनीकी जानकारी एवं राजभाषा हिन्दी के बीच सेतु के रूप में निरंतर कार्य कर रही है। साथ ही इस संस्थान द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किये जा रहे हैं। अभी हाल ही में संस्थान में 'रेशम उद्योग की उन्नति में अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रसार का योगदान' विषय पर राष्ट्रीय राजभाषा रेशम तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया। इस राजभाषा राष्ट्रीय सेमिनार में रेशम उद्योग पर कुल 108 शोध-पत्र हिन्दी में प्राप्त हुए जिन्हें स्मारिका सह शोध-पत्र संकलन के रूप में प्रकाशित किया गया। यह विज्ञान के क्षेत्र में राजभाषा के बढ़ते प्रभाव का परिचायक है। हमने तसर रेशम के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य का प्रदर्शन करते हुए अभी हाल में तसर रेशमकीट भोज्य पौधे अर्थात् आसन एवं अर्जुन पौधों की 1.0 लाख नर्सरी तैयार की है। संस्थान को वर्ष, 2024 में रेशम रत्न पुरस्कार प्राप्त होना भी गौरव की बात है। ये उपलब्धियाँ हमें निरंतर प्रेरित-प्रोत्साहित कर रही हैं लेकिन हमें अभी और सफर तय करना है। रेशम वाणी का अंक-60 पर आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ.एन.बी.चौधरी)
निदेशक

रेशम वाणी

अंक : 60 (दिसम्बर, 2024)

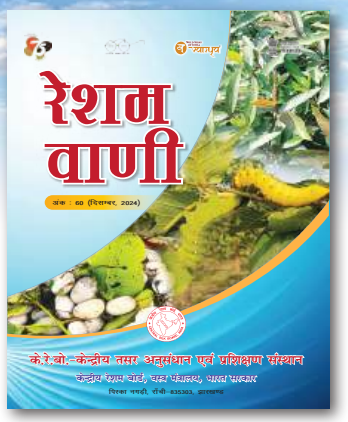

प्रधान सम्पादक

- डॉ. एन. बी. चौधरी
  निदेशक

सम्पादक

- डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय
  वैज्ञानिक–डी

सह–सम्पादक

- श्री सुनील कुमार पी.
  सहायक निदेशक (रा.भा.)

शब्द संसाधन एवं सम्पादन

- सिकन्दर रविदास
  आशुलिपिक (ग्रेड–I)

सम्पादन सहयोग

- अंजली शर्मा
  कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी)

छायांकन

- बाबूसोना मंडल
  प्रक्षेत्र सहायक

विभागीय पत्रिका

- निःशुल्क वितरण हेतु

सम्पर्क

सम्पादक, रेशम वाणी
के.रे.बो.–केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का नगड़ी,
राँची – 835303, झारखण्ड
ई–मेल : ctrtihindi@gmail.com
ctrtiran.csb@nic.in
वेबसाइट : www.crti.res.in

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार और मत रचनाकारों के निजी हैं, उनसे संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय-सूची

भाषा एवं साहित्य		
हिन्दी भारत की भाषा मात्र नहीं अस्मिता है	डॉ. संजय पंकज	2
तकनीकी आलेख		
उष्णकटिबंधीय तसर में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान	डॉ. जगदज्योति बिंकदाकट्टी	3
गजपति इकोरेस : भारतीय उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट एक नया इकोरेस	डॉ. इम्मानुएल गिलवाक्स प्रभु	5
जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितताओं के तहत टर्मिनेलिया अर्जुना आधारित वन-संवर्धन पर पुनर्विचार	डॉ. अर्नब रॉय	7
तसर उद्योग में तसर रेशमकीट उत्पादन को बढ़ाने के लिए अच्छे गुणवत्ता के अर्जुन पौधा नर्सरी का योगदान	हरगोपाल दत्ता	9
तसर रेशमकीटों के प्रजनन में आर्थिक गुणों में सुधार की संभावनाएँ	डॉ. निधि सुखीजा	11
तसर रेशमकीट के रोगों में पर्यावरणीय कारकों की भूमिका	अरुणा रानी	12
प्राचीन से आधुनिक तक रेशम मार्ग की यात्रा	कपहुन गोल्मेई	17
रेशम उत्पादन अपशिष्ट का पुनः उपयोग : पशुधन उत्पादकता बढ़ाने का मार्ग	डॉ. तपेन्द्र सैनी	18
उत्तराखण्ड में पहली बार रेशम के हस्तशिल्प उत्पादों का उत्पादन	हेम चन्द्र	21
सफलता की कहानी		
तसर रेशम कोसा विपणन में केंद्रीय रेशम बोर्ड, कच्चा माल बैंक (तसर डिपो), चाईबासा का योगदान और सफलता की कहानी	राममोहन प्रामाणिक	20
कविता		
हिम्मत	ए.एस. वर्मा	30
रेशम है वस्त्रों की रानी	डॉ. दिव्या राजावत	30
कुछ न कुछ संवाद लिखो तुम	फूल सिंह लोधी	32
"मैं तसर रेशम का कीड़ा हूँ"	डॉ. विनोद सिंह	32
तसर हमारा	शाजिया मुमताज	32
मेरे लिए तुम	साक्षी मिश्रा	33
जलता सूरज	नवीन कुमार सिन्हा	33
चंचल सपने भोले हैं	डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद	40
विविधा		
पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य	प्रमोद कुमार दूबे	31
महिलाओं के सशक्तिकरण से ही विकसित होगा भारत	नृपेन्द्र अभिषेक नृप	46
कहानी		
बेरंग-रिश्ते	नीलोत्पल रमेश	34
झुग्गी बस्ती की कहानी	देवांशु पाल	38
आजादी का साक्षी झांसी का किला	अंजु अग्निहोत्री	51
रास्ते और भी हैं	'नमिता सिंह 'आराधना	54
इतिहास, पुरातत्व एवं वैदिक साहित्य उपेक्षित क्यों	डॉ. कविता विकास	41
पालने वाले पापा	रंगनाथ द्विवेदी	48
सुनहरे बालों वाली लड़की	डॉ. रंजना जायसवाल	44
बाल कहानी		
तितली भौरा और मधुमक्खी	बद्री प्रसाद वर्मा अनजान	36
लघु कहानी		
मैंने पा लिया	मृत्युंजय कुमार मनोज	53
मदद करने वाले हाथ	महेश कुमार केशरी	53
पर्दे	अशोक कुमार ढोरिया	37
नई माँ	विनोद प्रसाद	37
बुद्धिमान शिक्षक	डॉ. चीनीपल्ली रवि शंकर	45
दर्द ईंटों का	पुष्पेश कुमार पुष्प	56
ग़ज़ल		
ग़ज़ल	'धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल	41
ग़ज़ल	'अशोक 'अंजुम	36
व्यंग्य		
अगले जन्म मोहे भारतीय ही कीजौ	विनोद कुमार विक्की	43
बेटी के ब्याह में बचत हेतु आजमाए हुए कुछ नुस्खे	ओम प्रकाश मंजुल	50

हिन्दी भारत की भाषा मात्र नहीं अस्मिता है

- डॉ. संजय पंकज*

हिन्दी भाषा के विकास की बात शुरू होते ही बुद्धिजीवियों की चिंता भी बढ़ जाती है। राजभाषा, राष्ट्रभाषा और विश्व भाषा के रूप में हिन्दी की चर्चा करते हुए अधिकांश मनोभाव हीनता और निराशा के साथ ही प्रकट होते हैं। हिन्दी के प्रति ऐसा दृष्टिकोण नया नहीं है ! हर वर्ष हिन्दी दिवस के आगे-पीछे सप्ताह, पखवाड़ा या मासिक आयोजनों में सरकारी, गैर-सरकारी प्रतिष्ठानों में महज औपचारिकता का निर्वाह होता है। जो बातें निकल कर आती हैं उसमें विश्वास और उत्साह कम ज्यादा क्षोभ और निराशा होती है। बदलाव प्रकृति का नियम है। तकनीकी विकास के दौर में तेजी से बदलते हुए विश्व में बहुत सारे मूल्य बदल गए हैं। विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जिसको भाषा दिवस विशेष का आयोजन करना पड़ता है। स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव वर्ष में भी भाषा विकास की चिन्ता आखिर क्यों ? कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय सम्पूर्ण भाषाओं में हिन्दी की व्यापकता सर्वाधिक है। समन्वय और एकता की भारतीय संस्कृति उसके भाषा-गौरव में सन्निहित है। देव भाषा संस्कृत सबसे समीप की भाषा हिन्दी है। विश्व को पता है कि संस्कृत भाषा और उसका साहित्य कितना संवर्धित, परिमार्जित और उत्कृष्ट है। विभिन्न ज्ञानधाराओं को संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया गया है। वेद, उपनिषद और पुराणों के साथ ही रामायण तथा महाभारत जैसे अनेक ग्रंथों का जो महत्व है उसे कभी अस्वीकृत नहीं किया जा सकता है। संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी हिन्दी की भी लिपि है। इस लिपि की वैज्ञानिकता सिद्ध और प्रमाणित है। भारत के छोटे क्षेत्र से हिन्दी का उद्भव माना जाता है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध स्वतंत्रता के युद्ध के लिए भारतीय एकता में सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रयोग किया गया और इसके लिए सर्वमान्य स्वीकृति अहिन्दी भाषी बुद्धिजीवियों, चिंतकों, स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्रीय नेताओं ने दी। पूरे देश में स्वतंत्रता प्राप्ति की लहर उठी जो एकजुट होती हुई ज्वार बन गई। हिन्दी ने जो व्यापक सम्पर्क स्थापित करने का काम किया और उसका जैसा गहरा तथा दूरगामी परिणाम प्राप्त हुआ इसके पीछे हिन्दी की सहजता, सरलता, सादगी और निष्ठा है। स्वतंत्रता, स्वाभिमान, अस्मिता और भारतीय निष्ठा की भाषा हिन्दी अपनी उदारता तथा व्यापक जन स्वीकृति के कारण निरंतर अपना प्रसार करती हुई फैल गई। लोक चेतना और जन संस्कृति में जो भाषा हृदयंगम हो चुकी है उसे समाप्त करना संभव और आसान नहीं है। हिन्दी भारत की भाषा मात्र नहीं है और भी बहुत कुछ है ! भारतीय जन अपने मांगलिक अनुष्ठानों तथा सारे संस्कारों में पूजा-पाठ, हवन तथा मंत्रों का प्रयोग करते हैं। मंदिरों में होने वाले भजन, संकीर्तन तथा प्रार्थनाओं में जिन देवी-देवताओं के नाम उच्चरित होते हैं वे संस्कृत वांग्मय या लोक प्रचलन से आये हैं। राम, कृष्ण और शिव भारतीय प्रज्ञा के श्रेष्ठतम् प्रतिमान हैं। ये नाम और चरित सम्पूर्ण भारत में शताब्दियों से प्रवाहित और गुंजायमान हैं। संशय तो इतिहास के संदर्भों पर होता है। बनने-मिटने की उसी में संभावना होती है। भारत की धार्मिक , सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना में जो पारंपरिक आस्था भरी और बसी हुई है उसे खाली करना तथा उजाड़ना किसी के बूते से बाहर की बात है। हिन्दी की उत्तरोत्तर प्रगति हुई है जबकि इसको लेकर राजनीतिक इच्छाशक्ति सदा ही लुंज-पुंज रही है। सोचने पर बड़ा विचित्र लगता है कि एक देश के कई-कई नाम हैं। यह भारत, हिंदुस्तान और इंडिया भी है। हिंदुस्तान और इंडिया के द्वंद्व से भी संभवत: बहुत कुछ गड़बड़ तथा गड्ड-मड्ड है। स्वतंत्र भारत में भाषा-नीति को लेकर राजनेताओं के बीच जो बहस हुई तो उसका फलाफल असमंजस में आया ! कुछेक नेताओं के विचार हिन्दुस्तानी भाषा के पक्ष में थे। यह हिन्दुस्तानी भाषा हिन्दी-उर्दू मिश्रण है। इसके प्रतिवाद में तर्क दिया गया कि उर्दू भाषा नहीं शैली है। गम्भीरता से भाषा-नीति पर विचार नहीं करने का परिणाम यह हुआ कि हिन्दी राजभाषा तो बन गई लेकिन आज भी घोषित राष्ट्रभाषा नहीं है ! राष्ट्रभाषा की अहमियत विश्व के सारे देश जानते हैं। हर देश की अपनी राष्ट्रभाषा है। भारत ही है जिसकी आज भी घोषित और निर्धारित कोई राष्ट्रभाषा नहीं है फिर भी हम गर्व से कहते हैं कि हिन्दी हमारी अस्मिता, स्वाभिमान और चेतना की भाषा है। यह गर्वोक्ति कहीं हमारी हीनता-ग्रंथी तो नहीं है ! बुद्धिजीवियों के लिए संभव है कि ऐसा हो मगर भारतीय लोक और जन के लिए सचमुच हिन्दी गर्व, पराक्रम, स्वाधीनता और चेतना की भाषा है। भारतीय निष्ठा विरासत को बचाने और पूर्वजीय परम्परा को आगे बढ़ाने में विश्वास करती है। हिन्दी हमारी परम्परा है जिसे हम थाती की तरह संभाल कर निरंतर समृद्ध करते रहेंगे। इस सम्पदा को हमारे पूर्वजों ने जैसे बचाया है वैसे ही हम बचाने के अघोषित संकल्प के साथ सतत् गतिमान रहेंगे। दूरदर्शी कवि गोपाल सिंह नेपाली ने दशकों पहले बुलंद स्वर में गाया था -

'दो वर्तमान का सत्य सरल सुंदर भविष्य के सपने दो
हिन्दी है भारत की बोली तो अपने-आप पनपने दो !

हिन्दी का विकास तेजी से हुआ है। यह जन-जन का कंठहार बनती पूरे देश में सुशोभित हो रही है। विश्व के अनेक देश हिन्दी को सम्मानित दृष्टि से देखते भर नहीं बल्कि उसे अंगीकार भी कर रहे हैं। अब तो हिन्दी बाजार की भाषा है इसलिए स्वाभाविक रूप से विश्व भाषा बन गई है। चीनी भाषियों की संख्या सबसे बड़ी है मगर चीन की घनी आबादी से बाहर आखिर किन-किन देशों में चीनी भाषा का प्रचलन है, यह भी हमें सोचना चाहिए ? अंग्रेजी भाषा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कारण भले ही व्यापक रूप से फैल गई मगर सिमट गया जब ब्रिटेन ही तो फिर इसके फैलाव का विवेकपूर्ण औचित्य अब कहां रहा ? यह मानसिक गुलामी है जिसे कई देश ढो रहे हैं। ब्रिटिश गुलामी से मुक्त भारत भाषायी गुलामी में बुरी तरह से जकड़ा हुआ है इसीलिए हिन्दी दिवस का आयोजन करते हुए लगभग पूरे महीने चिंतन से ज्यादा गंभीर रूप से चिंता व्याप्त रहती है। हिन्दी विश्व के अनेक देशों में बोली, लिखी और समझी जाने वाली विश्व भाषा के रूप में समादृत है। कोरोना वायरस के कारण चीन की विश्वसनीयता संपूर्ण संसार में कमजोर हुई है। चीन के उत्पादनों का बाजार भी सिमट गया है। भारत

ने विश्व के अनेक देशों के उत्पादनों के लिए अपना द्वार खोल दिया है। भारत में आने के लिए दो सौ से ज्यादा देशों ने हिन्दी में अपने छात्रों को प्रशिक्षित करना शुरू कर दिया है। हिन्दी के प्रसार में भारतीय साहित्य, सिनेमा, रेल, बैंक, हिन्दी अखबारों, दूरदर्शन चैनलों और व्यापारिक प्रतिष्ठानों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। 1893 में शिकागो के विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद के माध्यम से पूरे ऐश्वर्य के साथ भारत खड़ा हुआ था। संसार की आशा भरी दृष्टि भारत की ओर पुरजोर ढंग से उठी। विश्व बंधुत्व और संकट मोचक के रूप में भारत विवेकानंद के शौर्य से भासमान हुआ। स्वामी दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश जैसी विशिष्ट और अति महत्वपूर्ण कृति को हिन्दी में प्रस्तुत किया। भारतीय धर्मचार्यों, धार्मिक संस्थानों तथा प्रवचन कर्ताओं का हिन्दी के प्रचार-प्रसार में ऐतिहासिक और शाश्वत महत्व है। अजात शत्रु और सर्वप्रिय अटल बिहारी वाजपेयी के हिन्दी प्रेम तथा संकल्प ने संयुक्त राष्ट्र संघ में जब हिन्दी को गुंजायमान किया तो संसार भली-भाँति हिन्दी भाषा की आत्मीयता से परिचित हुआ और फिर वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसे पूरे भारत से बाहर राजनीतिक सद्भाव के साथ प्रतिष्ठित किया। हिन्दी भारत की भाषा मात्र नहीं बल्कि अस्मिता है। सूर, तुलसी, कबीर जैसे स्वाभिमानी तथा सांस्कृतिक साहित्य साधकों ने इस भाषा को गौरव शिखर पर स्थापित किया। हिन्दी तो सचमुच भारत की प्रकृति है। प्रकृति में बदलाव होता है उसका समापन नहीं। बीज मिट्टी की पथरीली परतों को चटका कर अंकुरित होता है। उचित वातावरण में बीज वृक्ष बनकर विशाल होता है। वृक्ष की विशालता से उसकी समृद्ध वंश वृद्धि होती है। हिन्दी वृद्धि-समृद्धि भरपूर संतोष देने वाली है। ऐसे में निराशावादी स्वर महज बुद्धिजीविता का अनर्गल भड़ास तथा प्रलाप है। निरंतर विकसित और फैलती हुई हिन्दी भाषा कभी शिथिल और विचलित नहीं हुई, यह तो प्रमाणित है। इसके विकास के प्रति संशयपूर्ण दृष्टिकोण भ्रामक और निर्मूल है। भारतीय स्वतंत्रता की भाषा हिन्दी अंधकार से प्रकाश की सुदृढ़ यात्रा करते हुए ऊंचाई की ओर लगातार अग्रसर है। संशय करने वालों के लिए इतना ही कहा जा सकता है कि -

कुछ नहीं दिखता था अंधेरे में मगर आंखें तो थीं,
ये कैसी रोशनी आई कि लोग अंधे हो गए !

भारत की राजनीतिक इच्छाशक्ति संकल्पित होकर अपनी दृढ़ता का अगर व्यापक परिचय दे तो हिन्दी के प्रति थोड़ी बहुत हमारी जो झिझक और शंका है निश्चित रूप से वह पूर्णत: समाप्त हो जायेगी। हमें तो महाप्राण निराला के स्वर में गाना चाहिए -

भारति जय विजय करे,
कनक शस्य कमल धरे !

भारत की भारती यह हिन्दी विश्व भाल पर अपने आलोक के साथ चमकती हुई एक ऐसी दिव्य बिंदी है जिसमें विराट आत्मीयता और शाश्वत प्रेम अंतर्भुक्त है। मंत्र सिंचित शीतलता की वाणी हिन्दी में सूर्य का दिव्य जागृति-आलोक है तो निर्मल चाँद की निष्कलुष उज्जवलता भी है। इसे दूसरी भाषा से प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्धा नहीं है। एक महा समुद्र है हिन्दी जिसमें अनेकानेक भाषायी नदियां आकर अंतर्लीन हो जाती हैं। हर भाषा का अर्थ-व्यापक शब्द इसे स्वीकार्य है।

'होता है सूरज का प्रभाव तो होता रहे,
समुद्र में उछाल तो चांद ही लाता है !

*'शुभानंदी', नीतीश्वर मार्ग, आमगोला, मुजफ्फरपुर।

रेशम वाणी

तकनीकी आलेख

उष्णकटिबंधीय तसर में स्वदेशी तकनीकी ज्ञान

डॉ.जगदज्योति बिंकदाकट्टी*, डॉ. एच.एस.गडाद, रजनी कुमारी, डॉ. विशाल मित्तल एवं डॉ. एन.बी.चौधरी

प्रस्तावना : सेरीकल्चर या रेशम पालन, रेशमी कीड़ों की खेती कर रेशम का उत्पादन करने की प्रक्रिया है। तसर सेरीकल्चर में तसर के कीड़ों *(एन्थीरिया एसपीपी.)* का पालन होता है, जो जंगली पौधों पर भोजन करते हैं। तसर रेशम अपनी मजबूती और प्राकृतिक चमक के लिए प्रसिद्ध है और यह ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि तसर सेरीकल्चर को कीटों के संक्रमण, पर्यावरणीय परिवर्तन और रोगों जैसे खतरों का सामना करना पड़ता है जिससे उत्पादन में कमी आ सकती है। इस संदर्भ में, स्थानीय तकनीकी ज्ञान (आईटीके) की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सतत् प्रथाओं और लागत-कुशल तरीकों को बढ़ावा देकर किसानों को सहारा देता है। स्वदेशी तकनीकी ज्ञान (आईटीके) एक समुदाय आधारित कार्यात्मक ज्ञान प्रणाली है जिसे लोगों की पीढ़ियों द्वारा अपने आस-पास के पर्यावरण के साथ निरंतर संवाद, अवलोकन और प्रयोग के माध्यम से विकसित, संरक्षित और परिष्कृत किया गया है। स्थानीय तकनीकी ज्ञान न केवल कृषि उत्पादन में सुधार लाता है बल्कि यह स्थानीय संस्कृति, सभ्यता और धार्मिक प्रथाओं को भी बनाए रखता है। इन प्रणालियों के अध्ययन से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि कैसे समुदाय अपने प्राकृतिक संसाधनों का कुशल प्रबंधन करते हैं। परियोजना APR04015CN के तहत उष्णकटिबंधीय तसर में पहचाने गए विभिन्न स्थानीय तकनीकी ज्ञान (आईटीके) को झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में पाया गया है। इन क्षेत्रों में तसर सेरीकल्चर एक पारंपरिक उद्योग के रूप में अस्तित्व में है और स्थानीय समुदायों द्वारा अपनाए गए विभिन्न तकनीकी ज्ञान और प्रथाएँ इस उद्योग की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। उदाहरण के तौर पर झारखंड और छत्तीसगढ़ के आदिवासी समुदायों के पास तसर कीड़ों के पालन के लिए विशेष प्रकार के जंगली पौधों का चयन करने का ज्ञान है जो कीड़ों के लिए आदर्श भोजन होते हैं। इसके अलावा पश्चिम

बंगाल और उत्तर प्रदेश में तसर सेरीकल्चर से जुड़े किसानों ने कीड़ों के स्वास्थ्य और उत्पादन को बढ़ाने के लिए पारंपरिक उपायों का उपयोग किया है, जैसे कि कीटों के प्राकृतिक शिकारियों को प्रोत्साहित करना और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना। इन स्थानीय तकनीकों का संग्रह और अध्ययन कृषि में टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक होगा जिससे न केवल तसर सेरीकल्चर को प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि इन क्षेत्रों के किसानों की जीवन शैली और आर्थिक स्थिति में भी सुधार होगा।

स्थानीय तकनीकी ज्ञान का नाम एवं फोटो

तसर रेशमकीट शिकारी विकर्षक
सराइकेला खरसावां, झारखंड

लकड़ी की राख (चारा)
देवघर, झारखंड

स्थानीय सचिव (राचम)
पश्चिमी सिंहभूम, झारखण्ड

तसर रेशमकीट स्थानांतरण उपकरण

चलानि
सराइकेला खरसावां

स्थानांतरण घोड़ा
कोरबा, छत्तीसगढ

डांवर
सराइकेला खरसावां, झारखंड

झम्पा
दुमका, झारखण्ड

पक्षियों के नियंत्रण के लिए

धनुष
सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

भिल
कोरबा, छत्तीसगढ

गुलेल
पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

झम्पा
दुमका, झारखण्ड

कीट और शिकारी के नियंत्रण के लिए

चिकादी
बस्तर,छत्तीसगढ

लता खाती
दुमका, झारखण्ड

लड्डा बड़ी
दुमका, झारखण्ड

चिपचिपी छड़ी
पश्चिमी सिंहभूम, झारखण्ड

रेशमकीट ब्रश
सिवनी चांपा,छत्तीसगढ

पत्ता कप
बस्तर,छत्तीसगढ

महुआ माल
बस्तर, छत्तीसगढ़

रानू
सराइकेला खरसावां, झारखंड

*वैज्ञानिक-डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

रेशम वाणी

गजपति इकोरेस : भारतीय उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट एक नया इकोरेस

डॉ. इम्मानुएल गिलवाक्स प्रभु*[1], डॉ. प्रशांत कुमार कर[1], डॉ. हनमंत गडाद[1], डॉ. जितेन्द्र सिंह[1], डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय[1] एवं डॉ. एन.बी.चौधरी[1]

प्रस्तावना : *एन्थीरिया माइलिट्टा* जिसे तसर रेशमकीट या उष्णकटिबंधीय तसर पतंग के नाम से जाना जाता है, सैटर्निडाई परिवार की एक प्रजाति है। कई शोधकर्ताओं ने *ए.माइलिट्टा* के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है जिसमें अंडे देने के पैटर्न (साउण्डप्पन एट ऑल, 2021) और पक्षियों द्वारा होने वाले नुकसान (रेड्डी एट ऑल, 2020) शामिल हैं। जैव-रासायनिक अनुसंधान में मध्य आंत के बैक्टीरियल संबायिक जीव की विशेषता के लिए मेटा जेनोमिक्स (बेग एट ऑल, 2023), हिस्टामिन न्यूरोपेप्टाइड इम्यूनोहिस्टोकेमिस्ट्री के माध्यम से स्थानिककरण (बरसागडे एट ऑल, 2022) और विभिन्न व्यावसायिक इकोरेस जैसे डाबा, रैली और आंध्रा लोकल में कोकूनेज जैसे एंजाइम (स्नेहा एण्ड पाण्डेय, 2022; रानी एट ऑल, 2024) और सेरीसिन प्रोटीन (जेना एट ऑल, 2021) की विशेषता पर ध्यान केंद्रित किया गया है। आण्विक-आनुवांशिकी अध्ययन में क्लोनिंग और RAPD-SCAR मार्करों का विकास (प्रभु एट ऑल, 2023), एरिलफोरिन प्रोटीन का विश्लेषण (दत्ता एट ऑल, 2020) और डाबा, रैली और आंध्रा लोकल जैसे इकोरेस से DNA का जीनोम पृथक्करण और मात्रात्मक विश्लेषण (मंडा एट ऑल, 2019) शामिल हैं। उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट, *एन्थीरिया माइलिट्टा* के व्यापक वितरण के कारण इसका विभिन्न पर्यावरणीय-परिस्थितियों वाले कई राज्यों में मिलना है; इसकी जनसंख्या कई भागों में विभाजित हो गई है, प्रत्येक अपने विशेष निवास में अनुकूलित है जिसे 'इकोरेस' कहा जाता है (राय एट ऑल, 2024)। अब तक कुल 45 इकोरेस की पहचान की गई है जिनमें से 44 का भारत में पंजीकरण किया गया है (www.databases.nbair.res.in)। ओडिशा राज्य में सात इकोरेस का दस्तावेजीकरण किया गया है जिनमें मोदल, नलिया, सुकिंदा, जाटा-डाबा, बौध, उमर कोट और अदाबा शामिल हैं। ये इकोरेस उन स्थानों के नाम पर रखे गए हैं जहां इन्हें पहली बार पहचाना गया था। अब तक के अध्ययन मुख्य रूप से फेनोटाइपिक स्तर तक सीमित रहे हैं (राय एट ऑल, 2024)। गजपति ओडिशा से एक नए इकोरेस पहचानी गई है जिसमें अधिक आनुवांशिक विविधता है। गजपति इकोरेस गजपति जिले में पाई जाती है जो ओडिशा राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित है और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, दृश्य सौंदर्य और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। गजपति जिला महाराजा श्री कृष्णचंद्र गजपति नारायण देव के नाम पर रखा गया है जो ब्रिटिश राज के दौरान पारालाखेमुंडी संपत्ति के राजा थे। यह गंजम, रायगढ़ और कंधमल जिलों से घिरा हुआ है (चित्र-1)।

उभरते हुए तसर रेशमकीट इकोरेस का स्थानीय समुदायों और व्यापक तसर रेशम उद्योग के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधनों के सतत् उपयोग और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान करने की संभावना है। यह जुड़ाव ओडिशा के तसर रेशमकीटों की छिपी क्षमता को उजागर करने में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतिनिधित्व करता है जो अंततः हमारे ग्रह के प्राकृतिक खजाने के संरक्षण में सहायता करेगा। गजपति जिला ओडिशा के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में स्थित है जो दक्षिण और पूर्व में आंध्र प्रदेश से सटा हुआ है। यह पूर्वी घाट का हिस्सा है जिसमें वनस्पति और जीवों की समृद्ध विविधता है जिसमें कई देशज और संकटग्रस्त प्रजातियाँ शामिल हैं। जिले में कुल 2,301.98 वर्ग किमी वन क्षेत्र है जिसमें से 437.52 वर्ग किमी आरक्षित वन के रूप में वर्गीकृत है। इन वनों में विभिन्न वृक्ष प्रजातियाँ पाई जाती हैं जैसे सागौन, बांस और विभिन्न हार्डवुड और सॉफ्ट वुड प्रजातियाँ जो तसर रेशमकीड़ों के लिए भोज्य पौधों के रूप में भी कार्य करती हैं, जैसे आसन (*टर्मिनेलिया टोमेन्टोसा*), अर्जुन (*टर्मिनेलिया अर्जुना*) और साल (*शोरिया रोबेस्टा*)। पहचान किए गए 44 उष्णकटिबंधीय तसर रेशम कीड़ा इकोरेस में से छह इकोरेस—मोदल, सिमलीपाल, सुकिंदा, नलिया, उमरकोट और बौध-ओडिशा के मयूरभंज, जाजपुर, केन्दुझर, नबरंगपुर और बौध जिलों में वर्णित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त गजपति जिले में एक नया इकोरेस खोजा गया है, जिसका स्थान 19°12'53.0"N 84°07'19.1"E है, जहां रेशम कीड़े मुख्यतः साल के पेड़ों पर भोजन करते हैं। गजपति इकोरेस, उष्णकटिबंधीय नम-पतझड़ प्रकार के वन में पाए जाते हैं। यह मुख्य रूप से *शोरिया रोबेस्टा* पेड़ों और लाल दोमट मिट्टी पर पाए जाते हैं। इसका वोल्टिनिज़्म पैटर्न बाईवोल्टाइन है। गजपति जिले से एकत्रित तसर रेशम कीड़े के कोसा की विशेषताएँ और धागाकरण पैरामीटर का अध्ययन किया गया है। कोसा आमतौर पर हल्के भूरे रंग के और अंडाकार आकार के होते हैं। कोसा का वजन 7.5 से 13.41 ग्राम के बीच होता है जबकि शेल का वजन 1.35 से 2.62 ग्राम के बीच होता है। शेल अनुपात मादाओं के लिए 11.3% से 18.6% और नर के लिए 12.1% से 21.9% के बीच भिन्न होता है। कोसा के आयाम लम्बाई में 3.4 से 3.9 सेंटीमीटर और चौड़ाई में 2.3 से 2.9 सेंटीमीटर के बीच होते हैं जबकि पेडंकल की लम्बाई 2.5 से 3.9 सेंटीमीटर होती है। इकोरेस का वॉल्यूम आमतौर पर 19 से 28 घन सेंटीमीटर के बीच होता है। रेशम वसूली का प्रतिशत 45% से 55% के बीच होता है जबकि खींचाव की दर 18%

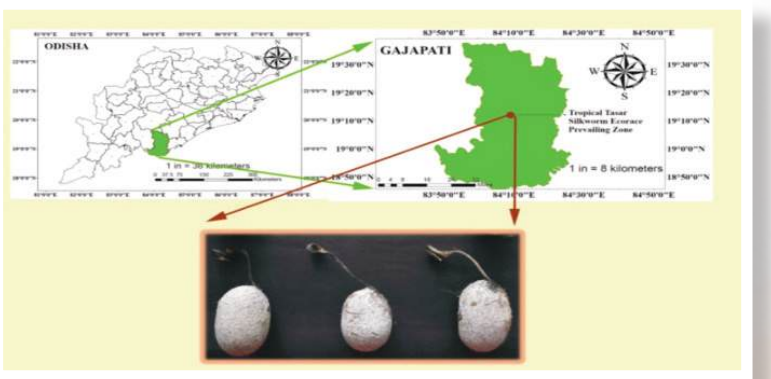

चित्र-1 गजपति इकोरेस के कोसा

से 21% के बीच होती है। फिलामेंट की लम्बाई 618 से 786 मीटर के बीच होती है और डेनियर 9.0 से 10.0 के बीच होता है। धागाकरण प्रतिशत सामान्यतः 24% से 32% के बीच होता है। ये विशिष्ट विशेषताएँ गजपति इकोरेस को परिभाषित करती हैं और तसर रेशम उत्पादन के व्यापक संदर्भ में इसके महत्व में योगदान करती हैं। गजपति इकोरेस, सुकिंदा इकोरेस से कई पहलुओं में भिन्न है, जैसा कि तालिका-1 (प्रभु एट.ऑल, 2024) में दर्शाया गया है : यह त्रिवोल्टाइन है, इसके भोजन के पौधे अलग हैं और कोसा के रंग, वजन, लम्बाई और चौड़ाई में भिन्नताएँ प्रदर्शित करता है। शेल अनुपात के मामले में गजपति तसर रेशम कीड़ा इकोरेस अन्य इकोरेस के साथ समान सीमा में आता है लेकिन इसमें थोड़ी अधिक विविधता दिखाई देती है। मोदल और नलिया इकोरेस की तुलना में गजपति इकोरेस में रेशम की वसूली और खींचाव प्रतिशत कम है, जो संभवतः रेशम की गुणवत्ता और प्रसंस्करण को प्रभावित कर सकता है। फिलामेंट की लम्बाई, डेनियर और धागाकरण में भी इकोरेस के बीच भिन्नताएँ होती हैं, जहां गजपति इकोरेस इन मानकों में मोदल, नलिया और सुकिंदा से भिन्न हैं।

तालिका-1. ओडिशा के विभिन्न इकोरेस के बीच कोसा के विभिन्न पैरा मीटरों का तुलनात्मक विश्लेषण।

इकोरेस	गजपति
वन प्रकार	उष्णकटिबंधीय नम पतझड़
खाद्य पौधा	शोरिया रोबेस्टा
मिट्टी का प्रकार	लाल लोमी
वोल्टिनिज़्म	बाई वोल्टाइन
कोसा का रंग	हल्का भूरे रंग
कोसा का आकार	अंडाकार
कोसा का वजन (ग्राम)	7.5 – 13.41
शेल का वजन (ग्राम)	1.35 – 2.62
शेल अनुपात (%)	
नर	12.1 – 21.9
मादा	11.3 – 18.6
कोसा की लम्बाई (से.मी.)	3.4 – 3.9
कोसा की चौड़ाई (से.मी.)	2.3 – 2.9
पेडंकल की लम्बाई (से.मी.)	2.5 – 3.9
वॉल्यूम (घन सेंटीमीटर)	19 – 28
रेशम की वसूली (%)	45 – 55
खींचाव (%)	18 – 21
फिलामेंट की लम्बाई (मीटर)	618 – 786
डेनियर	9.0 – 10.0
धागाकरण (%)	24 – 32

उच्च गुणवत्ता वाले SNPs का उपयोग करके चार विशिष्ट इकोरेस के साथ ओडिशा के व्यावसायिक डाबा BV लाइन को समूहित करने के लिए एक फ़िलोजेनेटिक ट्री बनाया गया। उल्लेखनीय है कि गजपति इकोरेस ने एक अलग क्लस्टर बनाया (चित्र-2), जो अन्य इकोरेस जनसंख्याओं से महत्वपूर्ण आनुवांशिक विभाजन और कई दशकों से पूर्ण अलगाव का संकेत देता है। यह अध्ययन गजपति इकोरेस पर पहली बार की गई जांच को दर्शाता है। पिछले शोध ने ओडिशा में *एन्थीरिया माइलिट्टा* डूरी इकोरेस के बीच आनुवांशिक सम्बन्धों का मूल्यांकन किया है जिसमें Cyt b जीन को *ए.माइलिट्टा* के लिए एक संभावित बार कोडिंग मार्कर के रूप में उपयोग किया गया था (राय एट.ऑल, 2024)। वर्तमान अध्ययन इस जांच को गजपति इकोरेस तक बढ़ाता है जिसमें जीनोम-व्यापी मार्करों का उपयोग किया गया है। दिलचस्प बात यह है कि हमारा अंतर्जातीय फ़िलो जेनेटिक विश्लेषण गजपति, नलिया, मोदल, जाटा-डाबा, बौध और सुकिंदा इकोरेस के बीच जीन प्रवाह के भिन्न पैटर्नों को उजागर करता है जो उनके आनुवांशिक सम्बन्धों के बारे में मूल्यवान जानकारी प्रदान करता है।

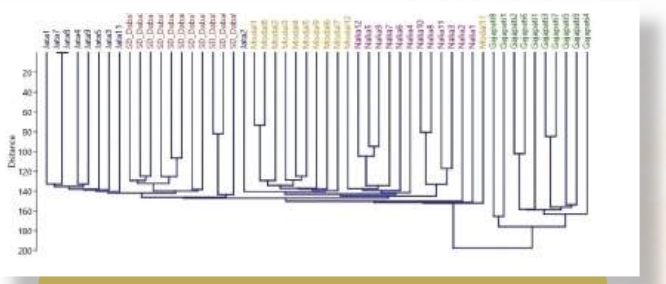

चित्र-2 एकल न्यूक्लियोटाइड पोलिमॉर्फिज्म आधारित आनुवांशिक फ़िलोजेनेटिक विशेषता, जो गजपति से एकत्रित इकोरेस और ओडिशा में उपलब्ध अन्य इकोरेस के साथ है।

इस प्रकार गजपति का उष्णकटिबंधीय तसर रेशम कीड़ा इकोरेस अधिक आनुवांशिक विविधता प्रदर्शित करता है और स्थानीय समुदायों तथा रेशम उद्योग दोनों के लिए लाभदायक है जो सतत् संसाधन उपयोग और जैव विविधता संरक्षण लक्ष्यों के साथ संरेखित है। यह इकोरेस उष्णकटिबंधीय नम पतझड़ वन प्रकार में पाया जाता है और साल, *शोरिया रोबेस्टा* पेड़ों पर भोजन करता है जिसमें बाई वोल्टिनिज़्म, हल्के भूरे रंग के अंडाकार कोसा और विशिष्ट कोसा आयाम जैसी अनूठी विशेषताएँ हैं। विशेष रूप से यह अन्य इकोरेस से कोसा के रंग, वजन और रेशम के गुणों के संदर्भ में भिन्न है जो रेशम की गुणवत्ता और प्रसंस्करण पर प्रभाव डालने का संकेत देता है। इसके अलावा फ़िलोजेनेटिक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गजपति इकोरेस अन्य जनसंख्याओं से महत्वपूर्ण आनुवांशिक विभाजन प्रदर्शित करता है जो इसके कई दशकों के अलगाव को उजागर करता है।

*वैज्ञानिक-डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

रस की भाषा, शिष्टाचार की भाषा, अमर रहे हिन्दी, राष्ट्र की भाषा।

जलवायु परिवर्तन की अनिश्चितताओं के तहत *टर्मिनेलिया अर्जुना* आधारित वन-संवर्धन पर पुनर्विचार

डॉ. अर्नब रॉय*, डॉ. जितेंद्र सिंह, हरगोपाल दत्ता एवं डॉ. एन.बी. चौधरी

परिचय : जलवायु परिवर्तन से पारिस्थितिकी तंत्र के गंभीर रूप से प्रभावित होने की संभावना है। पर्यावरण को कई बाधाओं का भी सामना करना पड़ रहा है जैसे भूमि उपयोग पैटर्न में बदलाव, घटते वन क्षेत्र तथा विभिन्न योजनाओं के तहत उगाए गए वृक्षारोपण का रखरखाव तथा निजी भागीदारी की कमी। जबकि इस विषय पर शोध में मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तनशील साधनों पर केंद्रित है, पारिस्थितिकी तंत्र के प्रभावों को निर्धारित करने में जलवायु परिवर्तनशीलता में परिवर्तन के महत्व पर बढ़ते प्रमाण एकत्र किए गए हैं। इस संदर्भ में, अर्जुन (*टर्मिनेलिया अर्जुना*) आधारित वन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रमुख भोज्य पौधे अर्थात् अर्जुन (*टर्मिनेलिया अर्जुना*) का उपयोग उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट (*एन्थीरिया माइलिट्टा*) को पालने के लिए भी किया जाता है जो तसर रेशम का उत्पादन करता है। ये पौधे या तो प्राकृतिक वनों में मौजूद हैं या सामुदायिक वनों के तहत उगाए गए आर्थिक ब्लॉक वृक्षारोपण में प्रमुख तसर उत्पादक राज्यों अर्थात् झारखंड, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश के वन सीमांत निवासियों द्वारा तसर रेशम के कीड़ों का पालन के लिए उपयोग किए जाते हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित अनिश्चितता के तहत वन नियोजन में निर्णय लेने का समर्थन करने के लिए एक वैचारिक ढांचा विकसित करना है। जलवायु परिवर्तन के कई संभावित परिदृश्य हैं लेकिन किसी एक परिदृश्य को "सर्वश्रेष्ठ" के रूप में अनुशंसित नहीं किया जा सकता है। गहरी अनिश्चितता के तहत निर्णय चुनौतियों को सम्बोधित करने के लिए विकसित विभिन्न अवधारणाओं में से हम मूल्यांकन के मानदंड के रूप में मजबूती पर आधारित एक को काम में लाते हैं। यह मानकर कि भविष्य की स्थितियाँ ज्ञात हैं, मुख्य योजनाओं की तलाश करने के बजाय, मजबूत दृष्टिकोण अज्ञात भविष्य की स्थितियों की एक श्रृंखला के तहत "काफी अच्छी" योजनाओं की खोज करता है। इस ढांचे के आधार पर हम जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में वन प्रबंधन में दृढ़ संकल्प के बारे में चर्चा को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखना : जलवायु परिवर्तन से वनों द्वारा प्रदान की जाने वाली पारिस्थितिकी सेवाओं की मात्रा और प्रकार में परिवर्तन आने की आशंका है जिसके लिए हम निम्नलिखित तंत्रों को धीमी या तीव्र पारिस्थितिकी तंत्र अव्यवस्था प्रक्रियाओं के रूप में वर्णित करते हैं।

तालिका-1 : झारखंड में वन व्याप्ति की गतिशीलता पर वार्षिक तापमान और वर्षा परिवर्तनशीलता

वर्ष	औसत तापमान	औसत वार्षिक वर्षा	वन क्षेत्र (ha.)
2017	28.5	1127.1	9796.28
2018	28.7	1020.8	8073.05
2019	28.8	1288.8	3690.11
2020	28.44	1289.6	16108.25
2021	28.55	1236.4	12079.02
2022	28.8	1257	12412.86
2023	28.98	1099.2	17600.83

तालिका-1 वन क्षेत्र पर वर्षा के प्रभाव को दर्शाती है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है बल्कि इसने वायु से लेकर वन क्षेत्र तक जैव मंडल के पूरे घटक पर अपना प्रभाव दिखाया है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव झारखंड में सामान्य रूप से देखा जा सकता है लेकिन विशेष रूप से वन क्षेत्रों में। वन क्षेत्र पर जलवायु के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न अध्ययन किए गए हैं जो दर्शाते हैं कि बदलते जलवायु चरों और बदलते वन क्षेत्र के बीच सकारात्मक सह-सम्बन्ध है और कुछ क्षेत्रों में वन पैटर्न में भी परिवर्तन पाया गया है।

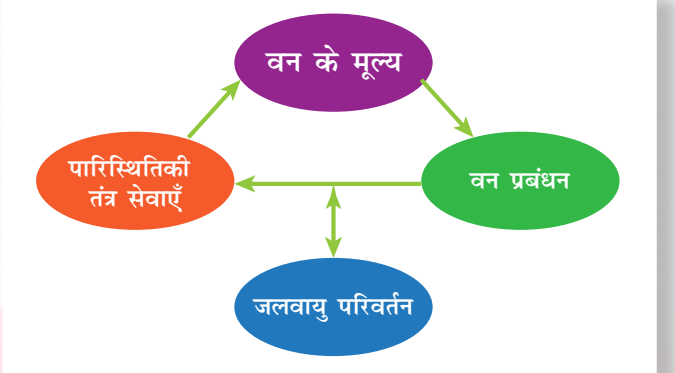

वन मूल्यों, वन प्रबंधन, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं और जलवायु परिवर्तन के बीच सम्बन्धों को दर्शाने वाला आरेख

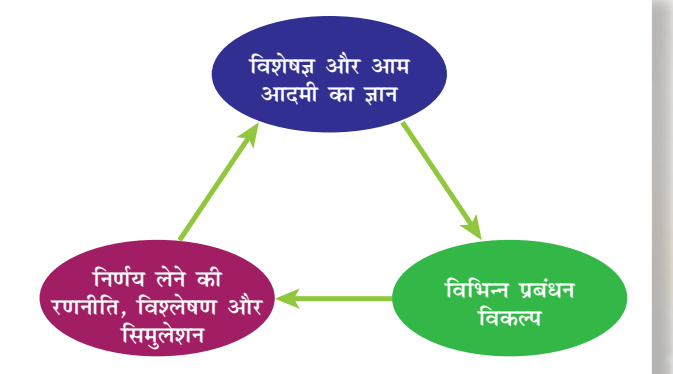

जलवायु परिवर्तन अनिश्चितता के अंतर्गत अनुकूली वन प्रबंधन ढांचा

अनुकूली वन प्रबंधन (AFM) : बदलती जलवायु में अनुकूली वन प्रबंधन (AFM) वर्तमान वन प्रबंधन अनुसंधान के केंद्र में है। यदि परिवर्तन की एक निश्चित प्रवृत्ति के बारे में जलवायु चर में अल्पकालिक भिन्नता बहुत अधिक है तो प्रबंधकों को वास्तविक प्रवृत्ति को पहचानने में बहुत अधिक समय लगेगा। AFM विश्लेषण को वैकल्पिक निर्णय विकल्पों के एक स्पष्ट और नियोजित सेट पर आधारित होना चाहिए जिसमें एक आश्वस्त व्यवसाय-जैसा-हमेशा प्रबंधन परिदृश्य शामिल है।

अर्जुन की कार्बन अवशोषण क्षमता - एक समीक्षा : अर्जुन का पौधा कॉम्ब्रेटेसी परिवार से सम्बन्धित है, यह एक ऐसा पेड़ है जिसमें व्यापक औषधीय क्षमता है। इस पौधे का पारम्परिक रूप से विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार में उपयोग किया जाता है। अर्जुन के पौधों के विभिन्न भागों की फाइटोकोन्स्टिट्यूएंट्स और औषधीय गतिविधियों की उपस्थिति के लिए जांच की गई है। वर्तमान अध्ययन जलवायु परिवर्तन शमन पर अर्जुन के पौधों के महत्व पर प्रकाश डालता है। अर्जुन पौधों को विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों में बहुउद्देशीय वृक्ष प्रजाति (एमपीटी) के रूप में अपनाया जाता है, विशेष रूप से कृषि सिल्विकल्चरल और सिल्विपैस्टोरल प्रणाली में। अर्जुन पौधों को पल्पवुड, प्लाईवुड और कृषि वानिकी में सिल्विकल्चर उद्देश्य के लिए उगाया जाता है। इसके अलावा विभिन्न लेखकों ने पर्यावरण सेवा का अनुमान लगाने के लिए कृषि वानिकी की स्थिति में अर्जुन पौधों की कार्बन पृथक्करण क्षमता का अध्ययन किया। अर्जुन एक महत्वपूर्ण लघु रोटेशन वृक्ष प्रजाति है जो वायुमंडलीय CO_2 को बायोमास में स्थिर करती है और अन्य लघु रोटेशन वानिकी प्रजातियों की तुलना में अधिक तेज़ गति से कार्बन को अलग करती है। राँची के तसर अनुसंधान संस्थान के कुछ वैज्ञानिक अर्जुन के कार्बन पृथक्करण पहलू पर काम कर रहे हैं।

सामान्य तौर पर अर्जुन और आसन आधारित वन प्रबंधन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जलवायु परिवर्तन द्वारा उत्पन्न मुख्य चुनौतियाँ हैं :

- जलवायु परिवर्तन अनिश्चितता के अंतर्गत अनुकूली वन प्रबंधन ढांचा जलवायु परिवर्तन और जलवायु परिवर्तन प्रभाव मॉडल के डाउन-स्केलिंग में सुधार और अधिक स्थानीय जानकारी को शामिल करना;
- जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर अर्जुन आधारित वन और भूमि प्रबंधन के संभावित सुदृढ़ीकरण प्रभाव;
- बदलती परिस्थितियों में आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखना;
- जलवायु परिवर्तन के परिणामों (जैसे आग और बीमारी का प्रकोप) के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए सहयोगी भूमि प्रबंधन;
- बदलते जल संसाधनों का प्रबंधन;
- नई समस्याओं को पेश किए बिना प्रबंधन प्रथाओं का अनुकूलन;
- जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के कारण अन्यत्र मानव प्रवास का प्रबंधन;
- बदलती दुनिया की माँगों के अनुसार कानून का अनुकूलन : विशेष रूप से पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के मूल्यवान उत्पादों, जैसे कार्बन पर अधिकारों को परिभाषित करना और उनकी रक्षा करना;
- अर्जुन और आसन आधारित वन प्रबंधन को नई बाजार स्थितियों के अनुकूल बनाना, साथ ही तसर उत्पादन और तसर किसानों की आय सुनिश्चित करना;
- अर्जुन और आसन आधारित वनों और वृक्षों का गतिशील परिदृश्य के भाग के रूप में प्रबंधन जिसमें वन प्रबंधक तालमेल और टिकाऊ भूमि प्रबंधन की तलाश में अपने पड़ोसियों के साथ बातचीत करते हैं;

उपसंहार : जलवायु परिवर्तन एक गतिशील और जटिल घटना है इसलिए वास्तविक जलवायु विकास की पहचान करने, जैविक प्रणालियों पर इसके प्रभावों पर विचार करने और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के गतिशील मॉडल में निर्णय लेने वालों के ज्ञान और विश्वासों को एकीकृत करने के लिए सावधानीपूर्वक अवलोकन की आवश्यकता है। एएफएम रणनीतियों का उद्देश्य वर्तमान वन पारिस्थितिकी तंत्र वस्तुओं और सेवाओं के प्रावधान को बनाए रखना और जंगल की आग, हवा के झोंके और रोगजनक आपदाओं जैसे उच्च गड़बड़ी वाले कारकों के कारण वन को होने वाले बढ़ते नुकसान के खिलाफ रोकथाम रणनीतियों को लागू करने का अवसर प्रदान करना होना चाहिए। जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने के लिए वांछनीय वन स्थितियों को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए डिज़ाइन की गई वन प्रबंधन रणनीतियाँ जोखिम और अनिश्चितता की स्थितियों के तहत बनाई जाएंगी। यदि वन स्थितियों के संकेतकों और आर्थिक क्षति कार्यों के मापदंडों के लिए संभाव्यता कार्यों का अनुमान लगाया जा सकता है तो अपेक्षित लागत-प्लस-हानि को कम करने या असहनीय स्तर से अधिक आर्थिक क्षति की संभावना को कम करने जैसे मानदंडों के आधार पर पसंदीदा कार्यों का चयन किया जा सकता है। ऐसी स्थितियों में जहाँ संभाव्यता कार्यों का अनुमान लगाने के लिए जानकारी अपर्याप्त है, परिदृश्य विश्लेषण जैसे अन्य निर्णय उपकरण उपयोगी होंगे।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

रचनाकारों के लिए सूचना

रेशम वाणी के सभी सम्मानित रचनाकारों से अनुरोध है कि वे अपनी रचनाओं के साथ अपना बैंक विवरण यथा-बैंक का नाम, खाता संख्या, IFSC कोड एवं मोबाइल नम्बर भी भेजें ताकि रचनाओं के मानदेय का भुगतान केवल ऑन-लाइन माध्यम से उन्हें समय पर किया जा सके। साथ ही रचना के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटोग्राफ भी भेजें। रचनाकारों से अनुरोध है कि रचनाएँ साफ-साफ हस्तलिखित अथवा कम्प्यूटर पर टंकित रूप में भेजें तथा यदि संभव हो तो रचना की सॉफ्ट प्रति ई-मेल (ctrtihindi@gmail.com) के माध्यम से भेजें। रचनाएँ यथा समय रेशम वाणी में प्रकाशित करने का प्रयास किया जायेगा तथापि अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जायेगी।

- सम्पादक

तसर उद्योग में तसर रेशमकीट उत्पादन को बढ़ाने के लिए अच्छे गुणवत्ता के अर्जुन पौधा नर्सरी का योगदान

हरगोपाल दत्ता*, डॉ. हरेन्द्र यादव, डॉ. अर्नब रॉय, डॉ. श्रीनाथ वाई एस एवं डॉ. एन.बी.चौधरी

भूमिका : तसर रेशमकीट *एन्थीरिया माइलिट्टा* भारत की मूल प्रजाति है और तसर रेशम एक प्रकार के जंगली रेशम के उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है। अपनी अनूठी बनावट और गुणवत्ता के लिए जाना जाने वाला तसर रेशम भारतीय रेशम उद्योग में महत्वपूर्ण योगदान देता है। तसर रेशम का उत्पादन भोज्य पौधों, विशेष रूप से अर्जुन वृक्ष (*टर्मिनेलिया अर्जुना*) और आसन (*टर्मिनेलिया टोमेंटोसा*) की उपलब्धता से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। अर्जुन पौधों की नर्सरी इन पेड़ों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जो सीधे तौर पर तसर रेशमकीटों और परिणामस्वरूप तसर रेशम के उत्पादन को प्रभावित करती है।

तसर रेशमकीटों के स्वास्थ्य और विकास के लिए अर्जुन पेड़ों की पत्तियों की पोषण गुणवत्ता सर्वोपरि है। शोध से पता चलता है कि अर्जुन के पत्तों पर तसर रेशमकीटों को पालने से उनकी विकास दर और समग्र उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। विशेष रूप से अध्ययनों से पता चला है कि आवश्यक पोषक तत्वों सहित पत्ती की संरचना (ईआरआर) पालन की प्रभावी दर और उत्पादित रेशम की गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती है। अर्जुन के पेड़ों की पत्तियों में मैग्नीज जैसे विशिष्ट पोषक तत्वों की उपस्थिति को लार्वा स्वास्थ्य में सुधार और कोसा की उपज में वृद्धि से जोड़ा गया है जिससे तसर रेशम उत्पादन में पोषक तत्व प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया गया है। इसके अलावा जिस पारिस्थितिक संदर्भ में अर्जुन के पेड़ों की खेती की जाती है वह तसर रेशमकीटों के लिए भोजन स्रोत के रूप में उनकी प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मिट्टी का स्वास्थ्य, लाभकारी सूक्ष्म जीवों की उपस्थिति और वृक्षा रोपण पर्यावरण की समग्र जैव विविधता पत्तियों की पोषण गुणवत्ता में योगदान करती है। उदाहरण के लिए अर्जुन के पेड़ों के आस-पास की मिट्टी में पौधों के विकास को बढ़ावा देने वाले राइजोबैक्टीरिया की संरचना पोषक तत्वों की मात्रा को बढ़ा सकती है जिससे स्वस्थ पत्ते बनते हैं जो मजबूत रेशमकीट आबादी का समर्थन करते हैं। यह सम्बन्ध नर्सरी के लिए मिट्टी के स्वास्थ्य और जैव विविधता को बढ़ावा देने वाली टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है जो बदले में तसर रेशम उत्पादन श्रृंखला का समर्थन करता है।

चित्र-1 : केरेबो-केतअवप्रसं, राँची में अर्जुन पौध नर्सरी

तसर रेशम उत्पादन में भोज्य पौधों की भूमिका : तसर रेशमकीट जंगली रेशमकीट हैं जो अर्जुन और आसन जैसे विशिष्ट पेड़ों की पत्तियों पर भोजन करते हैं, जो लार्वा विकास और रेशम उत्पादन के लिए आवश्यक पोषण प्रदान करते हैं। भोज्य पौधों की उपलब्धता और गुणवत्ता तसर रेशमकीटों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को सीधे प्रभावित करती है। इन भोज्य पौधों की आबादी और प्रसार में वृद्धि रेशम कीटपालन की सफलता दर में सुधार करके रेशम उत्पादन को अधिकतम् करने में मदद कर सकती है।

अर्जुन (*टर्मिनेलिया अर्जुना*) : पसंदीदा भोज्य पौधों में अर्जुन के पेड़ एक वर्ष में रेशम कीटपालन के कई चक्रों में भोज्य पत्ती उपलब्ध कराने की क्षमता के कारण विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। तसर रेशमकीटों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली पत्तियों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अर्जुन नर्सरी का प्रबंधन भी महत्वपूर्ण है। उचित सिंचाई, कीट नियंत्रण और उर्वरक रणनीतियों सहित प्रभावी नर्सरी प्रबंधन प्रथाएं, अर्जुन के पेड़ों की वृद्धि और स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती हैं। उदाहरण के लिए तसर रेशमकीटों के पालन प्रदर्शन में सुधार के लिए पत्तेदार पोषक तत्वों के अनुप्रयोग को दिखाया गया है, यह सुझाव देते हुए कि नर्सरी को पत्ती की गुणवत्ता को अनुकूलित करने के लिए लक्षित पोषक तत्व प्रबंधन रणनीतियों को लागू करना चाहिए। इसके अलावा कीट प्रबंधन प्रथाओं का एकीकरण आवश्यक है क्योंकि कीट अर्जुन के पेड़ों के स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकते हैं और परिणामस्वरूप रेशमकीट के भोजन के लिए उपलब्ध पत्तियों की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं।

अर्जुन पौध नर्सरी का योगदान

1. **उच्च गुणवत्ता वाले भोज्य पौधों का प्रसार :** अर्जुन पौधे की नर्सरी उच्च गुणवत्ता वाले पौधों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करती है जिनका उपयोग अर्जुन और आसन पेड़ों के बड़े वृक्षारोपण स्थापित करने के लिए किया जा सकता है। सर्वोत्तम मातृ पौधों का चयन करके और वनस्पति प्रसार और ऊत्तक संवर्धन जैसी आधुनिक प्रसार तकनीकों का उपयोग करके नर्सरी यह सुनिश्चित करती है कि पौधे मजबूत, रोग प्रतिरोधी हों और कई रेशमकीट पीढ़ियों को बनाए रखने में सक्षम हों।

2. **तसर रेशमकीट भोज्य वृक्षा रोपण का सतत् विस्तार :** तसर रेशम उद्योग में एक बड़ी बाधा परंपरागत रूप से भोज्य पौधों की सीमित उपलब्धता रही है। अर्जुन नर्सरियों ने भोज्य पेड़ों के बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण की सुविधा प्रदान करके इस चुनौती पर काबू पाने में योगदान दिया है। इससे रेशम कीटपालन के लिए पत्तियों की साल भर आपूर्ति सुनिश्चित करने में मदद मिली है जिससे रेशमकीट पालन चक्र की आवृत्ति बढ़ गई है।

3. **कृषि वानिकी और समुदाय-आधारित खेती को बढ़ावा देना :** अर्जुन नर्सरी अक्सर ग्रामीण समुदायों के साथ मिलकर काम करती हैं, खासकर उन क्षेत्रों में जहां तसर रेशम उत्पादन आजीविका का प्राथमिक स्रोत है। वृक्षा रोपण प्रबंधन पर पौधे और तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करके, नर्सरी स्थायी कृषि वानिकी प्रथाओं के विकास में योगदान करती है। बदले में ग्रामीण किसान इन भोज्य पौधों की खेती से आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं जिससे तसर उद्योग को समर्थन मिलता है और चक्रीय लाभ होता है।

4. **तसर रेशमकीटों की उत्पादकता बढ़ाना :** अर्जुन और आसन के पेड़ों की पत्तियों से प्राप्त पोषण सीधे तौर पर तसर रेशमकीटों के स्वास्थ्य, विकास दर और रेशम की उपज को प्रभावित करता है। बेहतर गुणवत्ता वाले पौधे उपलब्ध कराकर नर्सरी रेशमकीटों के समग्र स्वास्थ्य में योगदान करती है जिससे कोसा की गुणवत्ता में सुधार होता है और रेशम की पैदावार अधिक होती है। इसका किसानों और रेशम उत्पादकों के आर्थिक रिटर्न पर संचयी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

5. **भोज्य पादप जैव विविधता का संरक्षण :** अर्जुन पौधों की नर्सरी भोज्य पौधों के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो उन क्षेत्रों के पारिस्थितिक संतुलन का अभिन्न अंग है, जहां तसर रेशमकीटों की खेती की जाती है। टर्मिनेलिया प्रजाति की आनुवांशिक विविधता को बनाए रखते हुए नर्सरी जैव विविधता संरक्षण प्रयासों का समर्थन करती है जो लम्बी अवधि में तसर रेशम उत्पादन को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

एक लाख अर्जुन पौधे की नर्सरी का अर्थशास्त्र : अर्जुन नर्सरी के माध्यम से तसर रेशमकीट उत्पादन बढ़ाने के आर्थिक निहितार्थ भी उल्लेखनीय है। उत्पादकता बढ़ने से तसर रेशम उत्पादन में शामिल किसानों की आय में वृद्धि हो सकती है जिससे ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन में योगदान मिलेगा। एक मजबूत नर्सरी क्षेत्र की स्थापना जो अर्जुन और अन्य तसर खाद्य पौधों की खेती पर ध्यान केंद्रित करती है, रोजगार के अवसर पैदा कर सकती है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित कर सकती है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां रेशम उत्पादन एक पारंपरिक उद्योग है।

तालिका-1 : एक लाख नर्सरी के माध्यम से उत्पादन लागत और राजस्व सृजन।

क्र.सं.	सामग्री	मात्रा	यूनिट	कीमत रु.
1.	एफ वाई एम	3000 सीएफटी	3300/100 सीएफटी	99,000
2.	मिट्टी	2000 सीएफटी	500/100 सीएफटी	10,000
3.	रेत	1000 सीएफटी	5900/100 सीएफटी	59,000
4.	काली पॉलिथीन	1,20,000	1/पॉलिथीन	1,20,000
5.	20 फावड़ा, 20 प्लास्टिक का कटोरा, 5 रोल पाइप, 1000 लीटर पानी की टंकी	-	-	25,000
6.	सिंचाई सुविधा स्थापना	-	-	19,849
7.	कार्बोफ्यूरान	30 किग्रा	185/किग्रा	5,550
8.	श्रमशक्ति	1000	Rs. 415	4,15,000
9.	उत्पादन की कुल लागत	7,53,399		
10.	प्रति पौधे रु. 10/- बिक रहे हैं।	10,00,000		
11.	कुल राजस्व सृजन	2,46,601		

चुनौतियाँ और भविष्य की संभावनाएँ : हालाँकि अर्जुन पौध नर्सरी ने तसर रेशमकीट उत्पादन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, फिर भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इसमें शामिल हैं :-

- नर्सरी और वृक्षा रोपण के विस्तार के लिए सीमित धन और निवेश।
- कीट और बीमारियाँ जो भोज्य पौधों और रेशमकीटों दोनों को प्रभावित करती हैं।
- जलवायु परिवर्तन जो अर्जुन और आसन पेड़ों के विकास को प्रभावित कर सकता है, संभावित रूप से उनकी पत्तियों की उपज और गुणवत्ता को कम कर सकता है।

अर्जुन पौध नर्सरी की संभावनाओं में शामिल हो सकते हैं :

- अर्जुन पेड़ों की कीट-प्रतिरोधी, उच्च उपज देने वाली नस्लों को विकसित करने के लिए अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग।
- पौधों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए उन्नत नर्सरी प्रबंधन तकनीकों, जैसे कि सूक्ष्म प्रवर्धन को अपनाना।
- तसर रेशम मूल्य श्रृंखला को बढ़ाने के उद्देश्य से सरकारी और निजी क्षेत्र की पहल द्वारा समर्थित अर्जुन और आसन पेड़ों की खेती में अधिक ग्रामीण किसानों की भागीदारी।

निष्कर्ष : तसर रेशम उद्योग में अर्जुन पौधे की नर्सरी के योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता। उच्च गुणवत्ता वाले भोज्य पौधों की निरंतर और टिकाऊ आपूर्ति सुनिश्चित करके ये नर्सरी तसर रेशम कीटपालन की आधारशिला बन गई है। वे ग्रामीण समुदायों की आजीविका का समर्थन करते हैं। तसर रेशम उद्योग की उत्पादकता बढ़ाते हैं और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान देते हैं। निरंतर नवाचार और समर्थन के साथ अर्जुन पौध नर्सरी में तसर रेशम उत्पादन को और बढ़ावा देने और इस उद्योग पर निर्भर क्षेत्रों के आर्थिक विकास में योगदान करने की क्षमता है। अर्जुन के पत्तों की पोषण गुणवत्ता, नर्सरी में नियोजित प्रबंधन प्रथाएं और सामुदायिक आजीविका और पर्यावरणीय स्थिरता पर व्यापक प्रभाव सभी इस

गतिशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भविष्य के अनुसंधान और नीतिगत पहलों को तसर रेशम उद्योग की निरंतर वृद्धि और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए नर्सरी प्रथाओं को अनुकूलित करने, मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाने और हितधारकों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर रेशमकीटों के प्रजनन में आर्थिक गुणों में सुधार की संभावनाएँ

डॉ. निधि सुखीजा[1]*, डॉ. इम्मानुएल गिलवाक्स प्रभु[1], डॉ. दिव्या राजावत[1], डॉ. तपेन्द्र सैनी[1], डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय[1], डॉ. एन. बी. चौधरी[1]

प्रस्तावना : विभिन्न स्थानीयताओं में प्रचलित अलग-अलग परिस्थितियों में पाए जाने वाले कई आकृति-संबंधी (morphological) वैरिएंट्स को पारंपरिक रूप से पारि-प्रजाति कहा जाता है। अब तक तसर रेशम के कीड़ों के कुल 45 पारि-प्रजाति की पहचान की गई है और 44 परि-प्रजाति को NBAIR द्वारा पंजीकृत किया गया है जो कीटों के पंजीकरण के लिए नोडल एजेंसी है (www.nbair.res.in)। तसर रेशम के कीड़ों का शोध जटिल है क्योंकि विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में पारिस्थितिकीय, जैव रासायनिक, शारीरिक और मात्रात्मक गुणों में भिन्नताएँ होती हैं।

यहाँ कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं जिन्हें प्रजनन सामग्रियों का चयन करने से पहले परिभाषित एवं उल्लिखित किया जाना चाहिए :-

1. **प्रजनन उद्देश्य :** प्रजनन कार्यक्रम के विशिष्ट लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करें। ये उद्देश्य कोसा उत्पादन, रेशम की गुणवत्ता, रोग प्रतिरोध या अन्य आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण विशेषताओं में सुधार करना शामिल कर सकते हैं।
2. **चयन मानदंड :** उन मानदंडों की पहचान करें जो संभावित प्रजनन सामग्रियों का मूल्यांकन करने के लिए उपयोग किए जाएंगे। ये मानदंड प्रजनन उद्देश्यों के आधार पर होने चाहिए और इनमें प्रजनन क्षमता, कोसा का वजन, प्यूपेशन दर, रेशम उत्पादन दक्षता और आनुवांशिक विविधता शामिल हो सकते हैं।
3. **आनुवांशिक संसाधन :** उपलब्ध आनुवांशिक संसाधनों का मूल्यांकन करें जिसमें तसर रेशम के कीड़ों के पारि-प्रजाति, रेखाएँ और जनसंख्याएँ शामिल हैं। इन संसाधनों में मौजूद आनुवांशिक विविधता का आकलन करें और उन विशेषताओं की पहचान करें जो प्रजनन उद्देश्यों में योगदान कर सकती हैं।
4. **प्रजनन रणनीतियाँ :** निर्धारित करें कि किस प्रकार की प्रजनन रणनीतियाँ अपनाई जाएँगी ताकि रेशम के कीड़ों की जनसंख्या में वांछित सुधार प्राप्त किया जा सके। इसमें चयनात्मक प्रजनन, हाइब्रिडीकरण, क्रॉस-ब्रीडिंग या आनुवांशिक संशोधन जैसे तरीके शामिल हो सकते हैं।
5. **पर्यावरणीय विचार :** उन पर्यावरणीय परिस्थितियों पर विचार करें जिनमें रेशम के कीड़े पाले जाएंगे क्योंकि ये प्रजनन सामग्रियों के चयन को प्रभावित कर सकते हैं। ऐसे सामग्रियों का चयन करें जो स्थानीय जलवायु और पर्यावरणीय कारकों के प्रति अच्छी तरह से अनुकूलित हों।
6. **प्रजनन संगतता :** सुनिश्चित करें कि चयनित प्रजनन सामग्री प्रजनन के लिए संगत है और वांछित गुण उत्पन्न करने के लिए प्रभावी ढंग से पार हो सकती है। आनुवांशिक सम्बन्ध, प्रजनन प्रणालियाँ और संगतता बाधाओं जैसे कारकों पर विचार करें।

चयन और युग्मन प्रणाली एक प्रजनक के मुख्य उपकरण हैं। रेशम के कीड़ों के प्रजनन के लिए सामग्रियों का चयन करने से पहले चयन प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से मार्गदर्शित करने के लिए स्पष्ट मानदंड और प्रक्रियाएँ स्थापित करना आवश्यक है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि चयनित सामग्री प्रजनन उद्देश्यों के अनुरूप हो और रेशम के कीड़ों की जनसंख्या में वांछित सुधार में योगदान करें।

आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण गुण -

1. **प्रजनन क्षमता (अंडों की संख्या) :** प्रजनन क्षमता तसर रेशम के कीड़ों की अंडे देने की क्षमता है जो जनसंख्या वृद्धि और बाद में रेशम उत्पादन पर सीधे प्रभाव डालती है। इसका मतलब है कि मादा मॉथ द्वारा जोड़े जाने के बाद कितने अंडे दिए जाते हैं। व्यावसायिक दृष्टिकोण से प्रजनन उद्देश्य ऐसा हाइब्रिड बनाना होना चाहिए जिसकी F1 पीढ़ी की प्रजनन क्षमता काफी अधिक हो जिससे बीज कोसा उत्पादकों और ग्रेनियर्स दोनों को लाभ हो। हालाँकि F1 कोसा को बीज के लिए पुनः चक्रित करना उचित नहीं है क्योंकि हेटेरोसिस की संभावित हानि हो सकती है।
2. **कोसा उत्पादन :** रेशम के कीड़ों की जनसंख्या के प्रति यूनिट के अनुसार कोसा की मात्रा समग्र रेशम उत्पादन को निर्धारित करती है। उच्च उत्पादन वाले रेशम के कीड़ों की प्रजातियाँ किसानों की आय बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं। कोसा उत्पादन को प्रभावित करने वाले गुणों में प्यूपेशन दर और कोसा का वजन शामिल हैं। इन गुणों को बढ़ाने से उत्पादकता में वृद्धि हो सकती है।
3. **कच्चे रेशम का उत्पादन :** कोसा से निकाले गए रेशम के फिलामेंट की मात्रा जो रेशम निकासी और प्रसंस्करण की दक्षता को दर्शाती है। रेशम के कीड़ों में रेशम उत्पादन पर प्रभाव डालने वाले गुण गुणात्मक और बहु-आनुवांशिक प्रणाली द्वारा नियंत्रित होते हैं।
4. **कोसा गुणवत्ता :** कोसा का आकार, आकृति, रंग, बनावट और ताकत जैसी विशेषताएँ रेशम के ग्रेड और बाजार मूल्य को निर्धारित करती हैं।

5. **कच्चे रेशम की गुणवत्ता :** रेशम के फिलामेंट की गुणवत्ता विशेषताएँ जैसे उसकी प्राकृतिक चमक, मजबूती और समानता विभिन्न अंत उपयोगों और बाजार मांग के लिए इसकी उपयुक्तता को प्रभावित करती हैं।

6. **लार्वा का स्वास्थ्य :** लक्षित चयन के माध्यम से लार्वा की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार किया जा सकता है। लार्वा की कम अवधि वाले प्रजातियाँ बीमारियों के प्रति कम संवेदनशील होती हैं।

7. **कोसा फसल स्थिरता :** विभिन्न बैचों या मौसमों में कोसा उत्पादन में निरंतरता और विश्वसनीयता से आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

8. **रेशम उत्पादन दक्षता :** फ़ीड रूपांतरण दक्षता, विकास दर और रेशम स्पिनिंग व्यवहार जैसे कारक रेशम उत्पादन संचालन की लागत-प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं।

9. **कोसा विशेषताएँ :** कोसा के आकार, वास्तुकला, रंग और वजन जैसे महत्वपूर्ण मानदंड हैं जो प्रजनकों को वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं।

10. **कोसा शेल वजन :** कोसा शेल का वजन विभिन्न पर्यावरणों में भिन्नता दिखाता है और यह एक कम आनुवांशिकता वाला गुण है।

11. **कोसा शेल अनुपात :** यह गुण कोसा का वजन और जीवित रहने की दर को प्रभावित करता है।

12. **कोसा तन्तु लम्बाई :** लम्बा तन्तु अधिक उपयुक्त होता है, विशेषकर फाइचर और वस्त्र उद्योग के लिए।

13. **कोसा तन्तु का आकार और सफाई :** तन्तु का आकार और उसकी सफाई महत्वपूर्ण हैं और इसे जल्दी पीढ़ियों में चुना जा सकता है।

14. **कच्चे रेशम का प्रतिशत :** यह रेशम की रिकवरी से संबंधित है और इसे उच्च उत्पादन के लिए बढ़ाया जा सकता है।

15. **उबालने का नुकसान :** उच्च रेशम उत्पादन वाले प्रजातियों में अक्सर उच्च प्रतिशत उबालने का नुकसान होता है।

16. **धागाकरण की विश्वसनीयता :** यह गुण विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों से प्रभावित होता है और इसकी आनुवांशिकता कम होती है।

17. **पाचन क्षमता :** पाचन क्षमता, पाचन तंत्र द्वारा पचाए गए और अवशोषित मैक्रोन्यूट्रिएंट्स का प्रतिशत है।

पीढ़ी-वार चयन की उपयुक्तता :

- F1 से F4 पीढ़ियों में सफाई और धागाकरण की विश्वसनीयता का चयन करें।
- F8/F9 पीढ़ियों तक प्रस्फूटन, कोसा का वजन, कच्चे रेशम का प्रतिशत, कोसा का रंग, शेल का वजन और शेल अनुपात का चयन करें।
- लेट पीढ़ी के चयन, जैसे कि F15 पीढ़ियों तक फिलामेंट लम्बाई/आकार, लार्वा का आकार/अवधि, उबालने का नुकसान और लुजनेस के लिए किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष : इसके अतिरिक्त बहु-आहार खाने की क्षमताएँ जिनमें रेशम के कीड़े आर्थिक कृत्रिम आहार या प्राथमिक खाद्य पौधों के अलावा वैकल्पिक पत्तों पर भी पनप सकते हैं, एक महत्वपूर्ण विशेषता है। रोगों और प्रतिकूल पर्यावरणीय स्थितियों के प्रति प्रतिरोध या सहनशीलता की क्षमता स्थाई रेशम उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अलावा कोसा उत्पादन यांत्रिकी में सहायक व्यावहारिक गुणों का विकास भी ध्यान देने योग्य है। तसर रेशम के कीड़ों का प्रजनन मुख्य रूप से गुणात्मक और मात्रात्मक गुणों को बढ़ाने पर केंद्रित है। लक्ष्य विभिन्न पहलुओं को सुधारना है, जैसे प्रजनन क्षमता, कोसा उत्पादन, कच्चे रेशम का उत्पादन, कोसा की गुणवत्ता, कच्चे रेशम की गुणवत्ता और कोसा फसल की स्थिरता। ध्यान देने योग्य है कि कुछ गुण, जैसे कि पेडंकल की लंबाई केवल जंगली रेशम के कीड़ों से संबंधित हैं। चयनात्मक प्रजनन और प्रबंधन प्रथाओं के माध्यम से इन गुणों को सम्बोधित करने से रेशम उत्पादन उद्यमों की समग्र लाभप्रदता और प्रतिस्पर्धात्मकता में सुधार हो सकता है।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर रेशमकीट के रोगों में पर्यावरणीय कारकों की भूमिका

अरुणा रानी[1]*, डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय[1], डॉ. दिव्या राजावत[1], एवं डॉ. एन.बी. चौधरी[1]

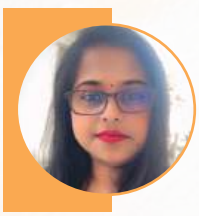

सारांश : तसर रेशमकीट के रोगों में पर्यावरणीय कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो कीड़ों के स्वास्थ्य और उत्पादन को प्रभावित करते हैं। तापमान, आर्द्रता, और जलवायु परिवर्तन जैसे कारक इन कीड़ों के विकास के लिए चुनौतीपूर्ण होते हैं। अत्यधिक आर्द्रता फंगल और बैक्टीरियल संक्रमणों को बढ़ावा देती है जबकि कम आर्द्रता से कीड़े निर्जलीकरण का शिकार हो सकते हैं। देखा गया है कि अत्यधिक आर्द्रता एवं अचानक तापमान में आयी गिरावट से सफेद मस्कार्डिन नामक रोग फैलता है जो कीड़ों की मृत्यु का कारण बन सकता है। जलवायु परिवर्तन भी नए रोगजनकों का उदय करता है जिससे कीड़े अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। मिट्टी की गुणवत्ता और पौधों में पोषण की उपलब्धता भी लार्वा की प्रतिरक्षा प्रणाली को प्रभावित करती है। असंतुलित पोषण से कीड़े कमजोर हो जाते हैं और रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। स्वच्छता की कमी या संक्रमित पौधों के माध्यम से रोग भी फैलते हैं। एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता कीट जनसंख्या को नियंत्रण में रख सकते हैं जिससे कीड़ों की रक्षा होती है। इन कारकों का ध्यान रखकर तसर रेशम उत्पादन की प्रक्रिया में सुधार किया जा सकता है जिससे उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार लाया जा सकता है।

प्रस्तावना : तसर रेशम भारतीय रेशम उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह रेशम अपनी विशेष गुणों जैसे कि स्थिरता, चमक और उच्च गुणवत्ता के

लिए जाना जाता है। तसर रेशम उत्पादन में पर्यावरणीय कारक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तसर रेशमकीट मुख्य रूप से भारत के विभिन्न क्षेत्रों विशेष रूप से झारखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ आदि के जंगलों एवं उसके आस-पास में पाये जाते हैं। तसर रेशम का उत्पादन आमतौर पर बाह्य परिस्थितियों में होता है और इसे साल (*शोरिया रोबेस्टा*), आसन (*टर्मिनेलिया टोमेंटोसा*) एवं अर्जुन (*टर्मिनेलिया अर्जुना*) की पत्तियों पर पाला जाता है। तसर रेशम उत्पादन से जुड़े विशिष्ट आवास और खेती की तकनीकें इसे पारिस्थितिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती हैं। हालांकि तसर के कीड़ों की खेती में कई चुनौतियाँ भी हैं। पर्यावरणीय कारक इन कीड़ों के स्वास्थ्य और उत्पादकता को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तसर रेशम के कीड़े को बाहरी वातावरण में पाला जाता है, जहां वे विभिन्न पर्यावरणीय परिस्थितियों के सम्पर्क में आते हैं। इन कारकों में तापमान, आर्द्रता, वर्षा और अन्य जलवायु परिवर्तन शामिल हैं जो कीड़ों की स्वास्थ्य और उत्पादन क्षमता को प्रभावित करते हैं। तसर रेशम अपनी विशिष्ट बनावट और प्राकृतिक रंगों के लिए प्रसिद्ध हैं। तापमान और आर्द्रता में उतार-चढ़ाव तसर रेशम के कीड़ों के लिए हानिकारक हो सकता है। उच्च तापमान और कम आर्द्रता की स्थिति में कीड़े निर्जलीकरण का शिकार हो सकते हैं जिससे उनकी मृत्यु दर बढ़ सकती है। इसके विपरीत अत्यधिक आर्द्रता फंगल और बैक्टीरियल संक्रमणों को बढ़ावा दे सकती है। उदाहरण के लिए अत्यधिक आर्द्रता एवं अचानक तापमान में आयी गिरावट के कारण कीड़ों में मस्कार्डाइन नामक फंगल रोग फैल सकता है जो कीड़ों की मृत्यु का कारण बनता है। अत्यधिक वर्षा और जलवायु परिवर्तन भी तसर रेशम के कीड़ों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं। भारी वर्षा से कीड़ों के रहने के स्थान में पानी भर सकता है जिससे उनकी मृत्यु दर बढ़ सकती है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के कारण नए रोगजनकों का उदय हो सकता है जो कीड़ों के लिए हानिकारक हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान और आर्द्रता में होने वाले बदलाव से कीड़ों की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है जिससे वे बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। पर्यावरणीय कारक कीट और परजीवियों की गतिविधियों को भी प्रभावित करते हैं। देखा गया है कि तापमान और आर्द्रता में परिवर्तन से कीटों की संख्या में वृद्धि हो सकती है जो तसर रेशम के कीड़ों पर हमला कर सकते हैं। तापमान में असमान वृद्धि एवं आर्द्रता बढ़ने से वाइरस जनित रोगों के फैलने की संभावना अधिक होती है। कीट जैसे कि ऊजी मक्खी और परजीवी जैसे कि नेमाटोड्स तसर रेशम के कीड़ों के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकते हैं। ये कीट और परजीवी कीड़ों के शरीर में प्रवेश कर उन्हें कमजोर कर देते हैं जिससे उनकी मृत्यु हो सकती है। आर्द्रता, तापमान, वायु प्रवाह और पोषण के कारकों का आपसी जटिल सम्बन्ध इनकी वृद्धि और विकास पर सीधा प्रभाव डालता है। इसके अलावा सफाई की प्रक्रियाओं, परपोषी पौधों की सेहत, कीटों की उपस्थिति और जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभाव भी इनके पालन में जटिलता बढ़ाते हैं। उच्च आर्द्रता स्तर फफूंद संक्रमण के लिए एक अनुकूल वातावरण उत्पन्न कर सकता है जबकि तापमान में उतार-चढ़ाव तनाव पैदा कर सकता है जिससे रोगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है। इसके अलावा तसर के कीड़ों के आहार की पत्तियों की पोषण गुणवत्ता उनकी प्रतिरक्षा कार्य-प्रणाली को बनाए रखने में महत्वपूर्ण होती है। स्वच्छता की कमी या संक्रमित परपोषी पौधों के माध्यम से रोगाणुओं का प्रवेश महत्वपूर्ण प्रकोप उत्पन्न कर सकता है जो न केवल कीड़ों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है बल्कि तसर रेशम उत्पादन की आर्थिक संभाव्यता को भी खतरे में डाल सकता है। इसके अलावा कीटों की उपस्थिति संक्रामक रोगों के संचरण को बढ़ावा दे सकती है जिससे कीड़ों के सामने जोखिम और बढ़ जाता है। हाल के अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि जलवायु परिवर्तन तसर के कीड़ों की पालन प्रक्रिया पर असर डाल रहा है। रोगों का प्रभाव केवल लार्वा की वृद्धि पर नहीं पड़ता बल्कि यह रेशम की गुणवत्ता और उत्पादन दर को भी प्रभावित करता है। संक्रमण के उच्च स्तर से उत्पादन में कमी आ सकती है जो अंततः किसानों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता है। इसलिए तसर रेशम के उत्पादन में रोगों के प्रभाव को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझना महत्वपूर्ण है। यह न केवल रोगों के नियंत्रण और प्रबंधन के लिए रणनीतियों के विकास में सहायक होता है बल्कि यह स्थायी रेशम उत्पादन के लिए आवश्यक बुनियादी जानकारी भी प्रदान करता है। इस आलेख का उद्देश्य तसर रेशमकीट में रोगों के लिए पर्यावरणीय कारकों की भूमिका का विश्लेषण करना और उनकी रोकथाम के लिए उपयुक्त प्रबंधन तकनीकों को प्रस्तुत करना है।

पर्यावरणीय कारक और तसर रेशमकीट के रोग : मौसम के पैटर्न में बदलाव पर्यावरणीय कारकों के संतुलन को बाधित कर सकता है जो स्वस्थ कीड़ों के विकास के लिए आवश्यक होते हैं और रोगों के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ा सकता है। इन पर्यावरणीय कारकों को समझना रेशम उत्पादकों और शोधकर्ताओं दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। इन कारकों के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए लक्षित रणनीतियाँ विकसित करके तसर रेशम उद्योग अपनी स्थिरता और उत्पादकता में सुधार कर सकता है (तालिका-1)।

तालिका -1 : तसर रेशमकीट में होने वाले रोगों के विभिन्न कारण एवं इसके प्रभाव।

सं.	कारक	प्रभाव
1.	जलवायु परिवर्तन	जलवायु में हो रहे बदलाव, जैसे तापमान में वृद्धि और असामान्य वर्षा, तसर रेशम कीड़ों के जीवन-चक्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। अत्यधिक गर्मी या ठंड के कारण इन कीड़ों की वृद्धि और विकास में बाधा आती है जिससे रोगों का प्रकोप बढ़ सकता है। तसर रेशमकीट के लार्वा की वृद्धि और विकास तापमान में उतार-चढ़ाव के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। लार्वा के विकास के लिए अनुकूल तापमान 25°C से 30°C के बीच होता है। इसे सीमा से बाहर जाने पर वृद्धि में रुकावट या उच्च मृत्यु दर हो सकती है।

सं.	कारक	प्रभाव
		उच्च तापमान जीवन-चक्र को तेज कर सकता है जिससे लार्वा कमजोर बनते हैं जो रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।
2.	आर्द्रता	आर्द्रता स्तर तसर रेशम के लार्वा के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च आर्द्रता (80% से ऊपर) फफूंद और बैक्टीरियल संक्रमण को बढ़ावा दे सकती है, जैसे कि *बेवेरिया बैसियाना* जो सफेद मस्कार्डिन रोग का कारण बनता है। तसर के कीड़ों के पालन के लिए आदर्श आर्द्रता स्तर 60% से 70% के बीच होता है। 80% से अधिक आर्द्रता स्तर फफूंद के प्रकोप का कारण बन सकता है। इसके विपरीत कम आर्द्रता निर्जलीकरण और लार्वा में तनाव पैदा कर सकती है जिससे वे विभिन्न रोगों के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।
3.	मिट्टी की गुणवत्ता और पोषण की उपलब्धता	मिट्टी की गुणवत्ता और परपोषी पौधे (जैसे अर्जुन, आसन, साल आदि) की पोषण सामग्री तसर रेशम के लार्वा के स्वास्थ्य को सीधे प्रभावित करती है। खराब मिट्टी की स्थिति पौधों की वृद्धि को अव्यवस्थित कर सकती है जो लार्वा के लिए खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता और मात्रा को प्रभावित करती है। पोषण की कमी लार्वा को कमजोर कर सकती है जिससे रोगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ जाती है।
4.	पोषण सम्बन्धी कारक	तसर के कीड़ों की सेहत सीधे उनके आहार की गुणवत्ता से जुड़ी होती है। अपर्याप्त या असंतुलित पोषण उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर सकता है। तसर के कीड़ों को 25-30% प्रोटीन की मात्रा वाली पत्तियों की आवश्यकता होती है। पोषण की कमी से मृत्यु दर 20% तक बढ़ सकती है। मिट्टी में ज़िंक, आयरन, कैल्शियम और मैग्नीशियम जैसे (माइक्रोन्यूट्रिएंट्स) सूक्ष्म पोषक तत्वों की उपस्थिति कीड़ों की सेहत के लिए महत्वपूर्ण है। इन तत्वों की कमी से कीड़ों में विकास सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
5.	जैव विविधता और कीट संतुलन	एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र जिसमें विभिन्न पौधे और जीव होते हैं, प्राकृतिक रूप से कीटों की जनसंख्या को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है। परभक्षी की उपस्थिति हानिकारक कीटों की संख्या को कम कर सकती है जो रोगों का प्रसार कर सकते हैं। हालांकि जैव विविधता का ह्रास, जैसे कि एकल फसल प्रथाओं या आवास के विनाश के कारण कीट जनसंख्या में वृद्धि कर सकता है और परिणाम स्वरूप रोगों की वृद्धि में इजाफा कर सकता है।
6.	जल की गुणवत्ता और उपलब्धता	स्वच्छ जल का पहुँच तसर रेशम के पालन के वातावरण की सेहत बनाए रखने के लिए आवश्यक है। प्रदूषित जल लार्वा में रोगों का कारण बन सकता है जिसमें जल जनित रोगाणु शामिल हैं। इसके अलावा जल की कमी पौधों में तनाव पैदा कर सकती है जो लार्वा के लिए खाद्य सामग्री प्रदान करती है जिससे रोगों का खतरा बढ़ता है।
7.	स्वच्छता प्रबंधन	गंदगी और जैविक पदार्थों के जमाव से अस्वच्छ परिस्थितियाँ बन सकती हैं जो रोगाणुओं के विकास के लिए अनुकूल माहौल प्रदान करती हैं। नियमित सफाई और कीटाणु शोधन से रोग फैलने की संभावना को लगभग 40% तक घटाया जा सकता है।
8.	पौधों की गुणवत्ता	परपोषी पौधे की गुणवत्ता तसर के कीड़ों की भलाई से सीधे सम्बन्धित होती है। रोगग्रस्त या कीट-पीड़ित पौधे कीड़ों के वातावरण में रोगाणुओं को प्रवेश करा सकते हैं। संक्रमित पौधे कीड़ों की वृद्धि दर को 15-25% तक कम कर सकते हैं और रोगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ा सकते हैं।

तसर रेशमकीट में सामान्य रोग : तसर रेशम का उत्पादन कई चरणों से गुजरता है जिसमें अंडो के प्रस्फुटन, पत्तों का चयन, लार्वा का विकास, कोसा उत्पादन और सिल्क उत्पादन शामिल हैं। हालांकि इस उत्पादन प्रक्रिया में कई रोगों का सामना करना पड़ता है जो लार्वा की सेहत, विकास और समग्र उत्पादन क्षमता को प्रभावित करते हैं। रोगों के प्रकारों में फफूंद

जनित रोग, बैक्टीरियल संक्रमण और वायरल संक्रमण शामिल हैं। इन रोगों के संक्रमण के तरीके और उनके प्रभाव को समझना अत्यंत आवश्यक है। तसर रेशम उत्पादन में कई सामान्य रोग होते हैं जो लार्वा और कोसा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। यहां पर तसर रेशम में सामान्य रोगों का विस्तार से वर्णन किया गया है। (चित्र-1; तालिका-2).

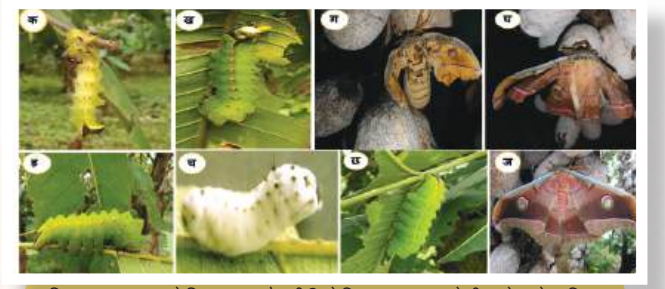

चित्र-1 (क) वायरोसिस (ख) बैक्टीरियोसिस (ग)-(घ) पेब्रीन रोग से ग्रसित मॉथ (ड़) पेब्रीन रोग से ग्रसित लार्वा (च) मस्कार्डिन (छ) स्वस्थ लार्वा (ज) स्वस्थ मॉथ।

तालिका-2 : तसर रेशमकीट में होने वाले रोगों के लक्षण।

सं.	रोग	लक्षण
1.	पेब्रीन रोग	✓ रेशमकीट के बाहरी आवरण पर काली मिर्च जैसे धब्बों का दिखना। ✓ अन्य लक्षणों में दस्त और कोसा व खोल के वजन में कमी शामिल हैं। ✓ ये काली मिर्च जैसे धब्बे मेलेनिन के निर्माण के कारण होते हैं। ✓ मॉथ के टूटे हुए पंख। ✓ पंखहीन एब्डोमेन वाली मॉथ।
2.	वायरोसिस	✓ लार्वा का सिर नीचे की ओर करके उल्टा लटकना, जहाँ वह केवल पिछले पैरों से टहनी से चिपका रहता है और उसके मुंह से दुर्गंधयुक्त बूंदें निकलती हैं जिसे ट्री टॉप लक्षण कहा जाता है।
3.	बैक्टीरियोसिस	✓ श्रृंखला के आकार का मल। ✓ रेक्टल उभार। ✓ एनल लिप का बंद होना।
4.	मस्कार्डिन	✓ बीमार लार्वा का ममीकरण जिसमें सफेद फफूंदी का मायसेलियम होता है।

1. **पेब्रीन रोग :** यह रोग एक सूक्ष्मजीव *नोसेमा माइलटेंसिस* के कारण होता है। यह एक विनाशकारी रोग है क्योंकि यह अंडों के माध्यम से संचरित होता है जिससे ऊर्ध्वाधर संक्रमण होता है और प्राथमिक संक्रमण के कारण कीड़ों की मृत्यु होती है। यदि द्वितीयक संक्रमण होता है तो लार्वा कोसा बनाने में सफल होते हैं लेकिन इसका प्रभाव प्यूपा और वयस्क चरणों पर गुणवत्ता वाले बीज उत्पादन के लिए हानिकारक होता है। संक्रमित लार्वा में भूरे या काले धब्बे दिखाई देते हैं, वृद्धि रुक जाती है और वे कमजोर हो जाते हैं। यह रोग सभी विकासात्मक चरणों में फैल सकता है। संक्रमित सिल्कवर्म अपने अंडों के माध्यम से संक्रमण फैला सकते हैं। साथ ही संक्रमित वातावरण जैसे कि कीड़ों के अपशिष्ट या मृत कीड़ों के सम्पर्क में आने से भी संक्रमण फैल सकता है। नियमित निगरानी और संक्रमित लार्वा को अलग करना आवश्यक है। इसके अलावा साफ-सफाई और उचित कीट नियंत्रण उपाय भी प्रभावी होते हैं (पाण्डेय एट. अल., 2023)।

2. **बैक्टीरियल रोग बैक्टीरियोसिस :** यह उल्लेख किया गया है कि *सेराटिया मार्सेसेंस*, एक ग्राम-निगेटिव, रॉड आकार का बैक्टीरिया, तसर रेशम के कीड़ों में बैक्टीरियोसिस का कारण बनता है जो श्रृंखला प्रकार के उत्सर्जन को दर्शाता है। एनल लिप सीलिंग एक ग्राम-निगेटिव रॉड द्वारा उत्पन्न होती है जिसे *प्रोटियस वल्गेरिस* के रूप में पहचाना गया है। *स्यूडोमोनास मेंडोसेना* एक अन्य सामान्य बैक्टीरियल रोग, रेक्टल प्रोटूजन से जुड़ा हुआ है लक्षण : लार्वा में पाचन सम्बन्धी समस्याएँ, सूजन और काले धब्बे दिखाई देते हैं। संक्रमित लार्वा की मृत्यु दर भी बढ़ जाती है। संक्रमित सिल्कवर्म अपने वातावरण में बैक्टीरिया को फैला सकते हैं जो स्वस्थ कीड़ों को संक्रमित करते हैं। गंदगी, अत्यधिक नमी, और अपर्याप्त स्वच्छता बैक्टीरियल संक्रमण को बढ़ाने में सहायक होती हैं। बीमारियों की प्रभावी निगरानी का पालन, जैसे कीट नियंत्रण और साफ-सफाई, बैक्टीरियल संक्रमण को कम करने में मदद कर सकती है (सिंह एट. अल.,2021)।

3. **फफूंद रोग मस्कार्डिन :** मस्कार्डिन एक ऐसा रोग है जो कीटों में रोगजनक फफूंद के संक्रमण से होता है। कई फफूंद प्रजातियाँ रेशम कीटों में इस रोग का कारण बनती हैं जिनमें *पेनिसिलियम सिट्रिनम* और *पेसिलोमाइसीस वेरियोटी* तसर रेशम कीट में मस्कार्डिन रोग उत्पन्न करते हैं। इस रोग का नाम मृत कीट के शरीर की सतह पर उपस्थित माइसेलियम और कोनिडिया के रंग पर निर्भर करता है जो सफेद, हरा, पीला या लाल मस्कार्डिन के रूप में दिखाई देता है (सिंह एट. अल.,2021; जेम्स एट.अल.,2012)। उचित तापमान और आर्द्रता बनाए रखना और संक्रमित लार्वा का निपटान करना आवश्यक है। सफेद मस्कार्डिन रोग का कारण *ब्यूवेरिया बेसियाना* नामक एक फफूंदी है। यह एक अत्यधिक पारिस्थितिकीय फफूंद है जो विभिन्न कीटों को संक्रमित कर सकती है, विशेष रूप से तसर रेशम के कीड़ों में। संक्रमण के प्रारंभिक चरण में पहले संक्रमित लार्वा सामान्य दिखाई दे सकते हैं लेकिन धीरे-धीरे उनकी गतिविधियों में कमी आने लगती है। जैसे-जैसे रोग बढ़ता है, लार्वा कमजोर हो जाते हैं और अंततः उनकी मृत्यु हो जाती है। मृत लार्वा के शरीर पर सफेद धब्बे या परत दिखाई देती है जो फफूंदी के तंतु होते हैं। ये तंतु हवा में फैलने वाले बीजाणुओं का उत्पादन करते हैं। यह फफूंदी संक्रमित वातावरण या खाद्य स्रोतों के माध्यम से फैल सकती है। उच्च आर्द्रता और तापमान के साथ संक्रमण की संभावना बढ़ जाती है (सिंह एट. अल.,2020)।

4. **वायरल रोग वायरोसिस :** उष्णकटिबंधीय तसर रेशम के कीड़े में साइटोप्लाज़मिक पॉलीहेड्रोसिस वायरस के कारण होती है जो कि

रिओविरिडे परिवार का एक ओक्लूडेड रीओवायरस है (सिंह एट. अल., 2020,2021; पोनुवेल एट.अल.2022) । साइटोप्लाज्मिक पॉलीहेड्रोसिस वायरस जो तसर रेशम के कीड़े *एन्थीरिया माइलिट्टा* में वायरस रोग का कारण बनता है, उसे संक्षेप में एएमसीपीवी कहा जाता है (पोनुवेल एट.अल.,2022) । साइटोप्लाज्मिक पॉलीहेड्रोसिस वायरस मुख्य रूप से लार्वा को संक्रमित करता है । प्रभावित रेशम के कीड़े धीमी वृद्धि के लक्षण दिखाते हैं और सामान्य लार्वा की तुलना में विकास में काफी पीछे रह जाते हैं। संक्रमण के प्रारम्भिक चरण में कोई बहुत स्पष्ट लक्षण नहीं होते लेकिन इन्हें उनके छोटे आकार, भूख में कमी और कभी-कभी अनुपातहीन रूप से बड़े सिर या लम्बे ब्रिस्टल्स से पहचाना जा सकता है। संक्रमित लार्वा में अजीब व्यवहार, विकास में रुकावट और उच्च मृत्यु दर होती है । संक्रमित लार्वा को अलग करना और उच्च गुणवत्ता वाले लार्वा का चयन करना महत्वपूर्ण है।

निवारण रणनीतियाँ

1. **जलवायु अनुकूलन तकनीक :** जलवायु परिवर्तन के अनुकूल पालन प्रक्रियाओं का उपयोग करना आवश्यक है । छायादार संरचनाएँ स्थापित करने से तापमान और आर्द्रता को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है जिससे लार्वा के लिए एक स्थिर वातावरण तैयार किया जा सके । तापमान और आर्द्रता को नियंत्रित करने के लिए उचित प्रबंधन तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है । उदाहरण के लिए कीड़ों के पालन के स्थान पर वेंटिलेशन हेतु पौधों की छँटाई एवं पौधों-से-पौधों की दूरी बढ़ाई जा सकती है एवं आर्द्रता बढ़ने पर नायलॉन नेट को उठा देना चाहिए।
2. **मिट्टी और पोषण प्रबंधन :** नियमित मिट्टी परीक्षण और जैविक खाद का उपयोग मिट्टी की सेहत को सुधार सकता है । सनई एवं ढैचा का प्रयोग हरी खाद के रूप में करें । फसल रोटेशन और मिश्रित फसल प्रथाएँ मिट्टी की उर्वरता और पौधों की विविधता को बढ़ा सकती हैं जो तसर लार्वा के लिए फायदेमंद हैं।
3. **एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) :** IPM रणनीतियों को अपनाने से पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बनाए रखा जा सकता है। इसमें जैविक नियंत्रण एजेंटों का उपयोग और कीटों के लिए उचित कीटनाशकों का विवेकपूर्ण उपयोग शामिल है।
4. **जल गुणवत्ता की निगरानी :** सिंचाई और पालन के लिए उपयोग किए जाने वाले जल स्रोतों की नियमित निगरानी रोगाणुओं की उपस्थिति को रोकने में मदद कर सकती है। मिट्टी का pH स्तर 5.5 से 7.0 के बीच होना चाहिए। उच्च या निम्न pH स्तर पौधों की वृद्धि को प्रभावित कर सकते हैं। कार्बनिक पदार्थों की उपस्थिति मिट्टी की उर्वरता और जलधारण क्षमता को बढ़ाती है। अनुसंधान के अनुसार मिट्टी में उचित पोषण की कमी से तसर के कीड़ों की मृत्यु दर 20% तक बढ़ सकती है। साथ ही ध्यान रहे कि एक स्थान पर अधिक जल का जमाव न हो।
5. **रोग मुक्त कीटो का चयन :** तसर रेशम के कीड़ों की रोग मुक्त कीटों का चयन और पालन किया जा सकता है जिससे बीमारियों का प्रभाव कम हो सकता है।
6. **जैविक नियंत्रण :** कीट और परजीवियों के नियंत्रण के लिए जैविक नियंत्रण विधियों का उपयोग किया जा सकता है, जैसे कि परजीवी ततैया और बैक्टीरिया का उपयोग।
7. **रासायनिक नियंत्रण :** आवश्यकतानुसार रासायनिक कीटनाशकों और फफूंदनाशकों का उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसका उपयोग सावधानीपूर्वक और सीमित मात्रा में किया जाना चाहिए।
8. **गुणवत्ता :** अच्छे गुणवत्ता हेतु ब्लीचिंग पाउडर एवं चुना का प्रयोग किया जाना चाहिए। कीटपालन के पूर्व, दौरान एवं बाद में चूना एवं ब्लीचिंग (1:9) का छिडकाव करें । इससे कीटो की रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ेगी और पर्यावरणीय कारकों में बदलाव आने पर रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ेगी ।
9. **संस्थान द्वारा विकसित उन्नत तकनीकियों का प्रयोग :** तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची द्वारा विकसित उन्नत तकनीकियों जैसे डेपुराटेक्स जो कि तसर रेशमकीट के अंडे की सतह की सफाई हेतु कीटाणुनाशक है, पेब्रीन विज़ुअलाइज़ेशन सॉल्यूशन जो बीज उत्पादक स्तर पर पेब्रीन बीजाणुओं की आसान और त्वरित पहचान के लिए है जीवन सुधा जो तसर रेशमकीट में वायरोसिस के नियंत्रण के लिए एक जैविक उपाय है, तसर कीट के अण्डों को धुलने की मशीन इत्यादी के प्रयोग से तसर रेशम कीट में होने वाले बीमारियों से बचाव किया जा सकता है (ARPO4016MI)।

निष्कर्ष : पर्यावरणीय कारकों और तसर रेशम लार्वा के स्वास्थ्य के बीच की अंतः क्रिया जटिल और बहुआयामी है । इन सम्बन्धों को समझना प्रभावी प्रबंधन रणनीतियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। जलवायु अनुकूलन, मिट्टी प्रबंधन, कीट नियंत्रण और जल गुणवत्ता निगरानी के समग्र दृष्टिकोण को अपनाकर, पर्यावरणीय कारकों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। इससे न केवल तसर रेशम की उत्पादकता में वृद्धि होगी बल्कि भारतीय रेशम उद्योग की स्थिरता में भी योगदान मिलेगा। तसर रेशम कीड़ों के आहार के लिए आवश्यक पौधों की गुणवत्ता और उपलब्धता भी महत्वपूर्ण है। यदि ये पौधे पर्यावरणीय कारकों के कारण कमजोर हो जाते हैं तो कीड़े भी कमजोर होते हैं और रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं । पारिस्थितिकी तंत्र में अन्य कीटों और प्रजातियों का संतुलन भी तसर रेशम कीड़ों की सेहत पर असर डालता है। अगर प्राकृतिक शत्रु (जैसे परजीवी और परभक्षी) का संतुलन बिगड़ता है तो रोग फैलने की संभावना बढ़ जाती है। तसर रेशम कीड़ों की स्वास्थ्य निगरानी करना और समय-समय पर निरीक्षण करना आवश्यक है ताकि रोगों का प्रारम्भिक निदान किया जा सके। तसर रेशम रोगों में पर्यावरणीय कारक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन कारकों को समझकर और उचित कदम उठाकर तसर रेशम की गुणवत्ता और उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। इससे न केवल रेशम उत्पादकों को लाभ होगा बल्कि भारतीय रेशम उद्योग को भी एक नई दिशा मिलेगी। तसर रेशम उत्पादन में पर्यावरणीय कारकों का प्रभाव महत्वपूर्ण है। इन कारकों को ध्यान में रखते हुए तसर रेशम के कीड़ों की सुरक्षा और उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए उचित प्रबंधन रणनीतियों का विकास आवश्यक है। इससे न केवल उत्पादन में वृद्धि होगी बल्कि किसानों की आय में भी सुधार होगा। पर्यावरणीय कारकों के प्रभाव को समझकर और उचित प्रबंधन तकनीकों का उपयोग करके तसर रेशम उत्पादन को अधिक स्थिर और लाभकारी बनाया जा सकता है।

*जे.आर.एफ., के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

प्राचीन से आधुनिक तक रेशम मार्ग की यात्रा

कपहुन गोल्मेई* एवं डॉ. विशाल मित्तल

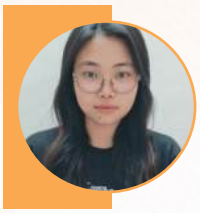

परिचय : रेशम मार्ग व्यापार मार्ग का एक नेटवर्क है जो विगत लगभग 1400 वर्षों से एशिया, मध्य पूर्व और यूरोप को जोड़ता है। इसे रेशम मार्ग इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस मार्ग से रेशम पश्चिमी देशों को निर्यात की जाने वाली मुख्य वस्तु थी। रेशम मार्ग का नाम चीन में उत्पादित रेशम वस्त्रों के अत्यधिक आकर्षक व्यापार के कारण पड़ा है।

"सिल्क रोड" : प्राचीन विश्व में 'रेशम मार्ग' सबसे व्यस्त व्यापार मार्गों में से एक हुआ करता था। "रेशम मार्ग" के माध्यम से परिवहन की जाने वाली वस्तुओं में से एक के रूप में, व्यापार मार्ग को इसका नाम चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी तक भारी प्रभुत्व के कारण मिला। 21वीं सदी में भी व्यापार मार्ग भू-राजनीतिक रूप से इतना महत्वपूर्ण था कि क्षेत्र की हर शक्ति प्रभुत्व की आकांक्षा रखती थी। यह मध्य पूर्व, दक्षिण, दक्षिण पूर्व और पश्चिम एशिया के साथ-साथ पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी यूरोप भी था। प्राचीन "सिल्क रोड" परंपरागत रूप से पूर्वी शक्ति के नियंत्रण में रहा है। इससे हमें चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) के पीछे का रहस्य भी पता चला। सिल्क रोड इसके आस-पास स्थित प्राचीन शहरों की समृद्धि का महत्वपूर्ण कारण है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि "समरकंद" और "बुखारा" ये शहर हैं जिन्हें रेशम मार्ग से अत्यधिक लाभ हुआ। समरकंद मध्य एशिया के सबसे बड़े शहरों में से एक था और तिमोर ने 1965 ई. में समरकंद को राजधानी बनाया। 1494 ई. से 1512 ई. के बीच मुगल सम्राट बाबर ने कई बार समरकंद शहर पर कब्ज़ा करने की कोशिश की लेकिन वह केवल कुछ समय के लिए ही कब्ज़ा कर सका। यहां तक कि बीजिंग और शंघाई जैसे चीन के प्रमुख शहर भी काबुल के माध्यम से जुड़े हुए थे। तुर्की का कॉन्स्टेंटिनोपल इस्तांबुल रेशम मार्ग का चोक प्वाइंट था। कागजी बारूद जैसे सामानों का प्रसार यूरेशिया और उससे आगे के राजनीतिक इतिहास के पथ को बहुत प्रभावित करता है। 1877 में "सिल्क रूट" शब्द फर्डिनेंड वॉन रिचथोफ़ेन द्वारा गढ़े गए जर्मन शब्द से लिया गया था। रेशम मार्ग ने दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व और 18वीं शताब्दी ईस्वी के बीच कई देशों के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक संपर्क को बढ़ावा दिया। सिल्क रोड ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान विशेषकर बौद्ध दर्शन को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 2014 में सांस्कृतिक महत्व वाले 'चांग' और तियानशान गलियारे को यूनेस्को ने 'विश्व विरासत स्थल' का दर्जा दिया है।

"व्यापार का इतिहास और सिल्क रोड के अग्रदूत" : स्टेपी क्षेत्र समशीतोष्ण घास के मैदान का एक बड़ा क्षेत्र है जिसमें नॉर्ट में सिब्रियन वन और दक्षिण में रेगिस्तान है। दो चरम जलवायु क्षेत्रों के बीच की मध्यम जलवायु व्यापारियों के लिए सुविधाजनक मार्ग बन जाती है। चीनी घोड़े में सेलेनियम की कमी जिसके लिए चीन को घोड़ा आयात करना पड़ता है। चीन के मध्य पूर्व और पश्चिमी यूरोपीय देशों के साथ भी व्यापारिक सम्बन्ध थे। 1017 ईसा पूर्व प्राचीन मिस्र के दौरान चीनी रेशम साक्ष्य के रूप में पाया गया था। मंगोलिया, जर्मनी, काला सागर जैसे क्षेत्रों में कई दफ़न पाए गए जहाँ चीनी रेशम का उपयोग किया जाता है। 475 ईसा पूर्व में फ़ारसी साम्राज्य की शाही सड़क की लंबाई 2857 किलोमीटर तक कम हो गई थी और 329 ईसा पूर्व सेंट्रल अइया को अलेक्जेंडर के मैसेडोनियन द्वारा ग्रीक संस्कृति के रूप में पेश किया गया था। सिकंदर के बाद इंडो-ग्रीक सहित कई ग्रीको-बैक्टीरिया साम्राज्य ने इस क्षेत्र में खुद को स्थापित किया जिसके बाद वे पूर्व की ओर विस्तारित हुए और चीन में तकलामन रेगिस्तान तक पहुंच गए।

रेशम मार्ग की उत्पत्ति : "सिल्करोड" की शुरुआत 130BC में हान राजवंश और उसके राजदूत या झांग कियान की सिफारिश पर की गई थी। 'स्वर्गीय घोड़ों का युद्ध' जीतकर हान राजवंश ने मध्य एशिया की 'फ़रगना घाटी' की स्थापना की। इससे चीनी सेना की गतिशीलता में वृद्धि हुई। पहली शताब्दी में "समुद्री" रेशम मार्ग भी खोला गया था। चीन में रेशम को "मुद्रा" माना जाता था। यहां तक कि सैनिकों को भी रेशम के माध्यम से भुगतान किया जाता था।

सिल्क रोड का विकास : सिल्क रोड का विकास अवसर की तरह कई चरणों में किया गया लेकिन क्षेत्रीय शक्ति के उदय के कारण इसमें गिरावट आई। 30 ईसा पूर्व में रोमन साम्राज्य ने मिश्र पर विजय प्राप्त की क्योंकि मिश्र तीन महाद्वीपों अर्थात् यूरोप, एशिया और अफ्रीका से जुड़ा था। रोमन साम्राज्य के कारण बैरी गाजा बारबेरियन जैसी मध्य एशिया की सड़कें जुड़ी हुई थीं जिन्हें गुजरात, पाकिस्तान और करांची के नाम से जाना जाता था। रोमन साम्राज्य में रेशम की माँग इतनी बढ़ गई कि शाही आदेश पारित कर चीनी रेशम को आभूषण के रूप में प्रभावी रूप से प्रतिबंधित करना पड़ा। पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के दौरान कुषाण साम्राज्य चीनी रेशम के प्रति इस हद तक पागल था कि उन्होंने चीनी रेशम का रहस्य जानने के लिए जासूस भेजे। कुछ ही समय बाद बीजान्टिन साम्राज्य ने रेशम का उत्पादन शुरू किया लेकिन रेशम की गुणवत्ता कहीं अधिक बेहतर थी। 7वीं शताब्दी में चीन के तांग राजवंश ने रेशम मार्ग को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। तांग राजवंश के तहत रेशम मार्ग अपने 'स्वर्ण युग' तक पहुंच गया और "समुद्री रेशम" मार्ग भी विकसित किया गया। 1207 ई. और 1360 ई. के बीच मंगोलों का उदय हुआ जिन्होंने काफी राजनीतिक स्थिरता लायी और रेशम मार्ग को बढ़ावा दिया लेकिन 13वीं ई. में मंगोल साम्राज्य के विघटन के बाद राजनीतिक संस्कृति और आर्थिक एकता में सुधार हुआ।

भारत में सिल्क रोड साइट : भारत में 12 स्थल ऐसे हैं जो रेशम मार्ग व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। महत्वपूर्ण स्थल हैं- इंद्रप्रस्थ, श्रावस्ती, कुशीनगर, कौशांबी, वैशाली, विक्रमशिला अरिकामेडु, कावेरीपट्टनम और नालोसोपारा।

नई सिल्क रोड : स्वेज़ नहर की स्थापना के कारण एशिया और यूरोप में व्यापार एक बार फिर से स्थापित हो गया लेकिन विश्व युद्ध और शीत युद्ध ने प्राचीन व्यापार मार्ग के साथ व्यापार को बाधित कर दिया लेकिन आख़िरकार 1990 के दशक में चीन के विकास के साथ रेशम मार्ग को एक

बार फिर संशोधित किया गया। व्यापार मार्ग की ऐतिहासिक विरासत को भुनाने के लिए चीन द्वारा 2013 में "बेल्ट एंड रोड पहल" शुरू की गई थी।

पहल के दो भाग हैं : (1) सिल्क रोड आर्थिक बेल्ट (2) समुद्री रेशम मार्ग पहल।

पिछले कुछ वर्षों में चीन ने अफ्रीका में कनेक्टिविटी बुनियादी ढांचे के विकास में भारी निवेश किया है। सड़कों, रेलवे और भागों के माध्यम से निर्बाध कनेक्टिविटी के लिए समुद्री रेशम मार्ग में कई गहरे पानी के बंदरगाह विकसित किए जा रहे हैं। पूर्व में वे हनोई, कौली लम्पुर, कोलंबो जिला पुरुष, जकार्ता, कोलंबो जिला से जुड़ते हैं। पश्चिम में वे दिजीबूती, लाल सागर, स्वेज़ नहर, हल्फा जिला, एथेंस, इस्तांबुल प्रांत, एड्रियांटिक सागर और इटली से जुड़ते हैं। "यूरेशियन लैंड ब्रिज" को "न्यू सिल्क रोड" के रूप में भी जाना जाता है, यह एक रेलवे नेटवर्क है जो चीन, रूस, मंगोलिया और कजाकिस्तान को जोड़ता है। ट्रांस-यूरेशिया लॉजिस्टिक जर्मनी, रूस और चीन की कंपनियों का एक संयुक्त उद्यम है। परियोजना का उद्देश्य चीन को बेलारूस और पोलैंड के माध्यम से जर्मनी से जोड़ना है।

ओल्डसिल्क रूट और न्यू सिल्क रूट की तुलना :

मूलतः नया रेशम मार्ग पुराने रेशम मार्ग के व्यापार को पुनर्जीवित करना है। नई सिल्क रोड दो प्राथमिक कारणों से भिन्न है :-

1) प्राचीन रेशम मार्ग का राजनीतिक महत्व बहुत कम था।
2) प्राचीन सिल्क रोड कवरेज की तुलना में नई सिल्क रोड का कवरेज अधिक है।

अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी महाद्वीप को भी जोड़ने के लिए नई सड़क की परिकल्पना की जा रही है। रेशम मार्ग पूर्वी दुनिया के लिए उद्यमशीलता की भावना और नवाचार का प्रतीक है। पश्चिमी आधिपत्य को चुनौती देते हुए रेशम मार्ग पूर्वी दुनिया के देशों के लिए गौरव और आत्मविश्वास का प्रतीक बनकर उभरा है। संस्कृति की घटनाएँ सामान्यतः बाहरी दुनिया की घटनाओं की तरह वे जैसी हैं और यदि मानव निर्मित अवधारणा तथा शब्द उनके साथ निकटता से मेल नहीं खाते हैं तो किसी को फिट की कमी पर पछतावा हो सकता है लेकिन ऐसा करना वास्तविक घटनाओं को कृत्रिम अवधारणाओं और परिभाषाओं में थोपने की कोशिश करके उन्हें विकृत करने से बेहतर है।

*पीजीडीएस प्रशिक्षणार्थी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

रेशम वाणी

रेशम उत्पादन अपशिष्ट का पुनः उपयोग : पशुधन उत्पादकता बढ़ाने का मार्ग

डॉ. तपेन्द्र सैनी[1]*, डॉ. दिव्या राजावत[2], डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय[2], डॉ. एन.बी.चौधरी[2]

प्रस्तावना : रेशम उत्पादन या रेशमकीट पालन एक महत्वपूर्ण कृषि-आधारित उद्योग है जो मुख्य रूप से रेशम उत्पादन पर केंद्रित है। हालाँकि यह कई उप-उत्पाद उत्पन्न करता है, जैसे रेशमकीट प्यूपा, भोज्य पौधे के अवशेष और सेरीसिन और फ़ाइब्रोइन जैसे प्रोटीन जिनका अक्सर कम उपयोग किया जाता है। यह समीक्षा पशुधन पालन में इन रेशम उत्पादन उप-उत्पादों की क्षमता का पता लगाती है, उनके पोषण, पर्यावरणीय और आर्थिक लाभों पर प्रकाश डालती है। शहतूत के पत्ते और डंठल रेशम के कीड़ों के लिए प्राथमिक भोजन स्रोत, पशुओं के लिए पोषक तत्वों से भरपूर चारे के रूप में पुन: उपयोग किए जा सकते हैं जिससे चारे की लागत कम हो सकती है और दूध तथा मांस का उत्पादन बढ़ सकता है। प्रोटीन और आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर रेशमकीट प्यूपा सोयाबीन और मछली के भोजन जैसी महंगी फ़ीड सामग्री का विकल्प बन सकते हैं जिससे मवेशियों, मुर्गी, सूअर और मछली में विकास दर और फ़ीड रूपांतरण दक्षता में सुधार होता है। इसके अलावा रेशम निष्कर्षण के दौरान धुल जाने वाला प्रोटीन सेरीसिन, पशुधन प्रजनन के लिए क्रायोप्रिजर्वेशन और शुक्राणु गुणवत्ता वृद्धि में आशाजनक अनुप्रयोग प्रदर्शित करता है जबकि फ़ाइब्रोइन जानवरों में घाव भरने और ऊत्तक पुनर्जनन की क्षमता दिखाता है। पशुधन खेती की प्रथाओं में इन उप-उत्पादों को शामिल करने से स्थिरता, अपशिष्ट में कमी और संसाधन दक्षता को बढ़ावा मिलता है। यह दृष्टिकोण किसानों को चारा लागत कम करके, पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार करके तथा अतिरिक्त राजस्व धाराएँ बनाकर महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ प्रदान करता है। अध्ययन से पता चलता है कि कृषि और पशुधन प्रणालियों में रेशम उत्पादन उप-उत्पादों को अपनाने से एक चक्रीय जैव अर्थव्यवस्था में योगदान मिलता है जिससे लाभप्रदता और पर्यावरणीय स्थिरता दोनों में वृद्धि होती है।

रेशम उत्पादन और उप-उत्पादों का परिचय : रेशम उत्पादन या रेशम की खेती एक कृषि-आधारित उद्योग है जिसमें रेशम के उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों को पालना शामिल है। रेशम उत्पादन में जबकि रेशम एक प्राथमिक उत्पाद है, इस प्रक्रिया से कई तरह के उप-उत्पाद उत्पन्न होते हैं जिन्हें अक्सर अनदेखा किया जाता है या कम उपयोग किया जाता है जो अन्य उद्योगों में मूल्यवान हो सकते हैं। इन उप-उत्पादों में रेशमकीट प्यूपा, एक्सुवि, लार्वा लिटर और बचे हुए शहतूत के पत्ते और तने आदि शामिल हैं। हालाँकि इन सामग्रियों को पारंपरिक रूप से अपशिष्ट माना जाता है लेकिन यह पशुधन एवं खेती में उपयोग की महत्वपूर्ण क्षमता रखते हैं। इन उप-उत्पादों की खोज न केवल अपशिष्ट को कम करने में सहायता करती है बल्कि खेती के लिए एक अधिक टिकाऊ और एकीकृत दृष्टिकोण भी प्रदान करती है। रेशम कीटपालन में भोज्य पौधे के अवशेष, रेशमकीट प्यूपा और सेरीसिन और फाइब्रोइन जैसे प्रोटीन का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन होता है जिनमें से सभी का कृषि और पशुधन खेती में व्यावहारिक उपयोग है।

भोज्य पौधे के अवशेष : रेशम खाद्य पौधों की पत्तियाँ रेशम के कीड़ों के लिए प्राथमिक भोजन स्रोत हैं और इन पत्तियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बिना खाए रह जाता है। यह अवशेष, जिसमें बची हुई पत्तियाँ, तने और डंठल शामिल हैं, मवेशियों, बकरियों और अन्य पशुओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाले चारे के रूप में काम आ सकता है। रेशम उत्पादन और पशुधन खेती दोनों में लगे किसान इन अवशेषों का उपयोग चारा लागत को कम करने और अपने संचालन की समग्र दक्षता में सुधार करने के लिए कर सकते हैं। प्रोटीन, विटामिन और खनिजों से भरपूर पत्तियाँ पशुओं के पोषण में सुधार करती हैं जिससे संभावित रूप से अधिक दूध उत्पादन और बेहतर समग्र स्वास्थ्य होता है। अध्ययनों से पता चला है कि शहतूत के डंठलों का उपयोग मवेशियों के चारे के रूप में किया जा सकता है और परिणामस्वरूप अपशिष्ट का उपयोग बायो गैस उत्पादन के लिए किया जा सकता है जो कोसा प्रसंस्करण जैसे रेशम उत्पादन कार्यों के लिए ऊर्जा प्रदान करता है। यह विधि एक चक्रीय अर्थव्यवस्था बनाती है, संसाधन उपयोग को अधिकतम् करती है और अपशिष्ट को कम करती है।

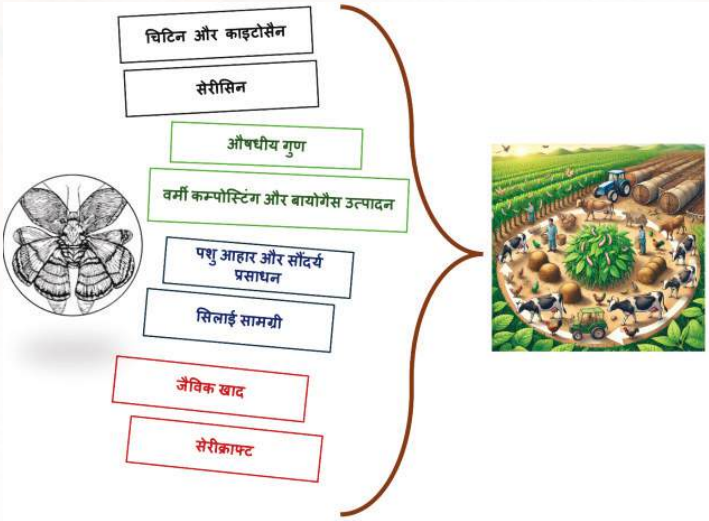

रेशमकीट प्यूपा : रेशमकीट प्यूपा रेशम उत्पादन का एक अन्य प्रमुख उपोत्पाद है जिसने मवेशियों, सूअरों, मुर्गी और मछली सहित विभिन्न पशुओं के लिए प्रोटीन युक्त आहार पूरक के रूप में क्षमता का प्रदर्शन किया है। अमीनो एसिड और वसा से भरपूर, रेशमकीट प्यूपा सोयाबीन भोजन और मछली भोजन जैसे अधिक महंगे फ़ीड अवयवों की जगह ले सकता है जिससे पशुओं के चारे की लागत कम हो जाती है। शोध से पता चला है कि मवेशियों को रेशमकीट प्यूपा भोजन (SWPM) खिलाने से विकास को बढ़ावा मिल सकता है और पोषक तत्वों के उपयोग या फ़ीड दक्षता पर नकारात्मक प्रभाव डाले बिना अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखा जा सकता है। वास्तव में मवेशियों के चारे में 50% तक प्रोटीन को SWPM से बदलना प्रभावी और किफायती साबित हुआ है। इसके अतिरिक्त सूअरों को रेशमकीट प्यूपा खिलाने से विकास दर, शावको की गुणवत्ता या फ़ीड दक्षता पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं दिखा है। मुर्गी पालन के लिए फ़ीड में रेशमकीट प्यूपा भोजन को शामिल करने से शरीर के वजन, अंडे के उत्पादन और मांस की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई दिया है। यह देखा गया है कि ब्रॉयलर आहार में पारंपरिक प्रोटीन स्रोतों की जगह रेशमकीट प्यूपा भोजन का उपयोग करने से मांस की पैदावार, वृद्धि दर और फ़ीड रूपांतरण दक्षता में वृद्धि हुई है। इसके अलावा चिकन और बटेर आहार में मछली के भोजन की जगह रेशमकीट प्यूपा भोजन का उपयोग करने से अंडे की गुणवत्ता या पक्षी के स्वास्थ्य को प्रभावित किए बिना अंडे का उत्पादन बढ़ा है। पशुधन पोषण में अपनी भूमिका के अलावा रेशमकीट प्यूपा के संभावित पर्यावरणीय लाभ हैं। रेशमकीट प्यूपा से निकाले गए काईटोसन को जुगाली करने वाले जानवरों में मीथेन उत्पादन को कम करने के लिए दिखाया गया है जो संभावित रूप से पशुधन खेती के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करता है।

सेरीसिन : सेरीसिन एक प्रोटीन है जो रेशम के फ़ाइब्रोइन रेशों को कोट करता है जिसे पारंपरिक रूप से रेशम निष्कर्षण की प्रक्रिया के दौरान धोया जाता है। इस प्रोटीन के कई अनुप्रयोग हैं, जिनमें सौंदर्य प्रसाधन और फार्मास्यूटिकल्स से लेकर पशुधन खेती तक शामिल हैं। इसका सबसे उल्लेखनीय उपयोग शुक्राणु के क्रायोप्रिजर्वेशन में है। अध्ययनों ने प्रदर्शित किया है कि वीर्य विस्तारकों में सेरीसिन को जोड़ने से मवेशियों, भैंसों और अन्य पशुओं में क्रायोप्रिजर्वेशन से निकालने के बाद शुक्राणु की गुणवत्ता में सुधार होता है। इसके एंटीऑक्सीडेंट और क्रायोप्रोटेक्टेंट गुण शुक्राणु की गतिशीलता, व्यावहार्यता और अखंडता को बढ़ाते हैं। वीर्य की गुणवत्ता में यह सुधार कृत्रिम गर्भाधान कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखता है जिससे संभावित रूप से उच्च प्रजनन सफलता दर और अधिक कुशल पशुधन प्रजनन प्रथाओं की ओर अग्रसर होता है। सेरीसिन का इन विट्रो में अण्डाणु कोशिका परिपक्वता और भ्रूण विकास में सुधार करने की इसकी क्षमता के लिए भी अध्ययन किया गया है। जब इसे परिपक्वता मीडिया में जोड़ा जाता है तो यह अण्डाणु कोशिका की गुणवत्ता को बढ़ाता है और सफल भ्रूण विकास की दरों को बढ़ाता है जो मवेशियों और भेड़ प्रजनन कार्यक्रमों में विशेष रूप से मूल्यवान है। ये निष्कर्ष बताते हैं कि सेरीसिन पशुधन प्रजनन प्रौद्योगिकियों की दक्षता में सुधार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

फ़ाइब्रोइन : रेशम का मुख्य प्रोटीन फ़ाइब्रोइन अपनी जैव-संगतता, जैव-निम्नीकरणीयता और यांत्रिक स्थिरता के लिए जाना जाता है जो इसे विभिन्न जैव-चिकित्सा अनुप्रयोगों के लिए एक आदर्श सामग्री बनाता है। पशुधन खेती में फ़ाइब्रोइन का घाव भरने, ऊत्तक पुनर्जनन और दवा वितरण प्रणालियों में संभावित उपयोग है। फ़ाइब्रोइन पर किए गए अध्ययनों ने जानवरों में हड्डियों के पुनर्जनन और घाव भरने को बढ़ावा देने में इसकी प्रभावकारिता को दिखाया है, खासकर उन मामलों में जहाँ तेजी से ऊत्तक की मरम्मत आवश्यक है। पशु चिकित्सा में फ़ाइब्रोइन पशुधन में चोटों के इलाज, पशु कल्याण में सुधार और ठीक होने के समय को कम करने के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में काम कर सकता है।

पशुधन खेती में एकीकरण : पशुधन खेती प्रणालियों में रेशम उत्पादन उप-उत्पादों का एकीकरण उत्पादकता और लाभप्रदता में सुधार के लिए एक स्थायी दृष्टिकोण प्रदान करता है। पशुधन फ़ीड के रूप में शहतूत के अवशेषों और रेशमकीट प्यूपा जैसे उप-उत्पादों का उपयोग करके किसान महंगे फ़ीड अवयवों पर निर्भरता कम कर सकते हैं, अपशिष्ट को कम कर सकते हैं और पशुधन आहार की पोषण गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रजनन तकनीकों और पशु स्वास्थ्य उपचारों में सेरीसिन और

फ़ाइब्रोइन का उपयोग पशुधन उत्पादन दक्षता में और सुधार कर सकता है। यह दृष्टिकोण न केवल लागत कम करके और पैदावार बढ़ाकर व्यक्तिगत किसानों को लाभान्वित करता है बल्कि टिकाऊ कृषि और पर्यावरण संरक्षण के व्यापक लक्ष्यों में भी योगदान देता है। अपशिष्ट को मूल्यवान संसाधनों में बदलकर रेशम उत्पादन उप-उत्पाद एक परिपत्र अर्थव्यवस्था का समर्थन करते हैं जो संसाधन दक्षता को बढ़ावा देता है और पशुधन खेती के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करता है।

निष्कर्ष : पशुधन खेती में रेशम उत्पादन के उप-उत्पादों की खोज और उपयोग कृषि क्षेत्र में उत्पादकता और स्थिरता को बढ़ाने के लिए एक आशाजनक अवसर प्रस्तुत करता है। रेशमकीट प्यूपा, भोज्य पौधे के अवशेष और सेरीसिन और फाइब्रोइन जैसे प्रोटीन पशुधन पोषण और प्रजनन सफलता में सुधार से लेकर अपशिष्ट में कमी और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने तक कई लाभ प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे रेशम उत्पादन उप-उत्पादों के विविध अनुप्रयोगों को उजागर करने के लिए अनुसंधान जारी है, पशुधन खेती में उनके व्यापक रूप से अपनाने का मामला बढ़ रहा है। ये उप-उत्पाद न केवल पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार के लिए व्यावहारिक समाधान प्रदान करते हैं बल्कि एक अधिक टिकाऊ और लाभदायक कृषि प्रणाली के विकास में भी योगदान करते हैं। पशुधन खेती प्रथाओं में रेशम उत्पादन उप-उत्पादों को एकीकृत करना किसानों के लिए अतिरिक्त राजस्व धाराएँ बनाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का समर्थन करने के लिए एक व्यावहार्य रणनीति है। इन नवाचारों को अपनाकर किसान भविष्य में अपनी आजीविका में सुधार करते हुए कृषि के लिए अधिक टिकाऊ योगदान दे सकते हैं।

*वैज्ञानिक-बी, पी-4 तसर प्रजनन केंद्र, चक्रधरपुर।

तसर रेशम कोसा विपणन में केंद्रीय रेशम बोर्ड, कच्चा माल बैंक (तसर डिपो), चाईबासा का योगदान और सफलता की कहानी

राममोहन प्रामाणिक*

रेशम वाणी

कच्चा माल बैंक, (तसर डिपो) केंद्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण इकाई है, जो 1972 से तसर कोसा के विपणन में सहायक भूमिका निभा रही है। यह डिपो वर्तमान में केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची के प्रशासनिक नियंत्रण में संचालित हो रहा है। इसका नेतृत्व सहायक सचिव (तकनीकी) द्वारा किया जा रहा है जिन्हें दो वरिष्ठ तकनीकी सहायक, दो सहायक अधीक्षक (प्रशा.) एवं एक मल्टी टास्किंग कर्मचारी का सहयोग प्राप्त है। इसके अतिरिक्त प्रसंस्करण/प्रोसेसिंग (जैसे स्टिफलिंग, धूप में सुखाना, ग्रेड के अनुसार चयन, गिनती, पैकिंग) आदि के लिए बाहरी स्रोतों से आवश्यकतानुसार मजदूरों को झारखण्ड सरकार द्वारा निर्धारित मजदूरी दर पर लगाया जाता है।

1. कच्चा माल बैंक का उद्देश्य और योगदान

- कच्चा माल बैंक का उद्देश्य तसर कोसा के विपणन में सहायता प्रदान करना है। यह सभी तसर उत्पादन वाले राज्यों जैसे झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना को तसर कोसा के विपणन में सहायता प्रदान करता है।
- यह डिपो उपरोक्त राज्यों में, उत्पादकों से उष्णकटिबंधीय तसर सलाहकार समिति द्वारा निर्धारित न्यूनतम् समर्थन मूल्य (MSP) पर तसर कोसा की खरीद करता है जिससे किसानों को सुनिश्चित आय प्राप्त होती है और निर्धारित दर की जानकारी विभिन्न माध्यमों, जैसे हैंडबिल व अखबार द्वारा किसानों तक पहुँचाई जाती है ताकि उन्हें सही मूल्य की जानकारी मिले और वे महाजनों या बिचौलियों के शोषण से बच सकें। इस प्रकार कच्चा माल बैंक का उद्देश्य पूरा किया जाता है।

2. बर्ष 2024-25 में तसर कोसा की खरीददारी

- इस वर्ष 2024-25 में (अक्टूबर, 2024 तक) महाराष्ट्र से 15.88 लाख नग तसर कोसा (जिसकी कीमत 47.84 लाख रुपये है), आंध्र प्रदेश से 19.89 लाख नग तसर कोसा (जिसकी कीमत 58.69 लाख रुपये है) तथा अन्य क्षेत्रों से 4.78 लाख नग तसर कोसा (जिसकी कीमत 19.36 लाख रुपये है), कुल मिलाकर 40.55 लाख नग तसर कोसा जिसकी कुल कीमत 125.90 लाख रुपये है, की खरीद की गई है।
- यह सुनिश्चित किया गया है कि किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य मिले और उन्हें आर्थिक स्थिरता प्राप्त हो।

3. बर्ष 2024-25 में तसर कोसा की प्रोसेसिंग और बिक्री

- कच्चा माल बैंक द्वारा खरीदे गए कोसा को प्रोसेसिंग के बाद विभिन्न संगठनों को बेचा जाता है। इनमें KVIC (खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग), KVIB (खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड), झारक्राफ्ट, अन्य रीलर्स और बुनकर शामिल हैं।
- इस वर्ष 2024-25 में (अक्टूबर, 2024 तक), 23.34 लाख नग तसर कोसा, जिसकी कीमत 55.12 लाख रुपये है और जिसकी बिक्री मूल्य 59.37 लाख रुपये है, का बिक्री किया गया है।
- प्रोसेसिंग के बाद विभिन्न ग्रेड के अनुसार तसर कोसा को इन संस्थानों द्वारा बेचा और प्रसारित किया जाता है जिससे रोजगार के अवसर भी उत्पन्न होते हैं।
- इन संस्थानों का कार्य तसर कोसा की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना, उनकी श्रेणीबद्धता करना और उचित दाम पर उन्हें खरीदारों तक पहुंचाना होता है। इससे न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियां बढ़ती हैं बल्कि समुदायों को आत्मनिर्भर बनाने में भी मदद मिलती है। तसर रेशम उत्पादन का यह

स्वरूप, कुटीर उद्योग के रूप में, अनेक लोगों के जीवन-यापन का साधन बन चुका है।

4. सफलता की कहानी और प्रभाव

- कच्चा माल बैंक, चाईबासा द्वारा तसर कोसा के संग्रहण और वितरण की मजबूत व्यवस्था से तसर उद्योग में सुधार हुआ है। यह तसर उत्पादन के क्षेत्र में झारखंड और अन्य राज्यों में किसानों को आय का एक स्थायी स्रोत प्रदान कर रहा है।
- तसर डिपो की इस पहल ने स्थानीय उत्पादकों, रीलर्स और बुनकरों को एक सशक्त बाजार उपलब्ध कराया है। इस डिपो की सहायता से कई छोटे और मझौले किसान आर्थिक रूप से सशक्त हुए हैं और अपने परिवारों का पालन-पोषण बेहतर तरीके से कर पा रहे हैं।
- इसके अलावा तसर विपणन करके, भारतीय तसर रेशम को विशेष पहचान दिलाई गई है।

निष्कर्ष : कच्चा माल बैंक (तसर डिपो), चाईबासा ने तसर कोसा के विपणन में असाधारण योगदान देते हुए क्षेत्र के हजारों तसर उत्पादकों को सशक्त बनाया है। इसके प्रयासों से न केवल किसान और तसर उत्पादकों की आजीविका में सुधार हुआ है बल्कि उन्हें आर्थिक सशक्तिकरण भी मिला है जिससे तसर रेशम उद्योग को स्थिरता और मजबूती प्रदान की है। केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के मार्गदर्शन में कार्य करते हुए यह इकाई ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में सफल रही है और तसर रेशम उद्योग को एक नई दिशा दी है।

*सहायक सचिव (तकनीकी), कच्चा माल बैंक, चाईबासा, झारखंड।

उत्तराखण्ड में पहली बार रेशम के हस्तशिल्प उत्पादों का उत्पादन : उत्तराखण्ड के रेशम इतिहास में नया अध्याय

हेम चन्द्र*, ए.एस.वर्मा, एवं तृषा

सारांश : उत्तराखण्ड जहाँ पर चारों प्रकार (जैसे- शहतूती, ऊष्णकटिबंधीय, तसर, शीतोष्ण तसर, अरण्डी एवं मूंगा (गोल्डन) रेशम कोया उत्पादन किया जाता है जिसमें अन्य रेशम की अपेक्षा मुख्यतः शहतूती रेशम का उत्पादन सबसे अधिक है और साथ ही इस राज्य में रेशम कोये से धागाकरण व वस्त्र उत्पादन का कार्य भी किया जाता रहा है जो कि इस पहाड़ी अंचल वाले राज्य में हजारों गरीब परिवारों को रोजगार मुहैया करवा रहा है और यहाँ की मुख्य समस्या पलायन को रोकने में भरसक योगदान दे रहा है। किन्तु अब उत्तराखण्ड में रेशम के इतिहास में एक नया अध्याय लिखा जा चुका है। केवल रेशम कोया उत्पादन, धागाकरण व वस्त्र उत्पादन से आमदनी अर्जित कर रहे किसानों व महिलाओं ने अब रेशम कोये से अत्यन्त मनमोहक उत्पाद तैयार कर अपनी आजीविका का अर्जन करना शुरू कर दिया है। जनपद नैनीताल के अन्तर्गत इस उद्देश्य हेतु महिलाओं के एक नवगठित स्वयं सहायता समूह द्वारा तो प्रशिक्षण प्राप्ति के मात्र 2 माह के भीतर ही लगभग रु.60000/- के रेशम कोया शिल्प उत्पादों का विक्रय किया जा चुका है और यह स्वयं सहायता समूह पहले से प्राप्त लगभग रु.50000/- के ऑर्डर को तैयार करने में जुट गया है। इन ऑर्डर्स से रेशम के इन उत्पादों के प्रति बाजार के उपभोक्ता के रुझान स्पष्ट नजर आते हैं। यद्यपि यह तो अभी अत्यन्त शुरुआत का समय है, कहना उचित होगा कि इतनी अल्प अवधि में प्रचार-प्रसार पर काफी कम ही कार्य हो पाया है, यह ऑर्डर तो केवल 2-3 सम्भावित व्यक्तियों से ऑफलाइन सम्पर्क से ही प्राप्त हो गये हैं जो कि यह दर्शाता है कि ऑनलाइन सोशल मीडिया के इस दौर में आगामी समय में जब ऑफलाइन के साथ-साथ ऑनलाइन/सोशल मीडिया के माध्यम से भी इन उत्पादों के प्रचार-प्रसार व विक्रय के प्रयास किये जायेंगे तो स्थिति क्या होगी। उत्तराखण्ड के रेशम इतिहास में पहली बार यहाँ की महिलाओं द्वारा रेशम कोये से हस्तनिर्मित उत्पाद बनाकर विक्रय किये जाने आरम्भ हो चुके हैं जो मंत्र मुग्ध कर देने वाले सौंदर्य से परिपूर्ण हैं। इनमें से कई उत्पाद तो ऐसे हैं जो देवभूमि उत्तराखण्ड के प्रतीक के रूप में इस राज्य का प्रतिनिधित्व करते नजर आते हैं, जैसे हूबहू माँ नंदा सुनंदा का फोटो फ्रेम, विश्व प्रसिद्ध केदारनाथ मंदिर की प्रतिकृति का फोटोफ्रेम, पहाड़ी वस्त्र व आभूषण पहने महिला का जीवंत फोटो फ्रेम, उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी हिमालयी मोनाल का 3डी फोटो फ्रेम, उत्तराखण्ड के सांस्कृतिक वाद्य यंत्र ढोल-दमाउ व रण-सिंगा का 3डी फोटो फ्रेम। इनके अतिरिक्त भगवान श्रीकृष्ण का फोटो फ्रेम, राम-सीता व लक्ष्मण और हनुमान जी के विभिन्न फोटो फ्रेम, भगवान गणेश जी का फोटो फ्रेम, रेशम कोये से तैयार विभिन्न फूलों के स्मृति चिह्न व गुलदस्ते, बुके, मालाएँ, तोरन, बैज, ब्रूच, कान के कुंडल/बालियां, गले का हार, पहाड़ी नथ, मांगटीका, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ स्लोगन को जीवंत करता मोमेंटो और भी बहुत कुछ। यह उत्तराखण्ड के रेशम विकास के क्षेत्र में एक ऐसा नवाचारी कार्य है जो देश-दुनिया में उत्तराखण्ड की एक अलग पहचान बनायेगा और साथ ही यहाँ की महिलाओं को स्वरोजगार का एक ऐसा अवसर उपलब्ध करायेगा जिसमें विकास की असीम सम्भावनाएँ हैं जिसका प्रभाव पहाड़ों से हो रहे पलायन पर भी निश्चित रूप से सकारात्मक होगा।

उत्तराखण्ड में रेशम कोया शिल्प उत्पादों का उत्पादन कैसे आरम्भ हुआ : उप निदेशक (रेशम), कुमाऊँ मण्डल श्री हेम चंद्र जब रेशम विभाग में अपनी पहली पोस्टिंग के दौरान सहायक निदेशक (रेशम) के पद पर जनपद चमोली में कार्यरत थे। उसी दौरान उनके भीतर यह मंथन होने लगा कि रेशम के क्षेत्र में ऐसा क्या नवाचारी कार्य किया जाये जो रेशम से जुड़े किसानों व महिलाओं को स्तरीय रोजगार प्रदान करते हुए उनकी आय को स्थायित्व भी दे व साथ ही राज्य उत्तराखण्ड को भी रेशम के द्वारा वैश्विक फलक पर लेकर आये, ऐसा नवाचारी कार्य जिसको स्थापित करने में बहुत कम पूंजी की आवश्यकता हो। जिसका सीधा व महत्तम लाभ किसान को प्राप्त हो। इस मंथन के फलस्वरूप वह इस सोच पर पहुँचे कि यदि हम यहाँ उत्पादित होने वाले कच्चे माल यानि रेशम कोये में हाथ की कलाकारी को भी शामिल कर दें तो हम ऐसे मूल्य संवर्धित व सुन्दर उत्पाद बना सकते हैं

जो रेशम जैसी स्तरीय चीज से बने सुन्दर उत्पाद होंगे, जिन्हें अमूमन हर व्यक्ति खरीदना चाहेगा और अच्छे मार्केटिंग टूल्स का उपयोग कर उन्हें देश-दुनिया की जनता तक पहुँचा कर अच्छी आमदनी भी अर्जित की जा सकेगी। फिर क्या था श्री हेम चंद्र लग गये अपनी इस सोच को सार्थक करने के प्रयासों में और एक ऐसे रिसोर्स पर्सन की तलाश में जो महिलाओं/किसानों को इस हस्तकला की आधारभूत बातें सीखा सके। इसी दौरान उनकी मुलाकात सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय पन्तनगर, कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर शेफाली मेसी व डॉक्टर दिव्या से हुई और हेम ने अपनी यह सोच व नजरिया उनसे साझा किया। तदुपरान्त उनकी मदद से इसी वर्ष 2024 में सर्व प्रथम ऊधम सिंह नगर जनपद की महिला किसानों को रेशम कोया शिल्प कला में प्रशिक्षित किया गया और रेशम विभाग के सहयोग व प्रोत्साहन से उसके कुछ समय बाद ही रक्षा बंधन के अवसर पर इन प्रशिक्षित महिला किसानों में से इच्छुक 2 महिलाओं द्वारा रेशम कोये से राखियाँ बनाकर स्थानीय बाजार व हल्द्वानी के बाजार में भी विक्रय किया गया जिससे मात्र 10 दिन में ही लगभग रु.15000/- की आय इन महिलाओं द्वारा अर्जित की जा सकी। हेम चंद्र यहीं पर नहीं रुके उन्होंने ऊधम सिंह नगर की प्रशिक्षित महिलाओं में से एक अच्छी प्रशिक्षित कृषक कु. काजल, ग्राम बांसखेडा, बाजपुर का चयन कर व मास्टर ट्रेनर के तौर पर आमंत्रित कर इसी सितम्बर माह में जनपद नैनीताल की महिलाओं को इस कार्य में प्रशिक्षित करवाया। जनपद नैनीताल की इन प्रशिक्षित महिलाओं को इस कार्य के जरिये आय अर्जन हेतु "रेशम नई पहल स्वयं सहायता समूह" के नाम से एक स्वयं सहायता समूह के रूप मे संगठित किया जा चुका है। उप निदेशक (रेशम), कुमाऊँ मण्डल, हेम चन्द्र की सोच, दूरदृष्टि व इस हेतु किया गया प्रयास व संघर्ष आज फलीभूत हो चुका है। जिस कारण रेशम विभाग के कार्मिकों व रेशम जुड़े व्यक्तियों द्वारा उन्हें "फादर ऑफ सिल्क कोकून क्राफ्ट इन उत्तराखण्ड" की संज्ञा दी जा रही है।

"फादर ऑफ सिल्क कोकून क्राफ्ट इन उत्तराखण्ड" - हेम चन्द्र, उप निदेशक (रेशम), कुमाऊँ मण्डल, उत्तराखण्ड

"रेशम नई पहल स्वयं सहायता समूह" की अध्यक्षा श्रीमती किरन जोशी जिनका शौक ही कला है उनके द्वारा तो अत्यधिक सुन्दर व मनमोह लेने वाले रेशम से तैयार उत्पाद जैसे हूबहू माँ नंदा सुनंदा का फोटो फ्रेम, केदारनाथ मंदिर की प्रतिकृति फोटो फ्रेम, पहाड़ी महिला का जीवंत फोटो फ्रेम, उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी हिमालयी मोनाल का 3डी फोटो फ्रेम इत्यादि बनाये गये हैं जिनकी कीमत रु.3000/- से रु.7000/- तक है जो कि मूल्य संवर्धन का उत्कृष्ट उदाहरण है।

रेशम नई पहल स्वयं सहायता समूह का गठन

रेशम कोये से उत्पाद तैयार करती एस.एच.जी. की महिलाएँ

रेशम विभाग के सहयोग से एस.एच.जी. द्वारा विभिन्न प्रदर्शनियों/मेलों में प्रतिभाग

उद्देश्य - रेशम कोया हस्तशिल्प के माध्यम से रेशम के विभिन्न मनमोहक उत्पाद तैयार कर हस्तशिल्प रोजगार को बढ़ावा देना एवं किसानों की आय में वृद्धि।

उत्तराखण्ड राज्य मे रेशम उत्पादन क्षेत्र :

1. **गढ़वाल मण्डल -** गढवाल मण्डल के रेशम उत्पादन जनपद जैसे - देहरादून, चमोली, रुद्रप्रयाग, पौडी, टिहरी, हरिद्वार, उत्तर काशी आदि। राज्य रेशम निदेशालय, देहरादून से लिये गये आंकडों के अनुसार गढवाल मण्डल में शहतूती रेशम कोया उत्पादन लगभग 221.48 मीट्रिक टन है तथा रेशम से जुड़े लाभार्थियों की संख्या-3705 है। रेशम कोया से प्रति लाभार्थी आय रु.15-20 हजार प्रतिवर्ष है लेकिन कुछ प्रगतिशील किसान रेशम कोया उत्पादन से रु.20-25 हजार प्रतिवर्ष आय अर्जित कर रहे हैं।
2. **कुमाऊँ मण्डल-** कुमाऊँ मण्डल के रेशम उत्पादन जनपद जैसे-नैनीताल, ऊधम सिंह नगर, अल्मोड़ा, पिथौरागढ, बागेश्वर, चम्पावत आदि। पहाड़ी जनपदों के क्षेत्रों मे शहतूती रेशम के अतिरिक्त नैनीताल, पिथौरागढ एवं बागेश्वर जनपद में ओक तसर रेशम का उत्पादन भी किया जा रहा है। ओक तसर के क्षेत्र में अभी बहुत अधिक उत्पादन नहीं हो पा रहा। ओक तसर के उत्पादन को बढ़ाने के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा प्रयास किये जा रहे हैं। साथ ही बागेश्वर जनपद में मूंगा (गोल्डन) रेशम का उत्पादन बढ़ाने के लिये भी प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य रेशम विभाग हल्द्वानी से लिये गये आंकड़ों के अनुसार कुमाऊँ मण्डल में शहतूती रेशम का उत्पादन लगभग 90 मीट्रिक टन है तथा रेशम से जुड़े लाभार्थियों सं.2804 है। रेशम कोया से प्रति लाभार्थी आय रु.15000-20000/- प्रतिवर्ष है लेकिन कुछ प्रगतिशील किसान रेशम कोया उत्पादन से रु. 20-25 हजार प्रतिवर्ष आय अर्जित कर रहे हैं। रेशम कोया हस्त-शिल्प सामग्री एवम क्रिया विधि : कुमाऊँ मण्डल के रेशम उत्पादन जनपद-नैनीताल, ऊधम सिंह नगर, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, बागेश्वर, चम्पावत हैं जिनमें अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, बागेश्वर, चम्पावत पूर्णतया पहाड़ी जनपद हैं व नैनीताल का कुछ क्षेत्र पहाड़ी और कुछ क्षेत्र समतल है

तथा जनपद ऊधम सिंह नगर का सम्पूर्ण क्षेत्र समतल है। पहाड़ी जनपदों में शहतूती रेशम उत्पादन के अतिरिक्त नैनीताल जनपद व ऊधम सिंह नगर में शहतूती रेशम का उत्पादन अच्छी मात्रा में किया जा रहा है। सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में रेशम कोया उत्पादन में देहरादून के बाद नैनीताल दूसरे और ऊधम सिंह नगर तीसरे स्थान पर है। इसी कड़ी में नैनीताल जनपद के 5 गाँव की 13 महिलाओं को रेशम कोया शिल्प में प्रशिक्षित कर रेशम नयी पहल स्वयं सहायता समूह के नाम से एक एस.एच.जी. तैयार किया गया है जिनको हस्तशिल्प के माध्यम से विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार करने के लिये प्रेरित किया जा रहा है। वर्तमान में उनके द्वारा विभिन्न प्रकार के रेशम उत्पाद तैयार कर विक्रय किये जा रहे हैं।

सामग्री : हस्तशिल्प के माध्यम से रेशम के विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार करने के लिये विभिन्न आवश्यक सामानों एवं कुछ छोटे-मोटे औजारों की जरूरत होती है जैसे –

रेशम कोया

डाई रंग

मेटल तार

रंगीन कागज

सजावट के लिये मोती

हार्ड बोर्ड

सेफ्टी पीन

रिबन

धागा एवं नीडिल

कटर

गोंद फेवीकॉल

हॉट ग्लू गन

कृत्रिम पत्तियाँ

नोज प्लायर

फ्लावर टेप

रेशम वाणी

क्रिया विधि : रेशम की प्राकृतिक आभा, रंगाई एवं जीवन्त रंगों के प्रति अंतर्निहित आकर्षण, उच्च अवशोषण क्षमता, हल्का, लचकदार एवं उत्कृष्ट वस्त्र-विन्यास जैसे श्रेष्ठ गुणों ने रेशम को विश्व में किसी सुअवसर का अत्यन्त सम्मोहक एवं अपरिहार्य साथी बना दिया है। रेशम से वस्त्रों की बुनाई के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प उत्पाद तैयार करने के लिये रेशम से जुड़े किसानों में अधिक रुचि देखने को मिल रही है। रेशम कोये से हस्तशिल्प उत्पाद तैयार करने हेतु सबसे पहले ग्रीन कोये को भली-भांति सुखाया जाता है। तत्पश्चात् कोये पर चिपके हुए रेशे जैसे मुलायम भाग को निकालकर कोये को भली-भांति साफ कर लिया जाता है ताकि उस पर कोई गंदगी या मिट्टी इत्यादि ना हो। उसके बाद कोये को आवश्यकतानुसार रंगो से रंगने के पश्चात् इन्हें सूखने के लिये छोड़ दें। पर्याप्त सूखने के पश्चात् जब कोया पक्का रंग पकड़ ले। तत्पश्चात् जैसा उत्पाद आप तैयार करना चाहते हैं उसकी आवश्यकतानुसार कोये को कैंची की या किसी अन्य धारदार उपकरण की मदद से कोये को विभिन्न आकार व आकृति में काट लें। इससे आप विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार कर सकते हैं। जैसे : -

- **गुलदस्ता -** आवश्यकतानुसार विभिन्न प्रकार की आकृति व आकार में कटे हुए तथा रंगे हुए कोयों को फूलों के रूप में सजायें और तार की मदद से एक गुच्छे में बांध दें।
- **माला -** रंगे हुए कोयों को माला के रूप में सजायें जिससे प्रत्येक कोया एक फूल के सामान दिखेगा।
- **मोमेंटो -** जिस भी प्रकार का मोमेंटो बनाना चाहते हैं उसकी आकृति के अनुसार कटे हुए व रंगे हुए कोये के टुकड़ों को एक आधार पर चिपकायें। यह आधार कागज, गत्ते व कपड़े इत्यादि का हो सकता है। कोये द्वारा बनायी गयी ऐसी आकृति के चारों ओर उत्तराखण्ड की ऐपण कला का उपयोग करते हुए इसे और अधिक अलंकृत किया जा सकता है। तत्पश्चात् इस तैयार आकृति को किसी फोटो-फ्रेम की भाँति 2 डी अथवा 3 डी प्रारूप में फ्रेम किया जा सकता है।
- **गहने -** रेशम के कोये से गले का हार, कान की बालियां, अंगूठी, मांगटीका, नाक में पहनी जाने वाली नथ इत्यादि भी तैयार किये जा सकते हैं।

शहतूती रेशम कोये से हस्तशिल्प द्वारा तैयार विभिन्न उत्पाद

उत्तराखण्ड की प्रमुख देवियाँ माँ नन्दा-सुनन्दा

उत्तराखण्ड के आभूषण एवं परिधान में एक पहाड़ी महिला

विश्व प्रसिद्ध केदारनाथ मंदिर

भगवान श्रीकृष्ण

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व माता सीता

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, माता सीता व लक्ष्मण

मर्यादा पुरुषोत्तम राम व श्री हनुमान

मर्यादा पुरुषोत्तम राम व माता सीता

उत्तराखण्ड के लोक वाद्य यंत्र ढोल दमाऊ

उत्तराखण्ड का प्रमुख लोक वाद्य यंत्र रण-सिंगा

उत्तराखण्ड का राज्य पक्षी हिमालयी मोनाल

उत्तराखण्ड का प्रमुख कृषि उपकरण सूप (सूपा)

मोमेंटों

गुलदस्ता

गुलदस्ता

वॉल हैंगिग गुलदस्ता

कुण्डल

कुण्डल

बैज

मालाएँ

उत्पाद तैयार करने में समय : रेशम कोया हस्तशिल्प से तैयार किये जाने वाले उत्पाद ऐसे उत्पाद नही हैं कि जिनमें केवल श्रम की आवश्यकता हो, वरन् यह ऐसे उत्पाद हैं जिनमें कला व हुनर की अधिक आवश्यकता है जो कि एक बौद्धिक सम्पदा है जिसमें सृजनात्मकता का होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः जो उत्पाद जितनी अधिक सृजनात्मकता से सृजित किया जायेगा वह उतना ही अधिक मनमोहक व आकर्षक होगा और उतना ही अधिक मूल्य संवर्धित भी होगा। अतः रेशम कोया हस्तशिल्प से उत्पाद तैयार किये जाने में लगने वाला समय 2 घण्टे से लेकर कई दिन भी हो सकता है। यह तैयार किये जाने वाले उत्पाद की जटिलता, सौंदर्य व सृजनात्मकता पर निर्भर करता है।

ब्रांड नाम, आकर्षक लोगो व पंच लाईन : उपनिदेशक (रेशम) हेम चंद्र द्वारा अपने रेशम परिवार (रेशम विभाग) के साथियों के सहयोग से इस समूह द्वारा इन उत्पादों का ब्राण्ड नाम "उत्तराखण्ड सिल्क डेकोर", आकर्षक लोगों व पंच लाईन "क्राफ्ट ड्रीम्स इनटू रीएलिटी" भी तैयार कर लिया गया है। जो भी उत्पाद बेचे जा रहे हैं वे इस ब्रांड नाम, लोगो व पंच लाईन के साथ ही बेचे जा रहे हैं जो कि उत्तराखंड के रेशम व उसके शुद्ध रेशम के उत्पाद होने की तस्दीक करता है। कच्चा माल रेशम विभाग के

लोगो

प्राइस टैग

सहयोग से ही इस समूह को उप्लब्ध करवाया जा रहा है।

किसानों को लाभ : यह कार्य कम लागत से शुरू किया जा सकने वाला कार्य है। इसमें किसी भारी मशीनरी खरीदने या कोई बड़ी इकाई स्थापित करने की आवश्यकता नहीं है। केवल आवश्यकतानुसार रेशम कोया व कुछ छोटे-मोटे उपकरण और सामग्री खरीद कर ही इसे शुरू किया जा सकता है। इस कार्य की सबसे बड़ी जरूरत है हुनर व सृजनात्मकता। व्यक्ति में जितना अधिक हुनर व सृजनात्मकता होगी वह उतना ही अधिक आकर्षक व उपयोगी उत्पाद तैयार कर सकेगा और जितना अधिक आकर्षक व उपयोगी उत्पाद होगा उतना ही अधिक उसकी कीमत होगी। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि कला की कोई कीमत नहीं होती, कला अनमोल है और इस कार्य में कला एक लागत के रूप में है। अतः लाभ की सम्भावनाएँ इस कारण से भरपूर हैं। जनपद नैनीताल में रेशम कोया हस्तशिल्प में प्रशिक्षित कर जिन महिलाओं को संगठित कर "रेशम नई पहल स्वयं सहायता समूह" के नाम से जो स्वयं सहायता समूह बनाया गया है उसके गठन के अभी 2 माह भी पूर्ण नहीं हुए हैं और उसने ऐसे उत्पाद तैयार व विक्रय कर लगभग 60 हजार रुपए की आय अर्जित कर ली है और लगभग रुपए 50 हजार के ऑर्डर इसे एडवांस में प्राप्त हो चुके हैं जबकि यह तो अभी शुरुआत ही है।

सम्भावनाएं : उत्तराखंड के सभी जनपदों में ग्रीन रेशम कोये का उत्पादन किया जाने लगा है जो कि रेशम उत्पादन हेतु गैर परम्परागत राज्य (वातावरणीय दशाओं के कारण) होने के कारण यहाँ पर वर्ष में मुख्यतः 2 बार ही रेशम कोये का उत्पादन किया जाता है और किन्हीं जनपदों में अल्प मात्रा में रेशम की एक तीसरी फसल भी ली जाती है। इस प्रकार इस कार्य हेतु कृषकों को कच्चा माल यानि रेशम कोया इसी राज्य में उनके अपने-अपने जनपदों में प्राप्त हो जायेगा जिससे हुनरमंद कृषक व महिलायें इसे खरीद कर कम लागत में ये कार्य शुरू कर सकते हैं। ऑफलाइन व ऑनलाइन दोनों ही माध्यमों से इनका विक्रय किया जा सकता है। उत्तराखण्ड राज्य पर्यटन प्रदेश होने के कारण प्रत्येक वर्ष यहाँ आने वाले असंख्य पर्यटकों के माध्यम से भी इनका विपणन किया जा सकता है। वर्तमान में केवल शहतूती रेशम से ही हस्तशिल्प उत्पाद बनाये जा रहे हैं किन्तु आगामी समय में उत्तराखण्ड राज्य में उत्पादित होने वाले अन्य तीन प्रकार के रेशम कोये से ही हस्तशिल्प उत्पाद तैयार किये जाने की अपार सम्भावनाएँ हैं।

परिणाम : रेशम विभाग का उद्देश्य नैनीताल जनपद में इस कार्य हेतु संगठित उत्तराखण्ड के पहले स्वयं सहायता समूह "रेशम नई पहल स्वयं सहायता समूह" को ऐसे वृहद उद्यम के रूप में स्थापित करना है कि यह इस कार्य हेतु पूरे उत्तराखण्ड में लीड करे व अनेकों अन्य महिलाओं को भी रोजगार प्रदान करे व अन्य जनपदों में भी इस मॉडल को अपनाकर रेशम व्यवसाय से जुड़े कृषकों को लाभान्वित किया जा सके। साथ ही आने वाले समय में यह कार्य इस रूप मे विकसित हो सके कि राज्य में उत्पादित होने वाले रेशम कोये की खपत राज्य के भीतर ही हो जाये जिससे राज्य के भीतर रेशम कोये की मांग बढ़ने के क्रम में उसका मूल्य भी बढ़ेगा जिसका सीधा लाभ कच्चा माल उत्पादित करने वाले किसानों को प्राप्त होगा। यह कार्य स्थानीय लोगों को विशेषकर महिलाओं को रोजगार प्रदान कर उत्तराखण्ड की मुख्य समस्या पलायन को रोकने में भी भरपूर सहायक होगा। इस कार्य के पर्यावरण हितैषी होने के कारण इस कार्य का पर्वतीय प्रदेश के पर्यावरणीय सौन्दर्य व हरी-भरी आबो-हवा पर भी कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं होगा।

निष्कर्ष : रेशम उद्योग दुनिया का यह एकमात्र उद्योग है जो बहुत ही कम लागत में प्रति परिवार 25 से 30 दिन में रु.15 से 25 हजार (शहतूती रेशम कोया उत्पादन/300 शहतूती वृक्षों द्वारा) कमाने का साधन मुहैया कराता है। अकेले उत्तराखण्ड में लगभग 311.48 मीट्रिक टन शहतूती रेशम का उत्पादन हो रहा है जिसका उपयोग धागाकरण एवं विभिन्न प्रकार के वस्त्र तैयार करने में किया जाता है। इसके साथ ही इस नई पहल से हस्तशिल्प उत्पादन क्षेत्र वासियों के लिये जीविकोपार्जन का एक बडा स्रोत बन सकता है और ग्रामीण अंचलों में बिना किसी अवरोध के रोजगार के नये अवसर प्रदान कर सकता है। ग्रामीणों के पलायन को रोकने में अहम् भूमिका निभा सकता है। परिवार के बच्चों, वृद्ध एवं महिलाएँ मिलकर खाली समय का सदुपयोग करते हुए दैनिक आम घरेलू कार्यों के साथ-साथ इस रोजगार में शामिल होने से उनके आय मे वृद्धि एवं अजीविका का बड़ा माध्यम सिद्ध हो सकता है।

*उप निदेशक (रेशम), कुमाऊँ मण्डल, उ. सरकार, वैज्ञानिक-डी, क्षेरेउअके, भीमताल एवं सहकारी पर्यवेक्षण, रे.वि.वि., कुमाऊँ मंडल

वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों/जेआरएफ/परियोजना सहायकों के बीच जन-सामान्य विषयों के प्रति प्रेरणा उत्पन्न करने के उद्देश्य से इस संस्थान में आयोजित की जा रही अभिनव प्रेरणात्मक व्याख्यान माला में व्याख्यान देने वाले कार्मिकों एवं विषय की सूची :-

नाम व पदनाम	विषय
डॉ.विशाल मित्तल, वैज्ञानिक-डी	डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के संस्मरण।
डॉ.जितेन्द्र सिंह, वैज्ञानिक-डी	पर्यावरण एवं प्रकृति के प्रति हमारा दायित्व।
डॉ.जगदज्योति बिंकदाकट्टी, वैज्ञानिक-डी	तनाव प्रबन्धन।
श्री आशु कुमार, वैज्ञानिक-बी	पर्यावरण संरक्षण।
डॉ.हरेन्द्र यादव, वैज्ञानिक-सी	तसर रेशम उद्योग का सामाजिक एवं व्यावहारिक पहलू।
डॉ.दिव्या राजावत, वैज्ञानिक-बी	मनुष्य के जीवन में अनुशासन का महत्व।
श्री हरगोपाल दत्ता, वैज्ञानिक-बी	तसर रेशम कीटपालन एवं उससे सम्बन्धित अन्य कार्य में ड्रोन का उपयोग।
श्री वैद्यनाथ मिश्रा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक	कार्यालयीन कार्य ई-ऑफिस के द्वारा कैसे करें।
श्रीमती सुस्मिता दास, वैज्ञानिक-डी	दैनिक जीवन एवं कार्यालय परिसर में स्वच्छता के प्रति हमारा दायित्व।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान के 60वें स्थापना दिवस के अवसर पर मंच पर विराजमान पद्मभूषण श्री कड़िया मुण्डा, पूर्व सांसद, खूँटी लोकसभा, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से., संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

संस्थान के 60वें स्थापना दिवस के अवसर पर संस्थान द्वारा संचालित पीजीडीएस प्रशिक्षण की आयोजित परीक्षा में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाली विद्यार्थी सुश्री डाली रानी बेग को पुरस्कार स्वरूप चेक प्रदान करते पद्मभूषण श्री कड़िया मुण्डा, पूर्व सांसद, खूँटी लोकसभा एवं केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से.।

गोमती नगर, लखनऊ में आयोजित सिल्क एक्सपो-2024 में तसर रेशम के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान एवं उत्तर प्रदेश राज्य में तसर रेशम की गतिविधियों में उल्लेखनीय सहयोग हेतु पं.दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न सम्मान की श्रेणी में उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के कर-कमलों द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्त करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

गोमती नगर, लखनऊ में आयोजित सिल्क एक्सपो-2024 में पत्रिका का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से. एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

रोमानिया देश के बुचारेस्ट शहर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सेरीकल्चर आयोग की बैठक में भाग लेने के बाद टीम के साथ केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से. एवं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

मिशनरीज ऑफ चैरिटी, कुष्ठ पुनर्वास केन्द्र, राधा रानी नगर, ईटकी रोड, राँची में इस संस्थान द्वारा तसर कीटपालन एवं अन्य गतिविधियों हेतु तकनीकी मार्गदर्शन के लिए आयोजित कार्यक्रम में इस संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी का स्वागत करते उक्त केन्द्र के प्रमुख सिस्टर यूजीनियस एवं अन्य।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय राजभाषा रेशम तकनीकी सेमिनार का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से., संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय राजभाषा रेशम तकनीकी सेमिनार में स्मारिका सह शोध-पत्र संकलन का विमोचन करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से., संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय राजभाषा रेशम तकनीकी सेमिनार में सभा को सम्बोधित करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से.।

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय राजभाषा रेशम तकनीकी सेमिनार में प्रस्तुत पोस्टर का अवलोकन करते केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से., साथ में हैं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी. चौधरी।

संस्थान में आयोजित राष्ट्रीय राजभाषा रेशम तकनीकी सेमिनार में उपस्थित निदेशकों/वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों का एक दृश्य।

संस्थान में तसर रीलिंग एवं स्पीनिंग इंक्यूबेशन सेन्टर का उद्घाटन करते श्री संजीव कुमार, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं सदस्य सचिव, जैव विविधता बोर्ड, झारखण्ड, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी.शिवकुमार, भा.व.से. एवं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

संस्थान की गतिविधियाँ

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते मुख्य अतिथि डॉ.अजीत कुमार सिन्हा, कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, राँची, संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं अन्य।

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुभागों में से अधिक पत्राचार करने वाले संवर्ग में सीम अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते मुख्य अतिथि डॉ.अजीत कुमार सिन्हा, कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, राँची। साथ में हैं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुभागों में से कम पत्राचार करने वाले संवर्ग में पीसीटी अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते मुख्य अतिथि डॉ.अजीत कुमार सिन्हा, कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, राँची एवं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुभागों में से वैज्ञानिक अनुभागों में जैव प्रौद्योगिकी अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते मुख्य अतिथि डॉ.अजीत कुमार सिन्हा, कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, राँची। साथ में हैं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

संस्थान में आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी के साथ उपस्थित वैज्ञानिकों/अधिकारियों एवं कर्मचारियों का एक दृश्य।

संस्थान द्वारा सिकनी, रामगढ, झारखण्ड में आयोजित समर्थ के अंतर्गत कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक दृश्य।

मीडिया सुर्खियाँ

तसर कीटपालकों के उत्साहवर्धन के लिए 'किसान दिवस' कार्यक्रम आयोजित

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

किसान दिवस पर तसर का उत्पादन बढ़ाने पर जोर, दी गई नई तकनीक की जानकारी

केंद्रीय रेशम बोर्ड नगड़ी के निदेशक को यूपी के सीएम ने किया पुरस्कृत

पिस्कानगड़ी. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केंद्रीय रेशम बोर्ड नगड़ी के निदेशक डॉ एनबी चौधरी को पं दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड दिया है. उन्हें उक्त अवार्ड नयी शहतूत व रेशम कीट के किस्मों को लांच कराने में सहयोग करने व रेशम उत्पादन को

नगड़ी तसर केंद्र को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड मिला

सेमिनार में स्मारिका, तसर रेशम कीट पर डाक टिकट व क्यूआर-कोड का विमोचन

रेशम किसानों की आय में वृद्धि, प्रौद्योगिकी प्रदर्शन और प्रचार-प्रसार के बढ़ावा पर जोर

विशेषज्ञों की टीम ने तसर अनुसंधान केंद्र का किया निरीक्षण

विशेषज्ञों की टीम के साथ तसर के वैज्ञानिक • जागरण

संसू, जागरण • पिस्कानगड़ी : राष्ट्रीय रेशम नीति 2047 के विशेषज्ञों की टीम ने शनिवार को केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान पिस्कानगड़ी रांची का दौरा कर एवं व्यापक विचार-विमर्श किया। इस टीम ने सीएफसी, झारक्राफ्ट और रेशम उत्पादन निदेशालय झारखंड के कीर्तिश्री आईएफएस, एमडी झारक्राफ्ट चर्चा किया। डा. एस.बी. डांडिन अध्यक्ष और टीम ने डा एन बी चौधरी निदेशक निदेशक सीएसबी-सीटीआरटीआई रांची के साथ विचार मंथन करते हुए हितधारकों के साथ तसर रेशम उद्योग से संबंधित मुद्दों पर चर्चा भी की। इस टीम में देश के अर्थशास्त्री प्रो देशपांडे, वैज्ञानिक डा झांसी लक्ष्मी, ने महत्वपूर्ण सलाह दी।

सीएसबी-केंद्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान नगड़ी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड दिया गया

नगड़ी तसर केंद्र को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड मिला

कुष्ठ पुनर्वास केंद्र में तसर कीट पालन के लिए किसान दिवस कार्यक्रम आयोजित

'किसान दिवस' कार्यक्रम का आयोजन

आरयू के वीसी बने केंद्रीय सिल्क बोर्ड मंत्रालय की अनुसंधान कमेटी के सदस्य

रांची। रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार सिन्हा को केंद्रीय सिल्क बोर्ड के अनुसंधान समन्वय समिति का सदस्य बनाया गया है। डायरेक्टर जनरल आईसीएआर डॉ. हिमांशु पाठक के चेयरमैनशिप में गठित समिति में सदस्यों के रूप में डॉ. अजीत कुमार सिन्हा को शामिल किया गया है। केंद्रीय रेशम बोर्ड देश में रेशम उद्योग के विकास के लिए शोध, अनुसंधान, नीतियां बनाने, निर्देशित कर उसको मॉनिटर करने का कार्य करता है।

तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रांची सम्मानित

तसर अनुसंधान संस्थान में पुरस्कार वितरण हुआ

रांची. केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रांची में हिंदी

तसर उद्योग लगाने से लोगों को मिलता है रोजगार, प्रदूषण भी नहीं होताः कड़िया

उत्तर प्रदेश के सीएम ने पी. शिव कुमार को दिया लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

रेशम उद्योग की उन्नति में अनुसंधान पर हुई चर्चा

संसू, जागरण • पिस्कानगड़ी : केंद्रीय रेशम बोर्ड के प्रभावी स्मरणीय 75 वर्ष एवं भावी योजना पर प्रेसवार्ता का आयोजन केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान रांची में किया गया। मौके पर सदस्य सचिव केंद्रीय रेशम बोर्ड बेंगलुरु पी. शिवकुमार ने रेशम उद्योग की उन्नति में अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रसार का योगदान पर चर्चा की। पी. शिवकुमार ने कहा देश में मलबरी के अतिरिक्त तसर, मूंगा एवं एरी कुल चार प्रकार के रेशम हैं। ... का महत्वपूर्ण स्थान है।

जानकारी देते डा. शिव कुमार।

तकनीकों और पद्धतियों की पहचान करना और उन्हें अपनाना है। देश में रेशम उद्योग का गौरवशाली इतिहास सदियों पुराना है एवं झारखंड राज्य तसर रेशम उत्पादन में अग्रणी है।

केंद्रीय रेशम बोर्ड नगड़ी के निदेशक को यूपी के सीएम ने किया पुरस्कृत

पिस्कानगड़ी. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने केंद्रीय रेशम बोर्ड नगड़ी के निदेशक डॉ एनबी चौधरी को पं दीनदयाल उपाध्याय रेशम रत्न लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड दिया है. उन्हें उक्त अवार्ड नयी शहतूत व रेशम कीट के किस्मों को लांच कराने में सहयोग करने व रेशम उत्पादन को लेकर ग्रामीणों को जागरूक व प्रेरित करने में योगदान देने के लिए दिया गया है. रेशम निदेशालय उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लखनऊ में 22 अक्तूबर 2024 को आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय रेशम

केंद्रीय रेशम बोर्ड के 75 वर्ष पूरे होने पर 75 रुपए का स्मारक सिक्का व डाक टिकट जारी

सीएम योगी आदित्यनाथ के हाथों सदस्य सचिव पी शिवकुमार को मिला 'पंडित दीन दयाल उपाध्याय रेशम रत्न' लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

डॉ. जयप्रकाश पांडेय हुए उत्कृष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार से सम्मानित

रांची। केंद्रीय रेशम बोर्ड के प्लेटिनम जुबली समारोह का आयोजन मैसूर में हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह व अति विशिष्ट

तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में कार्यक्रम

पिस्कानगड़ी, केंद्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित 11 से 13 जुलाई तक चलनेवाले राष्ट्रीय रेशम नीति 2047 के विशेषज्ञों की टीम ने शनिवार को संस्थान का निरीक्षण किया. टीम ने सीएफसी, झारक्राफ्ट और रेशम उत्पादन निदेशालय का भी दौरा किया. इस दौरान झारक्राफ्ट के एमडी कीर्ति श्री निदेशक आकांक्षा रंजन से विचार-विमर्श किये. इस मौके पर अध्यक्ष डॉ एसबी डांडिन, सीएसबी-सीटीआरटीआइ निदेशक डॉ एनबी चौधरी. अर्थशास्त्री प्रो देशपांडे, वैज्ञानिक डॉ झांसी लक्ष्मी, डॉ जितेंद्र सिंह व डॉ आशु कुमार आदि थे.

हिम्मत

ए.एस.वर्मा*

हिम्मत करो हाथी बाँधों चारे की चिन्ता मत करना।
अगर बाँधोंगे हाथी तो फिर चारा भी तो वो खायेगा॥
हाथी से डरकर चिन्ता कर मन में मत घबराना तुम।
जब बाँध लिये हो हाथी तो चारा भी आ ही जायेगा॥
चिन्ता कर बेकार रहोगे घर के बोझ बन जाओगे तुम।
हाथी की तो छोड़ो कभी भी बकरी भी बाँध ना पाओगे॥
हिम्मत करो और सही समय की पहचान करो तुम।
निकल गया अनमोल समय फिर कहाँ से लाओगे।
इस देश जगत में हिम्मत जिन-जिन ने कर दिखलाई।
हिम्मत करने वाले सफल हुए हिम्मत को पहचानो तुम॥
चिन्ता छोड़ो चिन्तन करो कुछ तुम अच्छा काम करो।
बिन हिम्मत कुछ मिलता नहीं बात सही है मानो तुम॥
मेहनत कर हिम्मत करो फल की चिन्ता मत करना।
कर्म करोगे सही दिशा में फल भी मिल ही जायेगा॥
देखकर कठिन रास्तों को डर कर मत घबरा जाना तुम।
चल पड़ोगे पकड़ रास्ता तो मंजिल भी मिल ही जायेगा॥
हिम्मत करो हाथी बाँधों चारे की चिन्ता मत करना।
अगर बाँधोंगे हाथी तो फिर चारा भी तो वो खायेगा॥
हाथी से डरकर चिन्ता कर मन में मत घबराना तुम।
जब बाँध लिये हो हाथी तो चारा भी आ ही जायेगा॥

*वैज्ञानिक-डी, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल।

रेशम है वस्त्रों की रानी

डॉ.दिव्या राजावत*

रेशम है वस्त्रों की रानी, नाजुक धागों में छुपी कहानी,
सपनों का ये धागा बुनती, हर दिल में बस जाये अनजानी।
कोमलता की मिसाल ये देती,
चमक में है इसके जीवन की माया॥
धरती से लेकर आकाश तक,
रेशम ने हर रंग सजाया।
बुनकर के हैं हाथों की कला,
रेशम का हर ताना-बाना॥
कड़ी मेहनत और लगन से,
कपड़े बनते जैसे खजाना।
शाहों के बस्त हो या सामान्य,
हर तन को ये अपनाये॥
रंग-बिरंगे धागों में बंधा,
ये रेशम दिल को छू जाये।
कभी साड़ी, कभी शॉल बनकर,
हर उत्सव की शान है रेशम॥
त्योहारों में खुशियों की मिठास,
हर धड़कन की पहचान है रेशम।
कोमलता की ये परिभाषा,
छुअन में है इसकी जीवन आशा॥
माँ के आँचल में हो या दुल्हन की साड़ी,
रेशम गढ़े सबकी खुशियाँ सारी।
बुनते हैं इसे कारीगर जब,
बिनती है धरोहर हमारी॥
हरी जरी, हर किनारा इसका,
भारतीय संस्कृति की है सवारी।
त्योहारों में इसे पहनना गर्व,
हर उत्सव में इसकी धूम मचाई॥
सर्दियों में गर्मी, गर्मियों में सर्दी,
रेशम है हर मौसम को अपनायी।
रेशम जो दिलों से जुड़ा है,
हर धड़कन में ये बसा है॥
सदी-दर-सदी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी,
वस्त्रों की ये रानी सदा अमर है।
रेशम है वस्त्रों की रानी,
चमक में है इसकी नयी कहानी॥
सदियों से है ये हमारे साथ,
सौंदर्य की अद्भुत निशानी।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

पर्यावारण और मानव स्वास्थ्य

प्रमोद कुमार दूबे*

1. **भूमिका :** पर्यावरण का अर्थ है - परि+आवरण अर्थात् हमारे चारों तरफ का वातावरण । हमारे जीवन पर प्रभाव डालने वाले सभी कारक जैसे, मृदा, जल, वायु पर्यावरण का निर्माण करते हैं। मानव की उत्पत्ति से लेकर मृत्यु तक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है । सही पर्यावरण मानव जीवन को स्वस्थ रखता है जबकि पर्यावरण के दूषित होने से मानव के स्वास्थ्य पर संकट उत्पन्न करता है। मानव सभ्यता के प्रारम्भिक काल में मानव प्रकृति के अनुसार स्वयं को ढाल लेता था । सभ्यता के विकास के क्रम में मनुष्य का प्रकृति में हस्तक्षेप होने लगा जिससे पर्यावराण में प्रदूषण होता गया । वर्तमान में पर्यावरण के प्रदूषण का संकट उत्पन्न हो गया है।

2. **पर्यावरण के मानव जीवन पर प्रभाव :** पर्यावरण मानव जीवन पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है। पर्यावरण के प्रदूषित होने से मनुष्य के भोजन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां होने लगती हैं। पर्यावरण के प्रमुख घटक हैं – (i) मृदा (ii) जल एवं (iii) वायु। **(i) मृदा प्रदूषण :** मृदा प्रदूषण के कारण मानव के स्वास्थ्य प्रभावित होता है। खेती के दौरान कीटनाशी का प्रयोग किया जाता है एवं रासायनिक उर्वरकों का अधिक मात्रा में उपयोग होता है। इसके कारण खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता प्रभावित होती है। अनेक रसायन जैसे-डी.डी.टी. मनुष्य के आहार में शामिल होकर शरीर में पहुंच जाते हैं एवं अनेक बीमारियों का प्रमुख कारण बनते हैं । इनका उपयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए। **(ii) जल प्रदूषण :** मानव की भोजन के बाद दूसरी सबसे आवश्यक वस्तु जल है। जल के प्रदूषण के कारण अनेक बीमारियां हो रही हैं। आज देश की नदियों, तालाबों एवं अन्य जल स्रोतों में कैमिकल के कारण प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ गया है। आज गंगा, युमना मानव के जीवनदायी नदियां खतरनाक स्तर तक प्रदूषित हो चुकी हैं। इसके अलावा भूमिगत जल स्रोत भी प्रदूषित हो चुके हैं। इसके फलस्वरूप जल से होने वाली अनेक बीमारियां तेजी बढ़ रही हैं। प्राकृतिक का अनमोल उपहार जल मनुष्य के स्वयं के कारनामों की बजह से जान लेवा हो चुकी है। इन्हें प्रदूषित होने से बचाना पूरे मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक है । **(iii) वायु प्रदूषण :** पर्यावरण का महत्वपूर्ण घटक वायु है जिसके अभाव में कोई भी जीव जीवित नहीं रह सकता है। पूर्णत: प्रदूषण खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है । वाहनों से निकलने वाले जहरीले गैस एवं ए.सी., फ्रिज इत्यादि द्वारा उत्सर्जित क्लोरो-फ्लोरो कार्बन (सी.एफ.सी.) गैसे पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रही हैं । इसके कारण ग्रीन हाउज इफेक्ट उत्पन्न हो गया है । धरती का तापमान बढ़ रहा है जिसके फलस्वरूप पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

3. **पर्यावरण के प्रदूषण को रोकने के उपाय :** जैसा कि विदित है मानव का जीवन पूर्णत: प्रकृति अनुकूलन पर आश्रित है। कोई भी जीवन को जीवित रहने के पर्यावरण के सभी घटकों को प्रकृति के अनुकूल होना आवश्यक है। जैसे-स्वस्थ जीवन के लिए मृदा का स्वस्थ होना, जल का प्रदूषण मुक्त होना एवं स्वच्छ वायु का होना अत्यंत आवश्यक है । अत: मानव जीवन के अस्तित्व के लिए स्वच्छ वातावरण होना आवश्यक है । हमें अपने पर्यावरण के प्रदूषण को रोकना होगा । मृदा प्रदूषण के रोकथाम के लिए जैविक खाद का प्रयोग एवं रसयानों के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध आवश्यक है। इसी प्रकार जल स्रोतों को स्वच्छ रखना आवश्यक है। ध्वनि प्रदूषण के लिए एवं वायु प्रदूषण के लिए वाहनों के प्रयोग में जहरीले गैसों के उत्सर्जन स्तर को कम करना होगा । इसके लिए समेकित रूप से प्रयास आवश्यक है।

4. **उपसंहार :** पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य के बीच अन्योनाश्रय सम्बन्ध है। यदि पर्यावरण संतुलित है, स्वच्छ है एवं प्रदूषण रहित है तो मानव के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा । यदि हम पर्यावरण को प्रदूषण से बचायेंगे तो हम बचेंगे। अत: हमारे अस्तित्व के लिए हमें पर्यावरण के संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए । इसके व्यक्तिगत स्तर पर, सामाजिक स्तर पर एवं वैश्विक स्तर पर जागरूकता की आवश्यकता है । हमारे देश की सरकार द्वारा इस तरह के कदम उठाये जा रहे हैं जिससे पर्यावरण प्रदूषण कम हो। हमें व्यक्तिगत स्तर पर जागरूकता उत्पन्न कर अपनी दायित्व का निर्वहन करना चाहिए। अंत में यह सम्पूर्ण पृथ्वी जो हमारे जीवन का आधार है इसे जीने लायक बनाना हमारा दायित्व है। आइए हम सभी मिलकर एक सामाजिक दायित्व के निर्वहन का संकल्प लें।

*वरिष्ठ तकनीकी सहायक, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

रेशम वाणी

ड्राइंग

आराध्या बिंकदाकट्टी, सुपुत्री डॉ.जगदज्योति बिंकदाकट्टी, वैज्ञानिक-डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची

कुछ न कुछ संवाद लिखो तुम

फूल सिंह लोधी*

कुछ-न-कुछ संवाद लिखो तुम।
वाद नहीं अपवाद लिखो तुम॥
मूक बधिर से क्यों बैठे हो।
लेखन का अनुवाद लिखो तुम॥
माना कि तकनीक के युग में।
भाषा के इस कलयुग में॥
इमोजी के मौज़ से आगे।
लफ़्ज़ों का संसार लिखो तुम॥
कुछ-न-कुछ संवाद लिखो तुम।
वाद नहीं अपवाद लिखो तुम॥
सरस-सरल जीवन की भाषा।
इसमें कुछ परिहास लिखो तुम॥
आने वाले कल को छोड़ो।
अपना ही इतिहास लिखो तुम॥
होता है जो होना होगा।
अपने मन का रास लिखो तुम॥
कौन सही और कौन गलत है।
इसमें बहुत-बहुत गफलत है॥
वर्तमान में जो जीवन है।
उस जीवन का अवकाश लिखो तुम॥
कुछ-न-कुछ संवाद लिखो तुम।
वाद नहीं अपवाद लिखो तुम॥
सच्चा झूठा छोड़-छाड़कर।
लोगों की बकवास लिखो तुम॥
केनवास से खाली मन पर।
जीवन का उल्लास लिखो तुम॥
कुछ-न-कुछ संवाद लिखो तुम।
वाद नहीं अपवाद लिखो तुम॥

*व.अनुवादक (हिन्दी), बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

"मैं तसर रेशम का कीड़ा हूँ"

डॉ.विनोद सिंह*

मैं न देखता हूँ, न सुनता हूँ, न हसता हूँ, न रोता हूँ,
अर्जुन और आसन की पत्तियां खाता हूँ,
सबसे अच्छा कोसा बनाता हूँ,
मैं कोई और नहीं, तसर रेशम का कीड़ा हूँ
मैं जंगल में रहता हूँ, जंगल में पलता हूँ, जंगल में बढ़ता हूँ
चार बार नींद में जाकर फिर से उठ जाता हूँ
हरे रंग के साथ नीला, पीला और बादामी भी हूँ
मैं कोई और नहीं, तसर रेशम का कीड़ा हूँ
मेरे लिए जंगल होने चाहिए हवादार,
नहीं होना, पानी का जमाव बार-बार,
पेब्रीन की जांच होनी चाहिए हर बार
तभी मिलेंगे कोसा के दाम शानदार
मैं भारत के गावों को मजबूत बनाता हूँ, विदेशी मुद्रा भी दिलाता हूँ
मैं सभी रेशमों का सरताज हूँ ,भारत के किसानों की आन बान और शान हूँ
मैं कोई और नहीं, तसर रेशम का कीड़ा हूँ।

*वैज्ञानिक-डी, बु.बी.प्र. व प्र.के., के.रे.बो., पाली, कोरबा (छ. ग.)

तसर हमारा

शाजिया मुमताज*

हरा-भरा भेस बनाके
कीड़े इसके मन को लुभाते

सुन्दर-सुन्दर कोसे इनके
रंग-बिरंगे खोल बनाते
तसर सबसे प्रिये हमको
तसर के ही हम गुण गाते
किया इसने कितनों को आत्मनिर्भर
तसर हमारा सबसे ऊपर
तसर, एरी, मूगा, मलबरी
देती हमको धागे सुनहरी
धागे इसके बहुत खूब
देते हमको वस्त्र मजबूत
हमको है इसकी मान बढ़ाना
तसर की है नई पहचान बनाना
रेशम ने दी हर घर रोजगार
रेशम का हर पर्व है त्योहार
किसानों से ही है रेशम की हस्ती
रेशम है हर वैज्ञानिक में बस्ती
रेशम के कई रूप अनेक
पर तसर हमारा लाखों में एक।

*परियोजना सहायक, के.त.अ. व प्र.सं., राँची

मेरे लिए तुम

साक्षी मिश्रा*

मेरे लिए तुम
बहती सी नदी हो,
ठहरा सा सागर हो
चमकता हुआ चांद हो,
सुबह का सूरज हो
मेरी अनकही बातें हो,
गुमसुम सी रातें हो,
दिन का पहला ख्वाब हो
हर रात की ख्वाहिश हो,
मेरी जिंदगी का सहारा हो
डूबती कश्ती का किनारा हो,
आंखों का नूर हो
दिल का सुकून हो
भ्रम हों हकीकत हो,
क्या कुछ है जो नहीं हो
मेरे लिए तुम
पतझड़ के बाद का वसंत हो
मेरी सारी दुखों का अंत हो।

*पत्नी श्री आशु कुमार, वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची

जलता सूरज

नवीन कुमार सिन्हा*

जलता सूरज, तपती धरती
रूकें कहाँ कहीं ठाँव नहीं है
दूर-दूर तक बंजर फैला
पेड़ों की कहीं छाँव नही हैं
आसमान से आग बरसती
दम घुटता है कदम बढ़ाते
कैसे निकलूँ जल्द यहाँ से
चलूँ तेज, वो पाँव नहीं है
कुँए बावली नजर न आते
नदियाँ सूखी रेत भरे हैं
नलके को जब खोल के देखा
पानी का कोई नाम नहीं है।

*फ्लैट सं.2, अंजली अपार्टमेंट, हातमा, काँके रोड, राँची।

बेरंग-रिश्ते

नीलोत्पल रमेश*

शाम का समय था। मैं अनमने ढंग से बैठा था। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूं, क्या न करूं ? मन उदास था। फिर भी दिमाग में तरह-तरह की बातें चल रही थीं - देश कहां जा रहा है ? लोगों की मानसिकता क्यों बदल गई है ? भारतीयता क्या है ? बात- बात पर लोग झगड़ते क्यों हैं ? हृदयहीनता इतनी पराकाष्ठा पर क्यों पहुंच गई ? ...और हम क्यों ऐसे हो गए हैं कि हमारे बगल में कुछ घटित हो जाता है और इसका पता भी नहीं चल पाता है। एक तरफ फोन की घंटी बज रही थी। दो-तीन बार बजने के बाद ध्यान दिया तो नया नंबर था। सोचा छोड़ दूं, होगा कोई, बाद में बात कर लूंगा लेकिन बार-बार फोन की घंटी बजती ही जा रही थी, तब विवश होकर उठाया। हमने "हेलो" कहा, तो जवाब आया कि " मैं भाभी बोल रही हूं। फोन क्यों नहीं उठा रहे हैं ?" शिकायत के लहजे में उन्होंने कहा। "भाभी नंबर नया होने के कारण नहीं उठा रहा था लेकिन बार-बार घंटी बजती ही जा रही थी तो विवश होकर उठाया। बोलिए न ! क्या बात है ?" हमने कहा। "क्या कहूं घर की स्थिति बहुत ही खराब हो गई है। रात में मुनि जी मुकेश को मारने के लिए छत पर चढ़ गया था। यह तो समय ठीक था कि मुकेश जगा हुआ था। आपसे बार-बार कहती हूं कि आप यहां आकर हिस्सा-बखरा लगा दीजिए। अब यहां रहना मुश्किल हो गया है।" भाभी ने कहा। भाभी और कहना ही चाह रही थी कि हमने पूछा कि यह सब क्या हो रहा है ? ऐसा क्यों हो रहा है ? तो फफक-फफककर कर वह रोने लगीं। फिर हमें उनके रोने की साफ-साफ आवाज सुनाई पड़ रही थी। मेरे बार-बार कहने के बाद भी वह सिर्फ यही कह रही थी कि "जल्दी आ जाइए। यहां आकर सब कुछ बंटवारा करवा दीजिए, नहीं तो हमारे मुकेश को कुछ भी हुआ, तो सारा दोष आपके ऊपर ही जाएगा। इतना कहने के बाद फोन काट दीं। मैं सोचने लगा कि हम चार भाइयों में आज तक कुछ नहीं हुआ। मुझे भी घर से बाहर रहते हुए 20 से 25 साल हो गए लेकिन मरने-मारने की बात आज तक नहीं हुई। सबसे बड़े भाई तो बाहर में ही रहते हैं - पूरे परिवार के साथ। उनके दो लड़के हैं। दोनों अपने-अपने काम में लगे हुए हैं। घर पर तभी आते हैं जब घर में कोई काज-परोजन होता है। नहीं तो आते ही नहीं। उसी समय कुछ चावल मंझले और संझले भाइयों ने दे दिया तो ले लिया नहीं तो कुछ कहा भी नहीं। रही बात मेरी तो उनसे भी भिन्न है। मैं घर से कुछ नहीं लाता हूं। इसलिए पत्नी के ताने भी अक्सर सुनने को मिलते रहते हैं। तत्काल मैंने फोन लगाया, उसी नंबर पर और भाभी से बात की कि पूरी बात बताइए न ! आखिर वह ऐसा क्यों कर रहा है ? वह मुकेश को ही क्यों मारना चाह रहा है ?" भाभी ने कहना शुरू किया कि "मुनी जी को खाने-पीने के लिए रुपया चाहिए। वह भैया से रुपए मांग रहा था। वह कह रहा था कि यह जो पोस्ट ऑफिस है। इसका भी बंटवारा नहीं हुआ है। इसके लिए मुझे किराया चाहिए। नहीं दीजिएगा तो मैं ताला लगा दूंगा।" भैया ने कई बार उसे समझाया कि "यह सब तुमको समझना है तो अपने पिताजी से समझ लो। तुम तो हमारे पाटीदार भी नहीं हो।" लेकिन वह कुछ भी मानने को तैयार नहीं है। उसकी संगति गलत लड़कों के साथ हो गई है। दिन भर वह दलित-टोले में ही रहता है। वहीं खाता-पीता है। अभी कुछ ही दिन तो हुए हैं जब उसने अपने पिताजी को भी पीट दिया था। अपनी मां को तो हमेशा बुरा-भला कहते ही रहता है। उसकी मां अक्सर रुपए देते रहती है। जब नहीं देती है तो गाली-गलौज भी करने लगता है। इससे तो उसके माता-पिता भी परेशान हैं। इससे तंग आकर उसका बड़ा भाई घर छोड़कर बाहर चला गया है। उसने कहा है कि अपने परिवार को भी ले जाऊंगा। अंत में बार-बार यही कहते रहीं कि आप जल्दी आइए, नहीं तो उसके पिताजी से बात कीजिए। नहीं तो जीवन भर का कलंक आप के ऊपर लग जायेगा। मैं सोच में पड़ गया। क्या करूं, क्या न करूं ? इसी बीच मझले भैया को फोन लगा दिया। फोन उठाते ही उन्होंने कहा कि -" बोलो क्या समाचार है ? कैसे हो ? बच्चे कैसे हैं ? कोई बात है क्या ?" हमने कहा कि -"मुकेश की मम्मी ने फोन किया था कि मुनी जी मुकेश को मारने के लिए छत पर चढ़ गया था। हाथ में दाब भी लिये हुए था। संयोग ठीक था कि वह जगा हुआ था। रात में कुछ नहीं हुआ लेकिन हमेशा डर बना रहता है। वे सभी डरे-सहमे हैं।" मंझले भैया ने बताना शुरू किया - "बस इतना ही बताई है। आगे उसने कुछ नहीं कहा ?" हमने कहा कि " नहीं।" "तब सुनो, मैं बता रहा हूं - रात में क्या हुआ, नहीं हुआ - मुझे कुछ भी नहीं मालूम है। लेकिन जैसे ही सुबह हुई। सुबह में मुकेश, उसकी मां, पिताजी, बहन सब ने मिलकर मुनी जी को बहुत मारा। उसका माथा फट गया था। खून बहने लगा था। उसकी गलती थी। इसलिए हमने कुछ नहीं किया। पुलिस को भी नहीं बताया। मुझे लगा कि अब वह बचेगा नहीं। गांव के लड़कों ने मोटरसाइकिल से सदर अस्पताल आरा ले जाकर इलाज करवाया। लेकिन गांव के लड़कों को भी डरा दिया था कि मैं कह दूंगा कि इन्हीं लोगों ने मेरे साथ मारपीट किया है लेकिन वह बच गया।

आगे सुनो - उसके ऊपर भूत-प्रेत की छाया है। यही कारण है कि वह सब को परेशान करते रहता है। अभी हाल ही में उसने मुझे भी पीट दिया था। तुम्हारी भाभी को तो हमेशा गाली-गलौज करते रहता है। हम तो अपने आप घुट-घुटकर जीवन जी रहे हैं। दशहरा-दिवाली में पूजा-पाठ भी करवाया था।" "उसे समझाने की कोशिश क्यों नहीं करते हैं ?" मैंने कहा। फिर कहने लगे कि " वह सुनता किसी का नहीं है। उसके मन में जो आता है, वही करता है। जिस छत पर बिना सीढ़ी के नहीं चढ़ा जा सकता है। वह ईटों की खेड़ी पकड़कर चढ़ जाता है। उसमें पता नहीं कहां से अदृश्य शक्ति आ जाती है।" मैं एकाएक मुनि जी के बचपन में चला गया। जब वह बहुत छोटा था। अभी चलना भी नहीं सीखा था - तब के अनेक चित्र-छवि मानस पटल पर फिल्म की तरह चलने लगे। फिर बड़ा हुआ। उसके बचपन में जब भी पढ़ाई-लिखाई की बात आती, वह सोने का बहाना बनाता, कभी पेट दर्द का तो कभी कुछ का लेकिन वह बचपन से ही पढ़ना नहीं चाहता था। उस समय मैं गांव में ही रहकर कॉलेज में पढ़ रहा था। हमने भी उसे पढ़ाने का प्रयास किया था लेकिन सब व्यर्थ। किसी तरह वह नवमी-दशमी तक पहुंचा

लेकिन मैट्रिक नहीं पास कर पाया। मैंने अपनी चेतना को वापस लाया। मंझले भैया से कहा कि " यह सब क्या हो रहा है ? इससे तो गांव-समाज में हमारे घर की प्रतिष्ठा ही जा रही है। आप उनसे बड़े हैं। आप इसे ठीक से देखें, भविष्य में ऐसा न हो।" रात काफी हो चुकी थी। घर के सारे सदस्य सो चुके थे। मैंने भी सोने का प्रयास किया लेकिन नींद आ ही नहीं रही थी। अनमने ढंग से लगभग सो ही लिया था कि फोन की घंटी बजी। "हेलो ! भाभी बोलिए न !" मैंने कहा। भाभी ने कहा कि " मुनी जी के पिता जी से बात किए क्या ? उन्होंने क्या कहा ?" हमने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा कि" हां उनसे बात हो गई है। उन्होंने कहा है कि अब कुछ नहीं होगा।" इस पर कहने लगीं - " कैसे कुछ नहीं होगा। उनकी बात सुनता है क्या वह ? खैर, सब देख लीजिएगा और हां इधर 4 सालों से खेती नहीं हो रही है। खेतों में घास हो गए हैं। हम लोग भी चावल-गेहूं खरीदकर ही खाते हैं। वे लोग भी ऐसा ही करते हैं। पिछले साल तो भैया ने दूसरे से खेत लेकर खेती करवाया था तो खाने-भर अनाज हो गया था। यहां की स्थिति बहुत खराब हो गई है। मन में अनहोनी की आशंका बनी रहती है। जल्दी आइए, इसका स्थाई समाधान निकालिए।" " ठीक है भाभी,अब सो जाइए। मुझे भी जल्दी उठना पड़ता है।" मैंने कहा। उन्होंने कहा-" ठीक है। सब देख लीजिएगा।" उनके मन में जो डर था वह निकलने का नाम ही नहीं ले रहा था। उनकी बातों से बोलने के लहजे से साफ-साफ झलक रहा था कि वह काफी डरी हुई हैं। एक ही बेटा है, तीन बेटियां हैं, दो की शादी हो चुकी है। कब नींद आई, पता ही न चला।

मैं अक्सर गांव जाता नहीं हूं। कभी कोई काम हुआ तो जाना हुआ, नहीं तो वर्षों ऐसे ही गुजर जाते हैं लेकिन इस बार जाना हुआ। गांव गया तो दोनों भाइयों से बात किया लेकिन अलग-अलग। दोनों साथ-साथ बैठने को तैयार नहीं। खेतों में गया था। खेत भी अब सिमट रही थी - बरसों खेती नहीं होने के कारण। मंझले और संझले भाइयों से कहा कि खेत चारों तरफ से सिकुड़ते जा रहे हैं। बरसों से खेती नहीं हुई है, इसी कारण ऐसा हो रहा है। चचेरे भाई ने कहा कि तुम आए हो तो इन्हें समझाओ। ये दोनों ऐसे ही कट-मर जाएंगे। इन दोनों में बातचीत वर्षों से बंद है। खेत भी परती ही छोड़ दिए हैं। कुछ स्थाई उपाय करके ही जाना। मैंने कहा कि " ये दोनों साथ बैठें तब न ! लेकिन दोनों बैठते ही नहीं, एक के पास जाता हूं तो दूसरे की शिकायत और दूसरे के पास जाता हूं तो उनकी शिकायत।" उन्होंने कहना शुरू किया कि "मैं जब सीआरपीएफ से अवकाश ग्रहण कर गांव आया तो थोड़ी-सी खेत ले ली थी। उसी से खाने भर अनाज उगा लेता हूं। सालों भर किसी चीज की कमी नहीं होती है।" "ठीक है भैया !" मैंने कहा तो भाभी ने आकर कहा कि "चाय पीकर जाएगा। चाय बना रही हूं।" दोनों भाइयों से बातचीत करके हमने इस बार की खेती का जिम्मा संझले भैया को दे दिया। उन्होंने तो पहले ना-नुकुर किया। फिर तैयार हो गए। मंझले भैया से भी हमने पूछा था तो उन्होंने कहा कि हमसे नहीं होगा। लगभग एक सप्ताह रहने के बाद मैं पुन: वापस आ गया। आकर अपने कामों में लग गया। एक महीना भी नहीं हुआ था कि भाभी का फोन आया। उन्होंने कहा कि "भैया खेती नहीं करेंगे। भैया ने कुछ खेतों को बंटाई पर दे दिया था जो दूर का था। बाकी अपने करने के लिए धान का बिचड़ा डाल दिए थे। लेकिन मुनी जी ने जिन खेतों को भैया को दिया था, उनसे कह दिया है कि आप लोग खेती छोड़ दीजिए, नहीं तो फसल तैयार होने पर खेतों में आग लगा दूंगा। आप लोग फसल प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इसलिए इस बार भी खेती नहीं होगी।" हमने कहा कि " ठीक है। मैं मुनि जी के पिता से बात करता हूं तो फिर आपको फोन करता हूं। अभी मैं स्कूल में हूं।" घर जाने के बाद मंझले भईया यानी मुनि जी के पिता से हमने फोन पर बात की तो उन्होंने कहा कि "हां मुनि जी ने ऐसा कहा था लेकिन उसे समझाया कि इसमें से चारों भाइयों को बांटा जाएगा तो वह तैयार हो गया। उसने जिनसे कहा था कि खेती नहीं करने दूंगा। उनसे जाकर कह भी दिया है। बोल दीजिए कि वे खेती करें। अब कुछ नहीं करेगा।" लेकिन संझली भाभी खेती नहीं करने के पक्ष में थी, किसी अनहोनी घटना की आशंका से। मेरे लाख प्रयास करने के बाद भी इस बार भी खेती नहीं की जा सकी। खेत परती ही रह गई। मुझे लगा था कि इस बार तो खेती हो ही जाएगी लेकिन संभव नहीं हो सका। एक दिन स्वप्न में देखता हूं कि खेतों में लंबे-लंबे पौधे उग आए हैं जो मुझे चिढ़ा रहे हैं। कह रहे हैं - देखो-देखो मेरा ही साम्राज्य है यहां। तुम्हारी मेहनत काम नहीं आई। अब तो मेरे साम्राज्य का विस्तार ही हो रहा है। बड़ा आया था खेती करवाने,करवा लिया न खेती ! दूसरी ओर देखता हूं कि खेतों की मेड़ आपस में सिकुड़ गई है और यही स्थिति रही तो कुछ ही वर्षों में खेतों का अस्तित्व ही मिट जायेगा। मेरी नींद खुल चुकी थी। आंखें खुली तो अपने को पसीने से लथपथ पाया। सोचने लगा - वाकई ऐसी स्थिति आ गई तो क्या होगा ? जिन खेतों का बंटवारा मेरे पिताजी एवं चाचा जी में आज तक नहीं हुआ सिर्फ पंचायतों द्वारा बांट दिया गया था। अब वही खेत बंजर हो गए हैं और बार-बार मुझे चिढ़ा रहे हैं, अपने पुराने दिनों की आस में ! क्या यह संभव है कि खेतों के पुराने दिन लौटेंगे ! इनमें पुनः फसल लहलहायेगी ? भाइयों में जो दरार पड़ गई है - वह पट पाएगी ? बेरंग हो चुके रिश्तो में रंग भर पाएगा ? बहुत सारे प्रश्न हैं जिनके उत्तर अनुत्तरित ही हैं...!

*पुराना शिव मंदिर, बुध बाजार, गिद्दी - ए, जिला – हजारीबाग, झारखंड।

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है।

- चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

हिन्दी देश की एकता की ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

- श्रीमती इंदिरा गांधी

बाल कहानी

तितली भौरा और मधुमक्खी

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान*

एक फूलों का बागीचा था उसमें तरह-तरह के फूलों के पेड़ लगे हुए थे। बागीचे में गुलाब चमेली अड़हुल गेंदा रातरानी कन इल हरसिंगार आदि के पेड़ थे। बागीचे में एक तितली और एक भौरा रहते थे। दोनों में गहरी दोस्ती थी। दोनों दिन भर फूलों का रस पीते और रात में फूल के पेड़ पर सो जाते थे। पुरे बागीचे पर तितली और भौरा का अधिकार था। एक रोज कहीं से एक मधुमक्खी बागीचे में घुस आई और बीना तितली और भौरा से पूछे फूलों का रस इकट्ठा करने लगी। तभी भौरे और तितली की नजर मधुमक्खी पर जा पड़ी। दोनों मधुमक्खी के पास पहुँच कर पूछ पड़े, तुम किसके इजाजत से फूलों का रस इकट्ठा कर रही हो, तुमको पता नहीं यह बागीचा हम दोनों का है। हमसे इजाजत लिए बीना कोई मेरे बाग में नहीं घुस सकता है। तितली और भौरा की बात सुनकर मधुमक्खी बोली हमसे भूल हो गई हमें क्षमा कर दो आज के बाद मैं तुम्हारे इस फूलों के बाग में नहीं आऊंगी। मधुमक्खी की बात सुनकर तितली और भौरे को उसपर दया आ गई और कहने लगे अब तुम मेरे बाग में रोज आना और फूलों का रस ले जाना। दोनों की इजाजत पाकर मधुमक्खी बहुत खुश हुई और दोनों को धन्यवाद देने लगी। कुछ दिनों में मधुमक्खी भी तितली और भौरे की दोस्त बन गई। एक रोज कहीं से एक छिपकली बगीचे में घुस आई और वह तितली और भौरे को खाने के लिए इस पेड़ से उस पेड़ पर दौड़ाने लगी। छिपकली के आ जाने से तितली और भौरा परेशान हो गए और अपनी जान बचाने के लिए मधुमक्खी के पास जा पहुंचे। तितली और भौरे ने अपनी सारी परेशानी मधुमक्खी से कह सुनाई। दोनों की बात सुनकर मधुमक्खी बोली तुम्हें अब डरने की कोई बात नहीं है। मेरे आम के पेड़ पर एक चील का जोड़ा रहता है। मैं चील से कहकर तुम दोनों को छिपकली से छुटकारा दिला सकती हूँ। इतना कहकर मधुमक्खी चील के पास पहुंच कर सारी बात कह सुनाई। मधुमक्खी की बात सुनते ही चील को छिपकली पर बहुत गुस्सा आया और तुरंत मदद के लिए तैयार हो गया। तिलली और भौरे के साथ चील भी बागीचे की ओर चल पड़ा। बागीचे में पहुंचते ही छिपकली चील को देखकर डर गई और भागने लगी। तभी चील ने उड़कर छिपकली को पकड़कर तुरंत उसे खा गया। छिपकली को खाने के बाद चील बोला अब तुम दोनों को डरने की कोई जरूरत नहीं है। तुम पर जब भी कोई मुसीबत आए तो हमारे पास चले आना। मैं हमेशा मदद करने को तैयार रहूंगा। छिपकली से छुटकारा दिलाने पर तितली और भौरे ने चील को बहुत धन्यवाद दिया। चील खुशी-खुशी वहां से चल दिया। अगले दिन से तितली भौरा और मधुमक्खी पहले की तरह बागीचे में रहने लगे और फूलों का रस पीने लगे।

*गल्ला मंडी गोला बाजार, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश)।

ग़ज़ल

ग़ज़ल

अशोक 'अंजुम'*

तार रेशम के जैसी नज़र रेशमी
तुम मिले, हो गई है उमर रेशमी
इश्क का यूँ हुआ है असर रेशमी
वक्त पहले न था इस कदर रेशमी
सामने बर्थ पर नाज़नीं आ गई
हो चला लो हमारा सफ़र रेशमी
वो झुकी सी नज़र मिल गई इस कदर
दिल में टुक से उठी इक लहर रेशमी
तेरे कूचे का आलम अजब है सनम
बात करता यहाँ हर बशर रेशमी
है मज़ा तो तभी जब कि होने लगें
मैं इधर रेशमी, वो उधर रेशमी
उनकी गलियों से जब भी गुज़रना हुआ
ख़्वाब आए मुझे रात-भर रेशमी

उनसे मिलकर कोई रंज रहता नहीं
उनको आते हैं 'अंजुम' हुनर रेशमी
चढ़ाव कम था तो उस पर उतार हल्का था
हमें बचना ही था ग़र्दो-गुबार हल्का था
उसे आना तो था पर रहगुजर से लौट गया
वो तेरी चाह तेरा इंतज़ार हल्का था
मुझे मालूम था ये साथ निभ न पाएगा
लगाव कम था कि जो था करार हल्का था
इसलिए हमने कभी तुझसे तगादा न किया
जिंदगी तुझ पे हमारा उधार हल्का था
लाजमी इसका उतरना है पता था मुझको
गो तुझ पे इश्क का जो था बुखार हल्का था
किस तरह मुल्क अरे तुझको तरक्की मिलती
बोझ भारी था मगर हर कहार हल्का था
तेरे हमले से बता कैसे बच गया 'अंजुम'
मौत बोली कि वो अपना शिकार हल्का था

*स्ट्रीट-2, चन्द्र विहार कॉलोनी (नगला डालचंद), क़्वारसी बाईपास, अलीगढ़ (उ.प्र.)

लघु कहानी

पर्दे

अशोक कुमार ढोरिया*

"सुन रहे हो क्या ? कितनी बार कह चुकी कि पर्दे ले आओ। घर में कितनी धूल जम जाती है। सफाई करते-करते मैं तो परेशान हो गई हूँ। " 'अभी आ रहा हूँ। ये दो-चार पौधे लगा देता हूँ।' "पागलों जैसी हरकत करते रहते हो । पौधे.... पौधे.... पौधे..... कितने पौधे लगाओगे ? पौधे लगाते-लगाते आपकी जिंदगी बीत गई है। जब भी देखो पौधे ....." 'अब तो दस बज गए हैं। कोई साधन भी नहीं मिलेगा।' "दो किलोमीटर दूर तो है ही। पैदल चल पड़ते हैं।" मुश्किल से आधी दूरी तय की हुई होगी। "ओह ! ये गर्मी का कहर। सारे कपड़े पसीने में तर हो गए हैं। आओ इस पेड़ के नीचे बैठकर आराम करते हैं। " 'अब तो कुछ राहत मिली होगी छाया में बैठकर।' "अब दिल को शांति मिली है। यदि ये पेड़ नहीं होता, आज तो प्राण ही निकल जाते।" गुप्ता जी मन-ही-मन सोच रहे हैं - शायद अक्ल पर पड़े पर्दे उठने वाले हैं। इसी बीच----- "ये पौधों की नर्सरी किधर है ?" 'आओ मेरे साथ ले चलता हूँ। ' पौधों की नर्सरी देख सुनन्दा ने कपड़े के पर्दे नहीं बल्कि जीवन रक्षक पर्दे ---- *पौधे* खरीदने का मन बना लिया था। जो सुनन्दा की अक्ल पर जमी वर्षों पुरानी धूल को .....

*मुबारिकपुर (झज्जर), हरियाणा।

नई माँ

विनोद प्रसाद*

पिताजी की अस्वस्थता का समाचार जैसे ही नवीन को मिला वह बेचैन हो गया। दो दिन पहले ही उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। इतने विलम्ब से सूचना मिलने के कारण वह दुखी भी था और गुस्से में भी। मालूम हुआ कि वे अपोलो अस्पताल में एडमिट हैं। उसने तुरंत आफिस से छुट्टी ली और सीधा अस्पताल के लिए निकल गया। रास्ते भर वह पिछली घटनाओं को याद करता रहा। माँ की मृत्यु के बाद पिताजी अक्सर माँ की यादों में खोए रहते थे। शायद छुपकर रोते भी थे। नवीन सब कुछ देख-समझ कर भी कुछ नहीं कर सकता था। उम्र के इस पड़ाव पर जब उन्हें साथी की जरूरत थी, तब वे अकेले रह गए। अचानक एक दिन पिताजी ने विधवा शीला आंटी से मंदिर में शादी कर ली। उनके बच्चे विदेश में बस चुके थे और वे अकेली रह रही थीं। चाहते हुए भी वह अपनी नई माँ को स्वीकारने की स्थिति में नहीं था। सामाजिक उपहास की संभावना देखते हुए नवीन उनसे अलग होकर पास के ही दूसरे शहर में किराए का मकान लेकर रहने लगा। अस्पताल में जैसे ही वह पिताजी के कमरे में गया, डॉक्टर उसके पिता की जांच ही कर रहे थे। "डॉक्टर, कैसी तबीयत है पिताजी की ?" नवीन के बारे में जानकारी मिलने पर डॉक्टर ने उससे कहा- "आपको अपने पिताजी को देखने की फुर्सत आज मिली है। आपको पता है, आपके पिताजी को दिल का जबर्दस्त दौरा पड़ा था। यदि आपकी माताजी कुछ देर और इन्हें अस्पताल नहीं लातीं, तब शायद इन्हें बचा पाना बहुत मुश्किल होता। रात भर जागकर आपकी माताजी ने इनकी सेवा की है। इनकी दुआओं से ही आपके पिताजी को नया जीवन मिला है।" डॉक्टर तो अनजाने में कह गये लेकिन नई माँ के प्रति नवीन का सिर श्रद्धा से झुक गया।

*सरस्वती विहार, अम्बेडकर पथ, पो.-बी.भी.कॉलेज, पटना।

रेशम वाणी

झुग्गी बस्ती की कहानी

देवांशु पाल*

आलोक जिस चाय की गुमटी पर लकड़ी के बेंच पर बैठकर चाय पी रहा था, ठीक उसके सामने चौड़ी सड़क के उस पार शहर के नामी-गिरामी ज्वेलरी शॉप के मालिक प्रेम कुमार का नया तीन मंजिला ज्वेलरी शॉप का उद्घाटन होने जा रहा है। शाम का वक्त है, अंधेरा हो चुका है। सड़क बत्तियों के बीच यह इलाका आज कुछ ज्यादा ही चमक-दमक रहा है। तीन मंजिला शॉप को रंगीन झालरों से सजाया गया है। शॉप के सामने का हिस्सा काँच की दीवारों से बनी है। मिशाल शो-केस को अत्याधुनिक ज्वेलरी से सजाया गया है। ग्राहकों के इन्टरटेंट के लिए ड्रिंक्स व नाश्ते की व्यवस्था की गयी है। बाहर नीचे मुख्य सड़क तक गलीचा बिछी हुई है। उद्घाटन के लिए प्रेम कुमार ने दिल्ली से लोकप्रिय कैबिनेट मंत्री त्रिलोकी नाथ बुंदेला जी को बुलाया है जिनके कर-कमलों से आज इस शॉप का उद्घाटन होने जा रहा है जिसकी खबर शहर के सभी लोगों को मालूम है। आज के सभी दैनिक अखबारों के मुख्य पृष्ठ पर उद्घाटन की खबर छपी है। आलोक ने भी देखा है सुबह अखबार पढ़ते समय। यह खबर देखते ही आलोक का सारा शरीर गुस्से से तमतमा उठा। घृणा और गुस्से से उसने अपनी आँखें कुछ पल के लिए बन्द कर ली। शाम होते ही वह स्वयं को रोक नहीं सका और वह यहाँ चला आया। इस इलाके से आलोक की वर्षों पुरानी यादें जुड़ी है। छः साल पुरानी कहानी आज फिर से एकबार उसके आँखों के सामने किसी सिनेमा की तरह उतर आने लगा है। उस वक्त चाय की गुमटी पर दो-चार लोग ही थे। आलोक ने चाय बेचने वाले से उसका नाम पूछा-लखन श्रीवास "चाय वाले ने झट से कहा। तुम इस जगह पर कितने सालों से दुकान लगा रहे हो....."आलोक ने उत्सुकता से पूछा। तीन साल...चाय वाले ने सहज ही जवाब दिया। उस समय यह शॉप बन ही रही होगी...."आलोक ने नया शॉपिंग मॉल की तरफ देखकर कहा.....तुम्हें पता नहीं पहले यह जमीन एकदम वीरान थी। यह जमीन शहर के नामी ज्वेलरी शॉप के मालिक प्रेम कुमार का था...."। फिर उसकी तरफ देखकर इस चमचमाती ज्वेलरी शॉप की काली-अँधेरी रात की बरसों पुरानी कहानी सुनाने लगा। शहर से करीब आठ-दस किलोमीटर की दूरी पर रेलवे पटरी के किनारे प्रेम कुमार की यह जमीन बहुत सालों तक खाली पड़ी थी। गड्ढा होने के कारण यहाँ बरसात में बारिश का पानी जमा हो जाता था और तब यह इलाका तालाब की तरह नजर आने लगता था। समय के साथ-साथ शहर की जनसंख्या में वृद्धि होने लगी, लोग दूसरे प्रदेशों से मजदूरी व कमाने खाने के लिए शहर में आने लगे। कुछ ही बरसों में धीरे-धीरे इस वीरान जगह पर लोग झुग्गी-झोपड़ी बनाकर रहने लगे थे और देखते-ही-देखते सात-आठ सालों में यह पूरा इलाका झुग्गी-बस्ती में तब्दील हो गया। शहर को स्मार्ट सिटी बनाने की सरकार की घोषणा के बाद प्रेम कुमार को अपनी इस जमीन की कीमत समझ में आई। उन्होंने इस जमीन पर स्वर्गीय पिता के नाम नया ज्वेलरी शॉप खोलने की योजना बनाई। शहर में प्रेम कुमार की विशाल ज्वेलरी की दुकान है। उनकी पहचान राजनीतिक लोगों से है। कई मंत्रियों व विधायकों के साथ उठना-बैठना भी है लेकिन जमीन पर से झुग्गी वासियों को हटाना प्रेम कुमार के बस में नहीं था। अच्छी खासी मशक्कत करने के बाद ही उसे सरकारी कार्यालय से बस्ती वालों को खाली करने का आदेश मिला। आदेश निकलने की खबर बस्ती में आग की तरह फैल गयी। खबर सुनते ही झुग्गी बस्ती वालों के बीच भय और आतंक का माहौल दिखने लगे। वे लोग समझ नहीं पा रहे थे कि बस्ती को छोड़कर कहाँ जाएँ। शहर में कहीं कोई जगह खाली नहीं बची है। यदि है भी तो वहाँ कोई झोपड़ी बनाने नहीं देगा। देश में स्वच्छ भारत अभियान चलाया जा रहा है। शहर में किसी भी तरह की गंदगी नगर प्रशासन बर्दाश्त नहीं करेगा। सरकार की नजर में झुग्गी-बस्ती, गंदगी फैलाने की काम करती है। बस्ती वाले शहर छोड़कर और कहीं अन्यत्र जा नहीं सकते, उनकी रोजी-रोटी का सवाल जो जुड़ा था। बस्ती के ज्यादातर लोग मजदूरी करते थे, कुछ लोग ठेले पर सब्जियां बेचते थे, कुछ बच्चों के खिलौने, कुछ लोग औरतों के श्रृंगार के सामान बेचते थे, किसी की चाय की दुकान थी तो किसी का नाश्ते का ठेला। कुछ लोग रेलवे स्टेशन पर कुली व हमाली करते थे, कुछ लोग किराए का ऑटो चलाते थे, कुछ लोग रिक्शा चलाते थे। औरतें भी मजदूरी करने शहर जाती थी। बूढ़े, बीमार और बच्चे ही बस्ती में रहते थे, बाकी सभी सुबह से ही काम पर निकल जाते हैं और शाम के बाद ही लौटते थे। आदेश निकलने के दूसरे दिन प्रशासन के लोग बस्ती पहुँचकर मुख्य मार्ग पर लगे बिजली के खंभे पर सूचना चिपका कर चले गए थे। सूचना चिपका होने की खबर मिलते ही चारों तरफ लोगों में हड़कंप मच गया। उनके लिए यह समय किसी भयानक संकट काल से कम नहीं था। सूचना चिपका होने की जानकारी जावेद ने मोबाइल पर मुझे दी। जावेद बस्ती का सबसे ज्यादा पढ़ा-लिखा युवक था, वह बारहवीं पास था। वह अपने अब्बाजान के साथ रफीक के मोटर गैरेज में काम करता था। चौबीस साल का ऊंचे कद, सांवला रंग, गठीले बदन का जावेद जितना मेहनती था उतना ही हिम्मत वाला भी था। वह पुलिस वालों से नहीं डरता। बस्ती वाले उसकी बहादुरी पर भरोसा करते थे। जावेद का साहस व जज्बा देखकर मैनें उसे बस्ती का नेता बना दिया। जावेद बस्ती में अपनी अधेड़ उम्र की अम्मीजान के साथ रहता था। एक दिन उसके अब्बाजान गैरेज से सामान चुराकर भाग गए थे। पुलिस वाले उन्हें ढूँढने बस्ती में आए थे। उस दिन उसकी अम्मीजान बहुत रोई थी। इस घटना को चार साल हो गए, जावेद के अब्बाजान का न कोई समाचार मिला और न ही कोई फोन। जावेद की अम्मी उन्हें याद कर देहरी पर बैठी रोती रहती थी। जावेद ने फोन पर मुझे तख्ती पर लिखा आदेश पढ़कर सुनाया था। "सभी बस्ती वालों को यह सलाह दी जाती है कि प्रेम कुमार की जमीन पर अवैध कब्जा कर झोपड़ी बनाकर वर्षो से रह रहें लोग बस्ती छोड़कर दीवाली से पूर्व अन्यत्र चले जाएँ अन्यथा प्रशासन के आदेश की अवहेलना करने वालों पर सख्ती से कार्रवाई की जाएगी। जरूरत पड़ने पर झोपड़ियों को बुल्डोजर से तोड़ा जा सकता है। अगर किसी के द्वारा काम में बाधा डालने की कोशिश की गई तो उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई कर उसे जेल भेज दिया जाएगा..."फोन पर

रेशम वाणी

सूचना चिपका होने की खबर मिलते ही मैं बस्ती जा पहुँचा। जावेद और झुग्गी वालों की बातें सुनकर मैंने कुछ आक्रामक तेवर के साथ उन्हें यह कहकर समझाने लगे-"बिजली के खंभे पर चिपकाए किए गए कानून की भाषा में लिखे हुए इन काले अक्षरों से तुम लोक मत डरा करो... प्रेम कुमार की धमकी व गुंडा-गर्दी से हम डरने वाले नहीं हैं...और न ही हम घबराने वाले हैं। सरकार का दिया हुआ अपना राशन कार्ड तुम सबके पास है। बिजली का बिल तुम लोग हर माह जमा करते हो...वोटर लिस्ट में तुम लोगों का नाम है...फिर क्यों डरते हो...प्रेम कुमार जैसे लोग जबर्दस्ती इस जमीन को हड़पना चाहते हैं। इस जमीन पर अपना नया कारोबार शुरू करना चाहते हैं...उनकी इस जबर्दस्ती को हम बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करेंगे...हम उन्हें मुँहतोड़ जवाब देंगे...।" मेरे समझाने पर बस्ती के लोगों में थोड़ी हिम्मत आई, दरअसल बस्ती के लोग मुझपर बहुत भरोसा करते थे। वे लोग मुझे अपना नेता मानते हैं। 6-7 सालों से आलोक बस्ती वालों का नेतृत्व करता आ रहा है। हर मुश्किल व संकट के समय मैं उनके बीच उनके साथ खड़ा होता हूँ। चुनाव के समय बस्ती वालों से मैं अपने उम्मीदवार के लिए वोट माँगने आया था। मैं असंगठित क्षेत्रों के मजदूर कामगार लोगों तथा श्रमिक व किसानों के हितों के लिए लड़ने वाला मजदूर नेता हूँ। मैं कई राष्ट्रीय श्रमिक संगठनों से भी जुड़ा हूँ। शहर में मैंने अपनी एक अलग संस्था खोल रखी है। संस्था में लगभग डेढ़-दो हजार सदस्य हैं, जिनमें लेखक समुदाय के लोग, पत्रकार बंधु, अधिवक्ता एवं महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं शामिल हैं। आलोक समाज व लोगों के हित में काम करता है। सरकार की गलत नीतियों व जन-विरोधी कार्य के खिलाफ लड़ता है। विज्ञान में स्नातक होने के बावजूद मैं आज भी बेरोजगार हूँ। कॉलेज के दिनों से ही मैं राजनीति के क्षेत्र में सक्रिय रहा है। मेरे पिता वरिष्ठ पत्रकार हैं, आँखों की रोशनी कम होने की वजह से चार सालों से वे घर पर ही रहते हैं। मेरी एक बड़ी बहन है। शादी के उम्र, सरकारी स्कूल में शिक्षिका है। परिवार का खर्च बहन की तनख्वाह से चलता है। उस दिन शाम को मैंने सभी झुग्गी वालों को यह कहकर समझाया था कि दूसरे दिन सुबह से धरने पर बैठना है। 'दीवाली आने में अभी कुछ दिन शेष रह गए हैं। हम लोग कल सुबह से इसी जगह पर धरने पर बैठेंगे... देखते हैं हमें दीवाली से पहले पुलिस प्रशासन इस जमीन से कैसे हटाता है...दीवाली के बाद हम सभी झुग्गी वाले जुलूस निकालकर कलेक्टर के पास ज्ञापन सौंपने जाएंगे... उनसे निवेदन करेंगे कि वे हम बस्ती वालों को इस जमीन से बेदखल न करें... फिर भी बात न बनी तो हमें कानून का सहारा लेना होगा...और इस कार्रवाई पर रोक लगानी होगी...। उस दिन मेरी बातों से सारे झुग्गी वालों ने सहमत होकर एक साथ कसम खाई थी कि 'हम किसी भी स्थिति में इस जमीन को प्रेम कुमार को हड़पने नहीं देंगे...चाहे हमारी जान ही क्यूँ न चली जाए...' इस तरह दूसरे दिन सुबह से बिजली खम्भे के पास धरने पर बैठ गये। धरने पर बैठने के चार-छः घण्टे के बाद पुलिस सिपाही धरना स्थल पर पहुँचकर धरने पर बैठे लोगों को डराने-धमकाने लगे। "दीवाली के पहले बस्ती छोड़कर नहीं गए तो झोपड़ियों को बुलडोजर से तोड़ देगें और खदेड़कर भगा दिया जाएगा...' दो दिन के बाद यानी कि धरने के पन्द्रहवें दिन दीवाली के दिन सुबह से ही बस्ती में खुशी का माहौल था। सभी अपनी झोपड़ी के बाहर साफ-सफाई में जुटे थे। शाम होते ही बच्चे व औरतें नए कपड़ों में दिखाई देने लगे थे। औरतें पूजा-पाठ में व्यस्त थी, बच्चे पटाखे फोड़ने में तो पुरुष जुए और शराब में मस्त होने लगे थे। सभी झुग्गियों को दिया-बाती से सजाया गया था। चारों ओर होहल्ला, उल्लास और पटाखों की गूंज थी। तभी एकाएक आसमान की ओर काला धुआँ उठता देख लोग चीखने-चिल्लाने लगे। लोगों को यह समझ में नहीं आ रहा था कि यह धुआँ कहाँ और किधर से निकल रहा है। तभी किसी ने जोर से कहा-" मंगलू की झोपड़ी में किसी ने आग लगा दी है..." यह सुनकर सभी मंगलू की झोपड़ी की तरफ भागने लगे। पास गए तो देखा-मंगलू की झोपड़ी के अलावा आस-पास के चार-छः झोपडियों को भी आग निगलने लगा था। यह देखकर सभी लोग डरने लगे थे। आग लगने की खबर बस्ती में फैल गयी थी। देखते-ही-देखते धुआँ आसमान में फैलने लगा था, भीड़ में किसी ने चीखकर कहा-'आलोक बाबू को जल्दी से खबर करो... कुछ ही देर में झुग्गी वालों को यह बात समझ में आ गई कि यह आग किसी ने जानबूझकर लगाई है। मेरे के पहुँचने तक आग कई झोपड़ियों को निगल चुकी थी। चारों-तरफ भागमभाग मची थी। लोग अपना जरूरी सामान कंधे पर लादकर मुख्य सड़क की तरफ भागने लगे थे। कुछ लोग बाल्टी में पानी भरकर आग बुझाने में लगे थे। इस भीषण दृश्य को देखकर मैं अचंभित रह गया था, पास ही खड़े लोगों की तरफ देखकर ऊँची आवाज में कहा-'जावेद को बुलाओ...वह कहाँ है...कहीं दिख नहीं रहा है...' तभी किसी के कहा-'जावेद झुग्गी में नहीं है...' 'ढूंढो उसे, वह यहीं-कहीं होगा...'-मैंने चिल्लाए. 'झुग्गी में उसकी अम्मी भी नहीं है...'-भीड़ में से किसी ने कहा 'तो कहाँ चला गया वह...' मैं बौखला उठा। 'मैंने उसे कंधे पर सामान लादे मुख्य मार्ग की तरफ भागते देखा है...' भीड़ में किसी ने कहा... "वह जावेद नहीं कोई और होगा, तुमने उसे पहचानने में भूल की होगी..." मैंने हाँफते हुए कहा। 'वह जावेद ही है... उसने हमें धोखा दिया है...' किसी ने गुस्से से चीखकर कहा... 'बस करो, चुप हो जाओ...जावेद हमारा साथी है...वो कभी हमें छोड़कर नहीं जाएगा...वह जरूर किसी मुसीबत में फँसा होगा...ढूंढो उसे...' मैंने विश्वास से कहा था। कुछ लोग जावेद की झुग्गी की तरफ भागे। आग की लपटें तेज होने लगी थी, बीस-पच्चीस झोपड़ियां जलकर राख हो गई थीं। मैं घबराया हुआ सा था। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि इस वक्त क्या करे, किससे सहायता माँगे। फायर ब्रिगेड वालों को फोन किए काफी समय हो गया है, पर वे लोग अभी तक नहीं पहुँचे और न ही पुलिस प्रशासन के लोग... जावेद झोपड़ी में नहीं है...झोपड़ी में उसकी अम्मी भी नहीं...झोपड़ी पूरा खाली है...वहाँ कोई सामान नहीं है...'- एक कम उम्र के युवा ने हाँफते हुए कहा। 'जावेद गद्दार है...उसने हम लोगों को धोखा दिया है...वह बस्ती छोड़कर भाग गया है...'- पास खड़े युवक आक्रोश से कहा...- 'हाँ...हाँ जावेद गद्दार है...उसी ने हमारी बस्ती में आग लगाई है...'- भीड़ में खड़े लोग एक साथ चिल्लाने लगे...' 'यह सुनकर मैं बौखला उठा। 'जावेद प्रेम कुमार का आदमी नहीं हो सकता...' पास खड़े आदमी ने ऊँची आवाज में मेरी तरफ देखकर कहा-'आलोक बाबू, प्रेम कुमार के पास पैसा है...उसने जावेद को खरीद लिया है 20-25 हजार रुपए में...उसका अब्बा भी चोर था ही, उसका बेटा भी गद्दार निकला...' -'प्रेम कुमार के हाथों बिक गया होगा...' भीड़ में किसी ने जोर से हँसकर कहा...मेरा सिर चकराने लगा, धुएँ के मारे आँखें जलने लगीं। उन्हें यह सोचकर आश्चर्य हो रहा था कि क्या जावेद सचमुच ऐसा कर सकता है। क्या प्रेम कुमार पैसे से इतना घिनौना काम करा सकता है। एकाएक मुझको लगा यह लोग गलत कह रहे हैं। जावेद इतना घटिया इंसान नहीं है। बरसों उसने झुग्गी वालों का साथ दिया है। एक पल के लिए आलोक को इतना गुस्सा आया कि मैं उस आदमी को, जिसने जावेद को गद्दार कहा उसे पकड़कर आग में झोंक दूँ। दूसरे ही पल उसने एक बुजुर्ग को कहते सुना-ऐसे हजारों जावेद को प्रेम कुमार जैसे करोड़पति आदमी

पैसे से खरीद सकते हैं और उसके बदले में कोई घिनौना काम करा सकते हैं...' यह सुनकर मैं चुप्पी साध गया था। मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि कौन सही है और कौन गलत है। तभी पुलिस की गाड़ी और दमकल की घंटियों की आवाज सुनाई पड़ी। बस्ती की ज्यादातर झोपड़ियां राख में तब्दील हो चुकी थीं। आसमान की तरफ देखा। आग की लपटें अमावस के अंधेरे को चीरती हुई आसमान की तरफ लपक रही थीं। बस्ती के लोग बेतहाशा मुख्य मार्ग की तरफ भाग रहे थे जिसमें बूढ़े, बच्चे और औरतें सभी शामिल थे। मैं खुद को असहाय समझने लगा। मेरे अंदर आक्रोश की जो आग धधक रही थी वह धीरे-धीरे बुझने लगी थी। मैं खुद को किसी राख के ढेर में तब्दील होता महसूस करने लगा था। सुबह सूर्य का उजाला उस जमीन पर पड़ने से पहले ही बस्ती के सारी झोपड़ियां आग में स्वाह हो चुका था। कुछ दिन के पश्चात् प्रेम कुमार के आदमी इस जमीन को बुलडोजर से साफ कर मुख्य सड़क के किनारे प्रेम कुमार के नाम का एक बड़ा बोर्ड लगवा दिए थे। बस्ती के सारे लोग उस रात कहा चले गये मुझे कुछ पता नहीं चला, इस घटना को मैं एक हादसा समझकर धीरे-धीरे भूलने लगा था। आज अचानक अखबार में छपी खबर को देखकर मुझे वर्षों पुरानी धरने की बात व उस अंधेरी रात की बात याद आने लगा। चाय की अंतिम घूट पीकर मैं उठ खड़ा हुआ, सामने चमचमाती प्रेम कुमार की ज्वेलरी शॉप में मेहमानों की भीड़ बढ़ने लगी थी।

*रायल टाऊन, अपोजिट गुलाब नगर, मोवका-495006, बिलासपुर (छ.ग.), मोबाइल नं. 9907126350

कविता

चंचल सपने भोले हैं

डॉ.वीरेन्द्र प्रसाद*

चंचल सपने भोले हैं
जिनको पलकों पे तोले हैं
देकर सौरभ पंख इसे
दूर क्षितिज तक पहुंचाना
सांझ ढ़ले तब आना।

मोती संभाले मोम सीप
आये शूल-फूल समीप
देकर विद्युत चरण इसे
चिर उर की राह बताना
सांझ ढ़ले तब आना।

क्षण उड़ते, पुलक भरे
ज्वाला चुंबन से निखरे
देकर चैतन्य प्राण इसे
सुधि सुरभित धाम बसाना
सांझ ढ़ले तब आना।

अन्य होंगे चरण हारे
शूलमय हो पंथ सारे
देकर समिधा तन-मन इसे
इतिहास को अजर बनाना
सांझ ढ़ले, तब आना।

अमिट मसि के चितेरे
शून्य में भी हो बसेरे
छूकर बंधन की बांध इसे
घुलने का वर दे जाना
सांझ ढ़ले तब आना।

*एस. के. राय, ई लेन, इंद्रपुरी, सरिस्ताबाद, गर्दनीबाग पटना, बिहार 800001

बिना मातृभाषा के हिन्दी साहित्य भी वीरान रहेगा, हिन्दी रहेगी तभी तो हिन्दुतान रहेगा।

जो भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है, सब की एकता दिखाती है, हिन्दी भाषा देश की शान बढ़ाती है।

ग़ज़ल

धर्मेन्द्र गुप्त 'साहिल'*

अपने बारे में कभी सोचा नहीं
ठीक से ख़ुद को कभी देखा नहीं

भूखे बच्चे को सुलाऊँ किस तरह
याद मुझको कोई भी क़िस्सा नहीं

आप मुझको तय करें मुमकिन नहीं
मैं कोई बाज़ार का सौदा नहीं

ज़हन में हर वक़्त रहती धूप है
मेरा सूरज तो कभी ढलता नहीं

नाज़ मैं किस चीज़ पर आख़िर करूं
मुझमें मेरा कुछ भी तो अपना नहीं

जो ठहर जाये निगाहों में मेरी
ऐसा मंज़र सामने आया नहीं

सबके हिस्से में कोई अपना तो है
अपने हिस्से में मैं ख़ुद अपना नहीं

तेज हैं कितनी हवाएं फिर भला
दर्द का बादल ये क्यों उड़ता नहीं।

*के. 3/10 ए माँ शीतला भवन, गायघाट, वाराणसी।

इतिहास, पुरातत्व एवं वैदिक साहित्य उपेक्षित क्यों

डॉ.कविता विकास*

विचारों से कर्मों की उन्नति होती है और कर्म से विचार पनपते हैं। शुभ, श्रेष्ठ और दिव्य विचार विधाता के विशिष्ट वरदान हैं। सदविचार और विश्वास से सब कुछ संभव है। शिक्षा के स्वरूप पर स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि बालक स्वयं अपने आप को शिक्षित करता है, शिक्षकों का काम उसके राह की समस्याओं को हटाने में मदद करना होता है। बीज को पनपने के लिए हम मिट्टी, पानी और वायु का समुचित प्रबंध कर देते हैं, उसके बाद बीज अपनी प्रकृति के अनुसार जो भी आवश्यक होता है, ले लेता है। परिवेश और संगति के साथ इतिहास भी विद्यार्थियों के विकास में बहुत सहायक होते हैं। मैकाले की शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन करने के बाद ग्रेड सिस्टम या सतत् मूल्यांकन विधि को अपनाना, नई शिक्षा नीति में परियोजना को मुख्य विषय से जोड़ना और वोकेशनल कोर्सेस पर फ़ोकस करना भी विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाने हेतु किया गया। लेकिन इतिहास पुरातत्व और वैदिक साहित्य उपेक्षित ही रहे। कहीं -कहीं तो इतिहास की पूर्ण रूपेण समाप्ति की बात भी उठने लगी। लोगों को कहना था कि गड़े मुर्दों को उखाड़ना नीति संगत नहीं है। आख़िर बच्चे नव निर्माण करेंगे, उन्हें बीती बातों से क्या लेना-देना ? आइए पाठ्यक्रम में इतिहास और पुरातत्व के महत्व की बात करते हैं। इतिहास का सीधा सम्बन्ध वर्तमान से है। यह मानव जीवन के विकास की उस सतत् प्रक्रिया का हवाला देता है जो बच्चों के दिमाग़ में स्वाभाविक रूप से उमड़ते रहते हैं। विज्ञान का भी अपना इतिहास है, हर वैज्ञानिक सिद्धांत का भी अपना इतिहास है। कोई भी आविष्कारक जब किसी विषय पर अनुसंधान करता है तो पहले के खोजकर्ताओं की सफलता और असफलता को ध्यान रखता ही है। इतिहास केवल किसी देश की राजनीति या राजा-महाराजाओं का नहीं होता है। भाषा, कपड़े, संस्कृति, भोजन, साहित्य, समाज, प्रेम और ईश्वर सबके इतिहास हैं। इतिहास से ही वर्तमान के उद्भव और विकास के कारणों का पता चलता है। इतिहास क्रमबद्ध परिवर्तन का ज्ञान है। हमें अपनी ज़मीन और पूर्वजों से क्या मिला, उनसे कैसे एक भावनात्मक रिश्ता क़ायम हो और उनकी किन ग़लतियों का पुनरागमन न हो, यह जानना चाहिए। हरित क्रांति कैसे आयी, एक कृषि प्रधान देश औद्योगिकी को कैसे अपना लिया, उन तकनीकों को सीखने की ज़रूरत है। नयी पीढ़ी राम-रावण, कृष्ण, गांधी-पटेल, बोस-भगत, हिट्लर, वेद आदि को कैसे जानेगी और नहीं जानेगी तो जब उसे राम जैसा चरित्रवान बनने कहा जाएगा तो क्या उसे आश्चर्य नहीं लगेगा कि आख़िर राम हैं कौन ! हर बीता पल तो इतिहास बन जाता है। अगर इतिहास नहीं पढ़ाया जाए तो बच्चे यह कैसे जानेंगे कि उनके पिता या दादा कौन थे, उनके वंश, क्षेत्र आदि का क्या परिचय होगा ? परिवार, समाज और देश से भावनात्मक तरीक़े से जुड़ने के लिए इतिहास की पढ़ाई बहुत ज़रूरी है। यही तो देश प्रेम जगाता है। इतिहास किसी व्यक्ति विशेष की पढ़ाई नहीं है बल्कि उसके वंश-कुल, परिवेश, स्वभाव और प्रकृति की पढ़ाई है। यह सोच और विचार के प्रकार, उनके प्रभाव, उनसे जुड़े युद्ध, हार और जीत की पढ़ाई है। यह एक वंश के सोच का परिणाम बतलाता और वर्तमान को आगाह करता है कि उनसे सीख लेकर अपनी सोच का परिष्कार किस प्रकार करें जो पूरे देश के

निर्माण में सहायक हो। विद्यालय में विद्यार्थी इतिहास पढ़ने से भागते हैं तो इसका कारण पढ़ाने का बोझल तरीक़ा है। एक निश्चित अवधि में पाठ्यक्रम पूरा करने की हड़बड़ी और परीक्षा के लिए सम्भावित प्रश्नों को तैयार करवा कर अभ्यास करवाना ताकि अच्छे अंक आ सकें, आज शिक्षण प्रणाली का ध्येय रह गया है। बच्चों के रिज़ल्ट पर ही शिक्षकों की भी प्रोन्नति निर्भर करती है। इसलिए आजकल शिक्षक भी गेस पेपर्स के चाँद महत्वपूर्ण प्रश्नों के हल पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। इतिहास की पढ़ाई की रोचक विधि, जिसमें रेखा चित्र का प्रयोग, सामयिक हालात को संदर्भों से जोड़ना और तिथियों को याद करने के अद्भुत खेल को करवाना है, इन सबके समावेश से बच्चे इस विषय की ओर आकर्षित होंगे। इतिहास को जीवित रखने के लिए इसे पुरातत्व विभाग को सौंपा गया है। यह वह विषय है जो लुप्त सभ्यताओं, उनके इतिहास और अवशेषों को सम्भाल कर रखते हैं। इसी विषय के द्वारा मानव व्यवहार की जाँच, समाज की विकास प्रक्रिया को समझ कर वर्तमान से जोड़ने की कोशिश, समीक्षा, शोध, विश्लेषण आदि जुड़े हुए हैं। देश-विदेश की संस्कृतियों और उनके बीच के तालमेल व जुड़ाव का विश्लेषण इसी विभाग की ज़िम्मेदारी होती है। जो बच्चे इतिहास में रुचि लेंगे, वे पुरातत्व से अछूते नहीं रहेंगे। डायनासोर की उत्पत्ति व विनाश की कहानियाँ बच्चों ने सरस तरीक़े से पढ़ा है। उसी तरह शहर के संग्रहालयों में अतीत की विरासत के रूप में सम्भाल कर रखे गए औजार, वस्त्र, अस्त्र- शस्त्र, पत्थर, कंकाल आदि अनेक चीज़ें इतिहास के बनने और लुप्त होने की जानकारी को पुख़्ता बनाते हैं। पुरातत्वविद मिलियन वर्ष पुराने जीवाश्मों का अध्ययन कर सकते हैं और वर्तमान युग को सदियों पुरानी संस्कृतियों से जोड़ सकते हैं। इतिहास में रुचि पुरातत्व को अपनाने वाले विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है। खुदाई के अवशेषों का लिखित रूप, रेकार्ड और रिपोर्ट इनके संग्रह का निर्माण करते हैं जिसे सालों-साल सुरक्षित रखा जाता है। यह विद्यार्थियों को मानव इतिहास और संस्कृति पर नया दृष्टिकोण प्रदान करता है और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करता है मसलन, लोग पृथ्वी पर कहाँ और कब और कैसे रहते थे और उस स्थिति से बाहर आने की सम्भावना क्यों पड़ी। आज कम्प्यूटर का युग है, जिन बच्चे को इसमें रुचि हो गयी वे अपनी वेबसाइट बना सकते हैं तथा किसी विशिष्ट ऐतिहासिक घटना या निर्णय को आज के संदर्भों से जोड़कर उन्हें रुचिकर बना सकते हैं। कोई स्थान अगर विशेष घटनाओं, युद्ध या आयोजनों से जुड़ा हो तो उसकी यात्रा लोगों में उत्साह बनाए रखती है। वस्तुतः पुरातत्व पिछले मानव जीवन और उसकी गतिविधियों के भौतिक अवशेषों का वैज्ञानिक अध्ययन है और उसे विद्यालयों में विज्ञान की तरह ही तथ्य और सिद्धांत पर आधारित करके पढ़ाया जाना चाहिए। पुरातत्व और इतिहास एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते। प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक दोनों समाजों के लिए मानव संस्कृति की उत्पत्ति और विकास का दस्तावेजीकरण, व्याख्या, क्रमिक सांस्कृतिक विकास और मानव व्यवहार व परिस्थिति का अध्ययन करना है। इस विषय के लिए शिक्षकों को भी ट्रेनिंग दी जानी चाहिए ताकि वे इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। विद्यालय की ओर से ऐसे स्थानों की शैक्षिक यात्रा करवानी चाहिए। अब आइए एक ऐसे विषय के बारे में जानें जिसकी नींव पर भारतीयता है लेकिन वह विषय हमारे पाठ्यक्रम के हाशिए पर पड़ा हुआ है। यूँ तो हमारे ऋषि-मुनियों ने वैदिक शिक्षा ग्रहण करके भारत भू की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को तैयार किया है लेकिन अंग्रेजों के आगमन के बाद वैदिक शिक्षा परम्परा ज़्यादातर संस्कृत के विद्वानों तक सीमित हो गयी। महर्षि दयानंद और महात्मा हंसराज जैसे ज्ञान पुरोधाओं ने आर्य समाज की संरचना के बाद वैदिक शिक्षा को अंग्रेज़ी शिक्षा के साथ जोड़ कर आंग्लो-वैदिक स्कूलों की स्थापना की लेकिन इन स्कूलों में भी पूरी तरह वेद शिक्षा नहीं दी जाती है। एक विषय के तौर पर धर्म शिक्षा, सनातन परम्परा पर विचारशाला, हवन, प्रार्थना आदि समय-समय पर होते हैं लेकिन वेद को एक अनिवार्य विषय के रूप में नहीं सम्मिलित किया गया है। वैदिक शिक्षा आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्यों के साथ-साथ चरित्र विकास पर केंद्रित थी। आज संस्कारों का क्षरण हो रहा है, परिवार टूट रहे हैं, बच्चे अवसाद पूर्ण होकर जीवन लीला समाप्त कर रहे हैं। समाज में निराशा है, पतन है। ऐसे में प्रारम्भिक शिक्षा को अगर वेदों के भागों से जोड़ा जाये तो कुछ हद तक समाज का नैतिक विकास हो सकता है। ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद को किसी मनुष्य द्वारा नहीं, ईश्वर द्वारा ऋषियों को सुने ज्ञान के आधार पर रचा गया है वैदिक शिक्षा छात्रों का सर्वांगीण विकास करता है। वेद के अनुसार शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें छात्रों को वेद, शास्त्र, विज्ञान, योग, वाणिज्य नृत्य, वाद्य, चिकित्सा, गणित आदि की शिक्षा दी जाती थी। आज भी ये शिक्षाएँ हैं लेकिन उन्हें अंग्रेज़ी शिक्षा पद्धति से जोड़कर इनके विस्तृत आयाम को अलग-अलग कर दिया गया है तथा रोज़गार पाने के साधन के रूप में बना दिया गया है। विकास की अंधी दौड़ में मानव-जीवन और उच्च चारित्रिक उत्थान इनमें से कब अलग हो गए, पता ही नहीं चला। इनसे ही देश की संस्कृति का संरक्षण और विकास हुआ है, नैतिक और चारित्रिक विकास हुआ जो मूलतः आहार-विहार और आचार-विचार को धर्म के आधार पर उचित दिशा में ले जाने के लिए दिया गया था। सम्पूर्ण जीवन के लिए जो कुछ चाहिए वह सब भारत के पास रहा है लेकिन हमारी लालसाएँ हमें भटका गयीं हैं। स्थिति, यज्ञ, संगीत और चिकित्सा के मूल भावों के साथ उनके अनेक भाग और प्रभाग हैं जिनका सम्पूर्ण अध्ययन शायद एक जन्म में सम्भव ही नहीं है। अभी अन्नवेद, पर्जन्यवेद, गौवेद, अर्थवेद, रत्न वेद, गवायुवेद, उष्ट्रायु वेद आदि बाक़ी हैं। उपवैदिक ग्रंथों में बृहद ज्ञान सम्पदा है जिन्हें जानना आवश्यक है। क्षर जीवन अक्षर के लिए मिला है। यही है जीवन का "धियो यो नः प्रचोदयात... तस्मै मन:शिव संकल्पमस्तु।" अभी भी गुरुकुलों, वैदिक विद्यालयों और आर्य समाजी संस्थानों में प्रारम्भिक शिक्षा के स्तर पर वैदिक शिक्षा दी जाती हैं। यह बच्चों का वही उम्र है जिसमें मूल्यों की बुनियाद रखी जाती है और बच्चे किसी बात को जल्दी ग्रहण करते हैं। समय में परिवर्तन, विद्यालय समितियों से अनुबंध, राष्ट्र स्तर पर पाठ्यक्रम की अनिवार्यता, भाषाओं के प्रकार, रहन-सहन और खान-पान की विविधता और अनेक व्यावहारिक तत्व ऐसे हैं जिनके कारण पूरी शिक्षा व्यवस्था को पूरे भारत के लिए वेदों पर आधारित नहीं किया जा सकता है लेकिन वेदों का ज्ञान आवश्यक है, इसलिए उनके उन पाठों को भी पढ़ाना ज़रूरी हैं जो बच्चों के चरित निर्माण में सहायक हों। सबसे बड़ी बात, पंचतंत्र की तरह अधिकतर कहानियाँ पशु-पक्षी पर आधारित होकर जीवन मूल्य सीखाते हैं जो बच्चों को आकर्षित करते हैं। उसी तरह ऋषि-मुनियों की कहानियाँ, राजाओं के जीवन वृतांत, आखेट-युद्ध, राज प्रणाली, कालजयी कहानियाँ जो वैदिक काल की धरोहरें हैं उन्हें पाठ्यक्रम में शामिल अवश्य करनी चाहिए। रोज़गारोन्मुखी विषय आज की माँग हैं लेकिन नैतिक और चारित्रिक मूल्यों के बिना किसी भी रोज़गार में टिके रहना व्यक्ति और संस्थान दोनों के लिए सम्भव नहीं है। अतः इतिहास, पुरातत्व और वैदिक शिक्षा जो प्रायः उपेक्षित रहे हैं, उन पर विशेष ध्यान देकर उन्हें मुख्य पाठ्यक्रम की धारा में लाने की आवश्यकता है।

*डी.- 15, सेक्टर - 9, पीओ - कोयलानगर, जिला-धनबाद, झारखण्ड।

अगले जन्म मोहे भारतीय ही कीजो

विनोद कुमार विक्की*

देशभक्ति में घोर आस्था रखने वाला एक भारतीय एवरेस्ट की चोटी पर जाकर कठोर तपस्या में लीन हो गया। अर्ध नग्न अवस्था में भूख-प्यास त्याग तपस्यारत् भक्त की स्थिति को देखकर इंद्र की गद्दी भाइब्रेट करने लगी। भक्त की भक्ति से ज्यादा इंद्र के भय और अनुनय-विनय वाली इमोशनली प्रेशर में अंततः ब्रह्माजी को तपस्यारत् भक्त के सामने प्रकट होना पड़ा। "हम तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हुए, आँखें खोलो पुत्र... परमपिता की आवाज को नजरअंदाज कर भक्त समाधि में उसी प्रकार तल्लीन रहा जिस प्रकार मोबाइल में फेसबुक उपभोक्ता ! ब्रह्माजी बार-बार पुकार रहे थे लेकिन ढीठ भक्त अपनी आँखें खोलकर तपस्या भंग करने के मूड में नहीं था। खीजकर ब्रह्माजी चिल्लाए आखिरी बार बोल रहा हूँ, आँखे खोलो अन्यथा हम लौट रहे हैं ब्रह्मलोक को... ब्रह्माजी का अल्टीमेटम सुन भक्त ने कनखियों से ब्रह्माजी की ओर देखा। साक्षात चतुर्भुज को सामने देख मारे खुशी के उछल पड़ा- क्षमा प्रभु क्षमा। मुझे लगा कोई आपके नाम पर मेरी फिरकी ले रहा है इसलिए जानबूझकर अँखियां मूँद कर खड़ा रहा। प्रभु मैं आपका सबसे बड़ा भक्त हूँ ! ब्रह्माजी मुस्कुराते हुए बोले- भक्त तो राजनेताओं के होते हैं वत्स ! तुम तो मेरे मानस पुत्र हो ! हम तुम्हारी तपस्या से काफी प्रसन्न हैं माँगों ! क्या चाहिए ? ब्रह्मा जी के डोनर मूड को देखते हुए भक्त बोला- प्रभु आपकी दया से ऑलरेडी मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, बैंक बैलेंस... तो माँ चाहिए तुम्हे ? (ब्रह्मा जी ने बीच में ही टोका)। आप भी न प्रभु खामखां ब्रह्मा से बच्चन बने जा रहे हैं...कृपया मेरी पूरी बात तो सुन लीजिए ! शीघ्र और संक्षेप में बताओ वत्स मेरे पास समय कम है (ब्रह्माजी ने आगाह किया)। आपको क्या लोकसभा चुनाव में किसी पार्टी का प्रचार करने जाना है प्रभु जो टाइम का टोटा है ? वत्स तुम भी न ! अच्छा चलो समय दिया... माँगों, क्या चाहिए। (खीजकर ब्रह्मा जी बोले)। प्रभु मुझे वरदान दें कि मैं अगले छः जन्म भारत में ही जन्म लूँ ! भक्त की बात सुन ब्रह्माजी मुस्कुराते हुए बोले- धन्य हो वत्स ! कितनी साधारण इच्छा है तुम्हारी समझ गया तुम पृथ्वी के ऐसे भूखंड पर जन्म लेना चाहते हो जो देवभूमि है। जहाँ राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर ने जन्म लिया है। ऐसी बात नहीं है प्रभु दरअसल हमारा देश भारत सम्पूर्ण ब्रह्मांड में अद्वितीय है। प्रभु यह ऐसा राष्ट्र है जहाँ ब्लड रिलेशन से ज्यादा तवज्जो डेमोक्रेसी को दिया जाता है। भारतीय लोग भले ही अपने बेटे-बेटियों की शादी अंतर्जातीय में कर दें लेकिन मतदान जाति देखकर ही करते हैं ! इस भारतीय धरा पर भले ही योग्यता धरी की धरी रह जाए लेकिन सरकारी नियोजन, प्रमोशन और योजनाओं के क्रियान्वयन में जाति प्रमाण-पत्र की निकल पड़ती है। यह वह भूखंड है प्रभु जहाँ चित्रगुप्त की दंड संहिता वाली धार्मिक पुस्तक से भी बड़ी विश्व की सबसे बड़ी विधि पुस्तक (संविधान) द्वारा विधि-विधान का नियमन किया जाता है। अब इस पुण्य प्रदेश की और कितनी महिमा गाऊं प्रभु इस पावन भूमि पर जीवन के तीस पैंतीस साल सरकारी सेवा देने वालों को भले ही पेंशन ना मिले लेकिन तीर-तुक्का एवं जोड़-जुगाड़ से एकबार माननीय विधायक अथवा सांसद पद धारण करने वाले खादी मानव को पदमुक्ति से प्राण मुक्ति तक सभी प्रकार का भत्ता प्राप्त होता है। आप इस देश में जन्म लेकर भी शत्रु मुल्क के जिंदाबाद का उदघोष कर सकते हैं... लेकिन वत्स जब जन्म ही लेना है तो अमेरिका, रूस, चाइना जैसे अमीर और श्रेष्ठ देशों में जन्म लो भारत में ही क्यों ? ब्रह्माजी ने बीच में ही टोका। ब्रह्माजी की बातों से भक्त काफी आहत हुआ, फिर संभलते हुए बोला- प्लीज डोंट ट्राय टू मिसगाइड मी प्रभु फॉर योर काइंड इन्फॉर्मेशन सर्वाधिक जनसंख्या वाले चाइना में भी वीवीआईपी लगभग साढ़े चार सौ और यूएसए में महज ढाई सौ हैं, तो आप ही बताइए पाँच लाख अस्सी हजार वीवीआईपी की संख्या वाले भारत वर्ष में जन्म लेना अच्छा विकल्प है या फिर अल्प सीट वाले देशों में जन्म लेकर बैकुंठ सुख सदृश वीवीआईपी पद प्राप्ति के लिए मगजमारी करने में ! कहने को तो आप सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी कहलाते हैं लेकिन नॉलेज लोकल न्यूज चैनल वाली भी नहीं रखते हैं। अब सपोज हम अमेरिका के प्रसिडेंट या चीन में कोई मंत्री बन भी गए तो क्या उखाड़... क्षमा प्रभु ! आवेश में शब्दों का समायोजन नहीं कर पा रहा। मेरा आशय है कि क्या कर पाऊंगा। यदि अमेरिका का प्रेसिडेंट बन जाऊँ तो चार साल बाद जीवन-यापन के लिए किसी पिज्जा-बर्गर कंपनी में डिलिवरी ब्वॉय बनना पड़ेगा अथवा चाइना का ही मंत्री बन गया और मोहवश सरकारी कोष से थोड़ी-बहुत हेराफेरी कर दी तो चाइनीज़ सरकारी विधान से फांसी पर लटका दिया जाऊँगा। इन मामलों में हमारा भारत सहिष्णु और उदार है। एकबार संसदीय राजनीति में एंट्री करने भर की देर है फिर तो बल्ले-बल्ले ! परिवार से दूर के रिश्तेदार तक को राजनीतिक अथवा सरकारी पदों पर पदासीन करने का कॉपीराइट नेचुरली प्राप्त हो जाता है। रही बात रिटायरमेंट की तो आर्यावर्त की पॉलिटिक्स में कभी कोई रिटायर नहीं होता। स्थायी आजीवन पेंशन और अन्य भत्ता के साथ-साथ अवसर अनुकूल विभिन्न पार्टियों से जुड़कर 'स्व' जन सेवा करते रहने की असीम संभावनाएँ उपलब्ध हैं। दूसरी बात मेरा देश सर्वश्रेष्ठ है। अतः अमेरिका चाइना रूस आदि से इसे कमतर आँककर आप मेरी राष्ट्रभक्ति को आहत करने का दुस्साहस ना करें। आपकी जानकारी के लिए बता दूँ धन-धान्य के मामलों में हमारा देश अमेरिका और चाइना से भी आगे है। हम भारतीय नेताओं/अभिनेताओं/ व्यापारियों/ संस्थानों के खरबों की राशि से ही स्विस बैंक पुष्पित-पल्लवित होता है। हमारे यहाँ सरकारी इंजीनियर या किरानी के घर भूले से भी छापा पड़ जाए तो अरबों रुपए के कैश, जेवरात प्रॉपर्टी मिल जाती है। खबरदार प्रभु जो हमारे देश को गरीब और भुक्खड़ कहा तो ! थोड़ी देर के लिए मैं आपकी भक्ति भूल सकता हूँ लेकिन राष्ट्रभक्ति कदापि नहीं ! वंदे मातरम ! भारत माता की जय...! भक्त को उद्वेलित होता देख ब्रह्मा जी सकुचाते हुए बोले- अरे तुम तो नाहक क्रोधित हो गए वत्स ! भक्त- आप तो बात ही उत्तेजित करने वाली कर देते हो ! कैसे कहते हो मेरा भारत गरीब देश है। अरे प्रतिवर्ष यहां अरबों-अरब का घोटाला हो जाता है फिर भी अर्थव्यवस्था की अवस्था सदैव तंदुरूस्त ही रहती है। लेकिन वत्स तुम्हारे सोने की चिड़िया को पहले अंग्रेज बिल्लौटा ने नोचा और अब खादी बागड़ बिल्ले... ब्रह्माजी की बात

को काटते हुए भक्त बोल पड़ा आप भी न हद भौकाल मचाते हैं स्वामी इसलिए केवल पुष्कर में ही सीमित हो कर रह गए हैं। जब देश अपना है, राजकोष अपना है तो अपने लोग ही खाएंगे न ! या खाने के लिए होनोलूलू से नेता कर्मचारी और पदाधिकारी आएगा ! व्यग्र भक्त का तर्क और देवभूमि पर शेष छः जन्म पदार्पण की उत्कट इच्छा सुनकर ब्रह्माजी समझ गए कि भारतीय भक्त को बरगलाना व्यर्थ है, अंततोगत्वा 'तथास्तु' कह वो अंतर्धान हो गए।

*ग्रा.+ पो.- महेशखूँट बाजार, जिला – खगड़िया (बिहार)।

कहानी

सुनहरे बालों वाली लड़की

डॉ.रंजना जायसवाल*

गगनचुंबी इमारतें, मॉल रेस्टोरेंट कितना कुछ था इस बड़े शहर में जिसकी चकाचौंध में मेघा की आँखें भी चौधियाँ गई थी। इसीलिए तो छोटे शहर की शांति, सुकून और अपनत्व को छोड़कर चली आई थी। आज भी उसे वह दिन याद है जब उसने निखिल से कहा था। "निखिल क्या रखा है इस शहर में...?" "खराबी क्या है इस शहर में...!" निखिल ने बेपरवाह होकर कहा था। मेघा ने खीझकर कहा था। "खराबी ! एक हो तो बताऊँ। सड़कें ! सड़कों में सड़क कम गड्ढे ज्यादा हैं। समझ नहीं आता गड्ढों में सड़कें हैं या सड़कों में गड्ढे। एक कायदे का होटल और रेस्टोरेंट नहीं अक्षय के भविष्य के बारे में सोचा है। इन झोला छाप स्कूल में पढ़कर वह क्या सीखेगा।" निखिल उसकी बात सुन मुस्कुरा दिए थे। "इसी झोला छाप स्कूल में पढ़े लड़के से तुमने शादी की है।" "आपसे तो बात करनी बेकार है। निखिल सोचो माना तुम इस शहर में पैदा हुए हो। तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई, शादी-ब्याह सब यहीं हुआ पर सोचो क्या भविष्य है हमारा... बड़े-बड़े शहरों में बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ हैं। तुम्हारे लिए कितना अच्छा एक्सपोजर होगा। अपनी छोड़ो अक्षय का सोचो एक बेहतर भविष्य का हकदार तो वह है न...?" निखिल सोच में पढ़ गया। बात गलत तो नहीं कही थी मेघा ने...पर बड़े शहर के खर्चे, सुकून रोज की भागदौड़ में कहीं खो गया था। खुली हवा में सांस लेने को तरस गए थे। हवाओं में जहर घुला हुआ था। मेघा कभी-कभी सोचती क्या बड़े शहर में बसने का उसका निर्णय सही था ? रेड लाइट होते ही गाड़ियों के हुजूम की रफ्तार पर अचानक से रोक लग गई। गाड़ियों के हॉर्न के शोर से मेघा चिड़चिड़ा गई। "उफ्फ ! एक तो इतना ट्रैफिक ऊपर से रेड लाइट्स, गाड़ी रेंग रही है।" उसने बेचैनी से अपनी ब्रांडेड घड़ी पर नजर डाली। यह घड़ी उसे बहुत पसन्द थी। निखिल बड़े चाव से उसके लिए दुबई से लाए थे। मटमैले कपड़ों और हफ़्तों से गंदे जूट होते बालों के साथ हर उम्र के बच्चे रेड लाइट होते ही सड़कों पर बिखर गए। एक पल को लगा मानो अचानक गुल्लक टूट गई हो और सिक्के बेतरतीब इधर-उधर बिखर गए हो पर वो सिक्के नहीं थे। वो जीते-जागते हाड़-माँस के इंसान थे। सिक्के होते तो छोटे हो या बड़े अमीर या गरीब अपनी हैसियत भूल उन्हें उठाने के लिए झुक ही जाते पर न जाने क्यों उन्हें सड़क पर बिखरता देख कार में बैठे लोग कार का शीशा चढ़ाए वितृष्णा से सिकुड़ गए। कहीं से इकट्ठा की गई गन्दी सी स्प्रे बोतल में साबुन का घोल लिए वह हर गाड़ी के शीशे पर छिड़कते और एक गंदे से कपड़े से रगड़-रगड़ शीशे को चमकाने की नाकाम कोशिश करते। कभी-कभी लगता वह शीशे को नहीं अपने हाथ में पकड़े धप्प पड़ चुके कपड़े से अपनी धूमिल हो चुकी किस्मत को चमकाने की कोशिश कर रहे हो। "फिस्स-फिस्स !" स्प्रे बोतल ने पानी मे घुला हुआ साबुन कार के शीशे पर उलीच दिया। मटमैला पानी छोटे-छोटे बुलबुलों में बदल गया। बुलबुले शैतान बच्चों की तरह खिलखिलाने लगे और झट से नीचे की ओर सरक गए। एक पल को लगा मानो नन्हें बच्चों का झुंड स्लाइडिंग झूले पर फिसल गए हो पर अभी भी एक बड़ा सा साबुन का बुलबुला ढीठ बच्चे की तरह डटा अपनी उपस्थिति जता रहा था। जेठ की चिलचिलाती धूप की किरणें सीधे पड़ रहीं थी। बुलबुले में किरणों की वजह से इंद्रधनुषी रंग खिल उठे। उन मटमैले हाथों ने मटमैले कपड़ों से उस इंद्रधनुषी गुब्बार की परवाह न करते हुए तेजी से हाथ फेरा। "ये शीशा चमका रहे हैं या उसे और गन्दा कर रहे हैं।" निखिल ने झुंझला कर कहा। ट्रैफिक लाइट पीली हो चुकी थी। गाड़ी के शीशे पर बस दो हाथ मार वह लड़का ड्राइवर शीट के बगल में बैठे निखिल के आगे हाथ फैलाकर रिगियाने लगा। उसके चेहरे से गरीबी टपक रही थी। वह शक्ल से खानदानी गरीब लग रहा था। उसके हाथ भी उसके चेहरे की तरह काले थे। "अंकल भूख लगी है, सुबह से कुछ नहीं खाया।" उसने अपने पेट पर हाथ फेरते हुए कहा उसकी आँखों से बेचारगी टपक रही थी। भूख से बिलबिलाती आँखें अंदर धँस गई थी। मेघा के मन ने उसे कचोटा उनके हाथ पर कुछ रख देगी तो उसका कुछ बिगड़ नहीं जाएगा। दान करने से पुण्य ही मिलता है। मेघा मन-ही-मन हिसाब लगा रही थी। पर्स में टूटे पैसे नहीं थे सिर्फ दस, बीस, सौ और पच्चास के नोट थे। उसने अपने सर को झटका दे मन में तेजी से घुमड़ते दान करने के विचारों को झटक दिया और दान करने के भूत को एक झटके से उतार दिया। तभी लगभग दस-बारह साल की सुनहरे बालों वाली लड़की मेघा की गाड़ी के दरवाजे से आकर टिक गई। "मम्मा ! इसके बाल देखो, गोल्डन कलर कराया है। जब इतना पैसा है तो फिर भीख क्यों मांग रही हैं।" अक्षय की बात सुन मेघा मुस्कुरा दी। क्या बताती जिंदगी की धूप ने उनके जीवन के सारे रंग सोख लिए थे। उसने चेहरे पर बिखर आई अपनी लटों को बड़ी अदा के साथ अपनी उंगलियों में घुमाया। पिछले महीने ही उसने इनमें हेयर स्पा, कैरेटिन और स्ट्रेटनिग करवाई थी। कितने खूबसूरत लगने लगे थे। लगने भी थे आखिर चौदह हजार खर्च किए थे। सुनहरे बालों वाली लड़की उसे एकटक देख रही थी। उसके बालों को देखकर लग रहा था कि महीनों से उन बालों में तेल नहीं लगा था और न ही किसी भी तरह की कोई देखभाल हुई थी। एकबार इसी तरह की बच्ची को सड़क किनारे कपड़ा धोने वाले साबुन से रगड़-रगड़ कर बाल धोते देख उसे अपने महंगे, ब्रांडेड शैम्पू, कंडीशनर और सीरम की याद आ गई थी। इतने जतन के बाद भी उसके बाल टूट रहे थे और तेज़ी से सफेद होते जा रहे थे। न जाने कितने सारे नुस्खे, दवाइयाँ और तेल आजमाए थे पर... "मेघा शीशे बंद करो। कोई भरोसा नहीं इन सबका कब मोबाइल, चेन छीनकर भाग जाए।" वह अपने सोच के दायरे से

रेशम वाणी

बाहर आ गई और निखिल की बात सुन एक पल को हड़बड़ा गई। उसका हाथ शीशा बन्द करने वाले बटन पर चला गया। वह अपनी बेवकूफी पर मुस्कुरा दी। ए.सी. की वजह से शीशा पहले से ही बन्द था। लड़की की कमर पर एक छोटा सा बच्चा लदा हुआ था। उस बच्चे को देख न जाने क्यों मेघा को दया आ गई थी। इस चिलचिलाती धूप में उसकी आँखें मुदी जा रही थी। आँसुओं की एक गहरी लकीर उसके चेहरे पर स्पष्ट देखी जा सकती थी। "एक हमारे बच्चे हैं जिनसे अपना स्कूल बैग भी नहीं उठता और एक इस बच्ची को देखिए अपने भाई को कमर पर लादे टहल रही है।" ड्राइवर भैया ने बैक मिरर से मेघा को देखा और मुस्कुरा दिया। "मैडम जी ! कौन से भाई-बहन..." "मतलब !" "कोई जरूरी नहीं यह उसका भाई हो। यह लोग किराए पर बच्चे ले लेते हैं।" अब की चौकने की बारी निखिल की थी। "किराए पर बच्चे ? कौन देगा इन्हें...?" "इनके आस-पास अपने जैसे ही लोग रहते हैं जो आदमी काम पर नहीं जाता वह उनके बच्चों को अपने कमर पर लादे ऐसे ही चौराहों पर टहलता रहता है।" "बच्चे अनजान लोगों को अपने बच्चे कैसे दे सकता है ?" मेघा की आँखों से ममत्व टपक रहा था। मेघा ने अक्षय के सिर पर हाथ फिराया और अपने सीने से चिपका लिया। "मैडम भूख और गरीबी अपना-पराया नहीं देखती। जो लोग बच्चों को किराए पर लेते हैं। कमाई का कुछ हिस्सा बच्चे के घरवालों को भी दे देते हैं। वैसे भी ये सब अगल-बगल ही तो रहते हैं। बच्चे भी उन्हें अच्छे से पहचानते हैं। फिर दिक्कत किस बात की।" मेघा आश्चर्य से ड्राइवर को देखती रह गई। नैतिकता कहीं दूर कराह रही थी। जिस बच्चे को देख उसे दया आ रही थी अब वह भाव भाप बनकर उड़ चुका था। मेघा का अचानक से नजरिया बदल गया जो बच्चा अभी तक मासूम और हालात का मारा नज़र आ रहा था वह अचानक से पैसा कमाने की मशीन नज़र आने लगा था। मेघा ने सुनहरे बालों वाली लड़की को आगे बढ़ने का इशारा किया पर वह वैसे ही खड़ी रही। मेघा उसकी इस हरकत पर खींझ गई। "कितनी ढीठ है।" उसने कसमसा कर कहा। उसने अपने पर्स को खोला और जेब में एक अदद सिक्का टटोलने की नाकाम कोशिश की। एक-दो-तीन...तीनों चेन खोलने के बाद कहीं भी सिक्का नहीं मिला। सामान जरूर उलट-पुलट हो गया। वह झुंझला गई। सुनहरे बालों वाली लड़की बड़ी उम्मीद से उसे देख रही थी। मेघा ने कार की बगल वाली सीट पर पर्स को जोर से पटका और तेज आवाज़ में फटकारते हुए कहा " कुछ नहीं है, आगे बढ़ो।" सुनहरे बालों वाली लड़की के होंठ बुदबुदाए वो शायद कुछ कह रही थी। मेघा ने हल्के से शीशे को खोला। "क्या है ! क्या चाहिए तुम्हें ?" "मैडम ! अपनी घड़ी दे दो।" "ये ?" मेघा ने आश्चर्य और हिकारत भरी नजरों से उसकी ओर देखा। "हिम्मत तो देखो इन सब की !" उसने मन-ही-मन बुदबुदाया। उसने अपने गुस्से पर काबू करते हुए कहा "क्या करोगी ! समय भी देखना आता है ?" उस लड़की ने मुस्कुरा कर उसकी ओर देखा और आगे बढ़ गई। उसकी मुस्कुराहट में ऐसा कुछ था जिसने मेघा को सोचने को मजबूर कर दिया। तब तक चौराहे की ट्रैफिक लाइट हरी हो गई और उसकी गाड़ी आगे बढ़ गई। मेघा सोच रही थी। सुनहरे बालों वाली लड़की का वर्तमान तो सामने ही दिख रहा था। भविष्य इससे कुछ अलग नहीं था और रहा अतीत की बात तो वह उसके वर्तमान की तरह ही खुरदरा था। मेघा विचारों के सागर में डूब उतरा रही थी। आखिर वह लड़की उसकी घड़ी क्यों माँग रही थी। शायद उसे घड़ी सुंदर लगी थी और वह उसे पहनना चाहती थी या फिर शायद वह अपना वक्त बदलना चाहती थी। जिसके काँटे ठहर गए थे जिसकी चुभन उसे टिस देती रहती थी। शायद उन काँटों के ठहरने के साथ उसकी जिंदगी भी कहीं-न-कहीं ठहर गई थी। क्या वक्त को सचमुच कोई बदल पाया है ? क्या कलाई में घड़ी बाँध भर लेने से वक्त बंध पाया है ? सुनहरे बालों वाली लड़की न जाने कितने सवालों के साथ मेघा को छोड़ ओझल हो चुकी थी। शायद कुछ सवालों के जवाब नहीं होते। शायद...?

*लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश।

रेशम वाणी

लघु कहानी

बुद्धिमान शिक्षक

डॉ. चीनीपल्ली रवि शंकर*

जहाज में एक शिक्षक, एक पुलिस अधिकारी और एक बैंक अधिकारी सफर कर रहे थे। जैसे ही जहाज समुद्र के बीच में पहुँचा, उनके सामने एक समुद्री राक्षस प्रकट हो गया और वह तीनों लोगों को खाने के लिए चिल्लाने लगा। तीनों डर गये लेकिन तीनों ने राक्षस के सामने एक शर्त रखी और कहा कि यदि तुम हमारा शर्त को पूरा कर देगा तो तुम हम लोगों को खा सकते हो और यदि शर्त को पूरा नहीं करते हो तो तुमको हमारी गुलामी स्वीकार करनी होगी। राक्षस ने उन तीनों के शर्त को स्वीकार कर कहा कि आप लोगों का क्या शर्त है ? पहले बैंक अधिकारी ने अपनी सोने की अंगूठी निकाली और उसे समुद्र में फेंक दिया और कहा उसे वापस लेकर आओ। अंगूठी को समुद्र में डूबने के कुछ समय बाद राक्षस ने उसे वापस लाकर दे दिया और शर्त के अनुसार बैंक अधिकारी को निगल गया। इसके बाद पुलिस अधिकारी ने अपनी महंगी घड़ी को पानी में फेंक दिया। राक्षस उसे भी समुद्र से वापस लाया और पुलिस अधिकारी को निगल लिया। अब शिक्षक की बारी थी। कुछ सोचने के बाद उन्होंने पीने का पानी की एक बोतल निकाली और पानी को समुद्र में डाल दिया और राक्षस को कहा कि हमने समुद्र में जो पानी फेका है उसे वापस लेकर लाओ। राक्षस ऐसा करने में विफल रहा और अपनी हार स्वीकार की तथा उनके गुलाम बनने के लिए सहमत हो गया। शिक्षक ने दोनों दोस्तों को वापस लाने का आदेश दिया। राक्षस ने उनके दोनों दोस्तों का जीवन वापस दे दिया। शिक्षक ने राक्षस से कहा कि तुमने अच्छा काम किया है। अगर तुम भविष्य में किसी और को इस तरह से चोट नहीं पहुँचायोगे तो मैं तुम्हें गुलामी से मुक्त कर दूँगा। दानव ने ऐसा न करने की कसम खाई और समुद्र में कूद गया। शिक्षक वह होता है जो अच्छा सोचता है और समस्या का समाधान निकालता है।

*वैज्ञानिक-डी (सेवानिवृत्त), कुरनूल जिला, आंध्र प्रदेश।

महिलाओं के सशक्तिकरण से ही विकसित होगा भारत

नृपेन्द्र अभिषेक नृप*

"नारी तुम प्रेम हो, आस्था हो, विश्वास हो, टूटी हुई उम्मीदों की एकमात्र आस हो।" अपनी ममता और आंसुओं से देश का बचपन सँवारने वाली औरत, माँ, बेटी, बहन या पत्नी बनकर पुरुषों का जीवन संवारने वाली औरत, आज भी जुल्मो-सितम की सलीब पर टंगी है। दर्द तो यह है कि यह सितम उस पर उसी पुरुष द्वारा डाल दिया जाता है जिसको उन्होंने अब तक अपनी ममता की शीतल छांव में ढककर रखा है। दया और ममता की मूर्ति स्त्री सदियों से ही पुरुषो के वर्चस्व के आगे दबी हुई दिखाई देती है। किसी देश की स्थिति का अंदाजा वहां के रहने वाली महिलाओं के स्थिति से लगाया जा सकता है। एक स्त्री को ममता और प्रेम का आचरण धारण करने वाली कहा जाता है लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि हमेशा पुरुषों के आगे एक स्त्री को भेदभाव, हिंसा, बुरा बर्ताव आदि का सामना भी करना पड़ता है लेकिन इन सृष्टि की जननी पर इतने बड़े सामाजिक अत्याचार क्यों हो रहे हैं ? कब तक उसका बलात्कार करेगा यह समाज ? कब तक उसे जिंदा जलना होगा ? कब तक उसे नंगा घूमना होगा ? आज जब वह ज्ञान की रोशनी पाकर तमाम पर्दों को चीरती हुई आसमां को छूने के लिए निकल पड़ी है तो फिर उसपर बलात्कार जैसे धारदार हथियार से सिर्फ हमला ही नहीं किया जा रहा बल्कि उसे जिंदा जला दिया जा रहा है। कैसा है यह हमारा समाज और कानून जहां ऐसा कोई दिन नहीं होता जब किसी लड़की, बच्ची के साथ कोई जघन्य बलात्कार और हत्या की घटना न होती हो। महिलाओं के सशक्तिकरण में उनके खिलाफ हो रहे हिंसा उनके सामने रुकावट का पत्थर बन कर खड़ा है।

महिलाओं पर बलात्कार का आघात : एक तरफ जहाँ भारत की बेटियाँ टोक्यो ओलंपिक में पदक जीतने में पुरुषों से काफी आगे है तो वहीं, उसी समय दिल्ली में एक छोटी से बच्ची के साथ पहले बलात्कार होता है और उसके बाद उसे वहीं शमशान में जला दिया जाता है। जब बात पुलिस तक जाती है तो पुलिस पहले दोषियों के कहने पर हत्या और लाश जलाने मात्र का केस करती है और जब बात बढ़ने लगती है तो बाद में सामूहिक बलात्कार की धारा भी उसमें शामिल किया जाता है। पुलिस ने अगर तत्काल में ही तत्परता दिखाई होती तो शायद कुछ सबूत भी मिला होता लेकिन जिस देश में कानून सिर्फ सबूत से चलता है, वहाँ बच्ची को अब न्याय मिलेगा या नहीं वो वक्त के गर्भ में है। महिलाओं पर हो रहे अत्याचार आखिर रुक क्यों नहीं रहे हैं, यह सबसे बड़ा सवाल है। आए दिन उनके साथ हो रहे बलात्कार की घटनाओं को भी याद किया जा सकता है। एन सी आर बी के आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले 10 वर्षों में महिलाओं के बलात्कार का खतरा 44 फीसदी तक बढ़ गया है। आंकड़ों के मुताबिक 2010 से 2019 के बीच पूरे भारत में कुल 3,13,289 बलात्कार के मामले दर्ज हुए हैं। इन आंकड़ो से आजाद भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति को देखा जा सकता है। यहां हर 16 मिनट में एक महिला का बलात्कार होता रहा है। हाल-फिलहाल की रेप की घटनाओं पर गौर करें तो एक बात नई दिख रही है। वो यह कि अभी जो भी रेप की घटनाएं हो रहीं हैं उसमें अत्यधिक में साक्ष्य मिटाने के लिए लड़की को जलाया जा रहा है या उसे मारा-पीटा जा रहा है जो कि अपराध को और जघन्य बना रहा है और यह सब निर्भया कांड के बाद से ही ज्यादातर दिख रहा है। इसका कारण कानून में हुए बदलाव को कहा जा सकता है क्योंकि यह रेपिस्ट खुद को बचाने और सबूत मिटाने के लिए कर रहे हैं। तो क्या कठोर कानून मात्र से रेप की घटना को नियंत्रित नहीं किया जा सका है क्योंकि रेप के बाद अब हत्या भी होने लगी है। बड़ा प्रश्न यह है कि फिर रेप का समाधान क्या हो सकता है ? निर्भया कांड, प्रियंका रेड्डी, हाथरस कांड जैसी घटनाओं ने मानव जाति को शर्मसार करने का ही काम किया है। दिल्ली के निर्भया कांड के समय में भी देखा गया था कि किस तरह सम्पूर्ण देश में लोगों में गुस्सा उफान पर आ गया था। सरकार और व्यवस्था की "कुर्सी" हिलने लगी थी और तब जाकर शासन ने कठोर कानून बनाने की पहल की थी लेकिन उस कानून का हश्र जो हुआ वह आपके सामने है। आज स्थिति यह है कि बलात्कार के संदर्भ में कठोरतम् कानून होने के बावजूद इस तरह के प्रकरणों में कमी नहीं आ रही है। फिर समस्या कहाँ है ? क्या कठोर कानून में कमी है ? क्या समाज में कमी है ? अनगिनत प्रश्न समाज के समक्ष मुँह बाए खड़ा है। बढ़ते बलात्कार के क्या है कारण ? रेप होने के कारणों में कुछ कारण भारतीय सिनेमा, वेब सीरीज और यहां तक कि भारत में कुछ टीवी सीरियल में भी अश्लीलता आसानी से दिखा देने को माना जाता है लेकिन रेप के लिए सिनेमा रूपी माध्यम को या समाज के किसी खास वर्ग को कोसना या उसका नकारात्मक चित्रण करना उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि आज हम उस दौर से बहुत आगे बढ़ चुके हैं। इंटरनेट क्रांति और स्मार्टफोन की सर्व-सुलभता ने पोर्न या वीभत्स यौन-चित्रण को सबके पास आसानी से पहुंचा दिया है। अभी तो इंटरनेट पर एड के नाम पर भी अश्लीलता परोसी जाने लगी है। इन सब कंपनियों को इन बातों से कोई मतलब नहीं है कि इंटरनेट पर छोटे बच्चे पढ़ रहे हैं और उसी बीच में एड भी आ जाता है। इंटरनेट भी अब सहज उपलब्ध है। कल तक इसका उपभोक्ता केवल समाज का उच्च मध्य-वर्ग या मध्य-वर्ग ही होता था लेकिन आज यह समाज के हर वर्ग के लिए सुलभ हो चुका है। यह सबके हाथ में है और लगभग फ्री है। कीवर्ड लिखने तक की जरूरत नहीं, आप बस मुंह से बोलकर ही गूगल को आदेश दे सकते हैं। इसलिए इस परिघटना पर विचार करना किसी खास वर्ग या क्षेत्र के लोगों के बजाय हम सबकी आदिम प्रवृत्तियों को समझने का प्रयास है। तकनीकें और माध्यम बदलते रहते हैं लेकिन हमारी प्रवृत्तियां कायम रहती हैं या स्वयं को नए माध्यमों के अनुरूप ढाल लेती हैं। आधुनिक युग में मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने अध्ययन में पाया है कि हमारे दिमाग की बनावट इस तरह की है कि बार-बार पढ़े, देखे, सुने या किए जाने वाले कार्यों और बातों का असर हमारी चिंतनधारा पर होता ही है और यह हमारे निर्णयों और कार्यों का स्वरूप भी तय करता है। इसलिए पोर्न या सिनेमा और अन्य डिजिटल माध्यमों से परोसे जाने वाले

सॉफ्ट पोर्न का असर हमारे दिमाग पर होता ही है और यह हमें यौन-हिंसा के लिए मानसिक रूप से तैयार और प्रेरित करता है। इसलिए अभिव्यक्ति या रचनात्मकता की नैसर्गिक स्वतंत्रता की आड़ में पंजाबी पॉप गानों से लेकर फिल्मी 'आइटम सॉन्ग' और भोजपुरी सहित तमाम भारतीय भाषाओं में परोसे जा रहे स्त्री विरोधी, यौन-हिंसा को उकसाने वाले और महिलाओं का वस्तुकरण करने वाले गानों की वकालत करने से पहले हमें रुककर थोड़ा सोचना होगा। रेप जैसे कुकर्मों से मुक्ति के लिए कानून और समाज दोनों को ही अपनी जिम्मेदारी लेनी होगी। अदालतों में केस का अंबार लगा है। इसमें हजारों बलात्कार के मामले दबे पड़े हैं। देश में न्याय की प्रक्रिया इतनी जटिल हो गई है कि पीड़ित हताश होने लगे हैं। न्याय की प्रक्रिया को आसान करना होगा, तभी हर व्यक्ति को समय से न्याय मिल पाएगा। आज बलात्कार के मामलों को जल्द-से-जल्द निपटाने की जरूरत है। मामलों में सजा सुनाई जाने लगी, तो फिर अपराधियों में कानून का एक खौफ हो जाएगा। वह गुनाह करने से पहले सौ बार सोचेगा। आज बलात्कार पीड़िता को मेडिकल चेकअप कराने के लिए भी समस्याओं से दो-चार होना पड़ता है। फ़ास्ट ट्रेक कोर्ट तो बना है लेकिन उसकी प्रकिया पूरी होते- होते भी काफी लम्बा वक्त लग रहा है, तब तक बलात्कारी शोषित परिवार को धमका कर ही केस खत्म करवा दे रहे हैं। ऐसे में कानून का डर ही नहीं दिख रहा है। जिस तरह से दिल्ली में पुलिस का बर्ताव हुआ ठीक वैसा ही कई जगहों के बलात्कार के केस में देखने को मिला है। ऐसे में जरूरी है कि पुलिस भी अपनी जिम्मेदारी सही तरीके से निभाये। उन्हें कॉलेजों के बाहर अपनी गतिविधियां बढ़ानी होंगी और राह चलते लड़कियों पर फब्तियां कसने वालों पर कड़ाई से कार्रवाई करनी होगी। ऐसा होने लगा तो इस तरह की घटनाओं में कमी जरूर आएगी। अगर बात कानून की हो तो बलात्कार की घटनाओं को रोकने के लिए कानून तो बना दिया गया लेकिन हमें देखना होगा कि इस बीच महिलाओं के प्रति लोगों में संवेदना कितनी बढ़ी है ? सरकार ने कानून तो बना दिया लेकिन उसे क्रियान्वित नहीं कर पाई है। आज के दौर में सामाजिक ताने-बाने को बदलने की जरूरत है, इसमें ही महिलाओं का हित है। हमारे देश में बलात्कार की घटनाएं यौन आकर्षण की वजह से नहीं होती हैं, इसके पीछे का कारण पुरुषों का महिलाओं पर अधिकार समझ लेना भी है। आज घर में ही परिवार के सदस्यों द्वारा भी इस घटना को अंजाम दे दिया जाता है। ऐसे में जरूरी है कि समाज को भी नैतिक ज्ञान हो जिससे कि ऐसे कुकर्म करने के पहले उनका ज़मीर जाग सके। इसके लिए स्कूलों के पाठ्यक्रम में भी नैतिक शिक्षा को शामिल किया जा सकता है ताकि महिलाओं के प्रति इज्ज़त का भाव का उन्हें बचपन से ही भान हो। सही शिक्षा और स्वस्थ माहौल तैयार करके ही हम उन्हें आने वाले भविष्य के लिए एक बेहतर नागरिक के तौर पर तैयार कर सकते हैं। एक स्त्री सारे रिश्तों को कितने अच्छे से संभालती हैं। आज महिलाओं का योगदान सभी क्षेत्र में अहम् है। महिलाएं किसी भी देश के विकास का मुख्य आधार होती हैं। वे परिवार, समाज और देश की तरक्की में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जहां आज महिलाएं हर क्षेत्र में खुद को साबित कर रही हैं एवं पुरुषों से कंधा-से-कंधा मिलाकर चल रही हैं वहीं आज भी कई क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार नहीं मिल रहा है।

महिलाओं का हो आर्थिक सशक्तिकरण : देश की तरक्की करनी है तो महिलाओं को सशक्त बनाना होगा। महिलायें कितनी सक्षम हैं ये किसी को बताने की आवश्यकता नहीं है। महिलाओं ने खुद ही अपनी हिम्मत और श्रम से हर दौर में इसे साबित किया है। महिलाओं के सशक्तिकरण का मतलब है कि महिलाओं को अपनी जिंदगी का फैसला करने की स्वतंत्रता देना या उनमें ऐसी क्षमताएं पैदा करना कि वे समाज में अपना सही पहचान बना सकें। आज महिलाएं रूढ़िवादी मान्यताओं और पुरुष प्रधान विचार को अब चुनौती दे रही हैं और हर क्षेत्र में अपने हुनर को आजमा रही हैं। औरते अब तो नई-नई सफलता की मिसालें गढ़ रही हैं। समाज के पढ़े-लिखे लोग लड़कियों की शिक्षा के प्रति जागरूक हो रहे हैं और शिक्षित महिलायें देश के विकास में अपना अहम् योगदान दे रही हैं। जेम्स स्टीफेंस का कथन है- " स्त्रियां पुरुषों से अधिक बुद्धिमान होती हैं क्योंकि वे पुरुष से कम जानती हैं किन्तु उससे अधिक समझती हैं।" देश, समाज और परिवार के उज्ज्वल भविष्य के लिये महिला सशक्तिकरण बेहद जरूरी है। महिलाओं को स्वच्छ और उपयुक्त पर्यावरण की जरूरत है जिससे कि वो हर क्षेत्र में अपना खुद का फैसला ले सकें चाहे वो स्वयं, देश, परिवार या समाज किसी के लिये भी हो। देश को पूरी तरह से विकसित बनाने तथा विकास के लक्ष्य को पाने के लिये एक जरूरी हथियार है- महिला सशक्तिकरण। भारत का संविधान दुनिया में सबसे अच्छा और समानता प्रदान करने वाले दस्तावेजों में से एक है। यह विशेष रूप से लिंग समानता को सुरक्षित करने के प्रावधान प्रदान करता है।

"नारी शक्ति है, सम्मान है, नारी गौरव है, अभिमान है,
नारी ने ही ये विधान रचा, उनको हमारा शत-शत प्रणाम है।"

महिलाओं के सामने समस्याएं : सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर अब तक भारतीय महिलाओं के सम्मान स्तर में काफी कमी आयी है, हालांकि आधुनिक युग में कई भारतीय महिलाएं कई सारे महत्वपूर्ण राजनैतिक तथा प्रशासनिक पदों पर पदस्थ हैं, फिर भी सामान्य ग्रामीण महिलाएं आज भी अपने घरों में रहने के लिए बाध्य हैं और उन्हें सामान्य स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं। आज महिलाएं अपने करियर को लेकर गंभीर हैं, हांलाकि महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है, जैसे दहेज प्रथा, यौन हिंसा, अशिक्षा, भ्रूण हत्या, असमानता, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, कार्य स्थल पर यौन शोषण, बाल मजदूरी, वैश्यावृति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढ़केलता है। महिलाओं को समाज में जिस बर्ताव और जिस हिंसा का सामना करना पड़ता है उसका एक भयानक रूप है- एसिड हमला। हाल ही में इस ज्वलन्त मुद्दे को सिनेमा में भी दिखाया गया है जो समाज को उनके दर्द को दिखा रहा है। पूरी दुनिया में लड़कियों और औरतों पर एसिड अटैक जैसी भयानकतम् वारदातों के साथ एक गंभीर प्रश्न कानून व्यवस्था के साथ बाजार का भी जुड़ा हुआ है। किसी भी पीड़ित के मन में ये सवाल पैदा होना लाज़िमी है कि क्या तेज़ाब जैसी संवेदनशील वस्तु की बिक्री और उपलब्धता बाजार में अन्य सामानों की तरह होनी चाहिए ? समाज में जिस तरह से उनके साथ बुरा बर्ताव किया जा रहा है और उन्हें अस्पृश्य बना दिया गया है वो अमानवीय है। आज इस एसिड अटैक की वजह से बहुत सारी लड़कियों और महिलाओं की जान जा चुकी हैं, लड़कियों और महिलाओं की ज़िंदगी बर्बाद हो चुकी है, बहुत सारी लड़कियां और महिलाएं आज बद-से-बदतर हालात में अपना

जीवन- यापन करने को मजबूर हैं। एसिड अटैक पर न्यायपालिका के साथ-साथ सरकार को अब ऐसे कुछ सख्त क़ानून बनाने चाहिए जो इस देश के साथ- साथ दुनिया के लिए एक ट्रेंड सेटर साबित हो। साथ ही ऐसा कोई कानूनी प्रावधान भी होना चाहिए जिसमें एसिड हमलों की शिकार महिला को सभी तरह की सुरक्षा और सुविधाएं सुनिश्चित हो।

महिला सुरक्षा का मुद्दा हो सर्वोपरि : हम आजाद देश के नागरिक हैं लेकिन ये कैसी आजादी है जहाँ पर महिलाओं को आज भी शाम होने के बाद बाहर निकलने में संकोच है। ज्यादा रात होने पर या हैदराबाद या निर्भया जैसी घटना को अंजाम देने से भी लोग बाज नही आते हैं। प्रश्न यह उठता है कि दिनदहाड़े हो या फिर रात के अंधेरे में, आखिर कोई महिला या बच्ची सुरक्षित क्यों नहीं है ? कहां है शासन और कानून ? ऐसी घटनाएं इसके बावजूद हो रही हैं तो ऐसे पत्थर हृदय नेता और अधिकारी किस मुंह से अपने पदों पर बैठे हुए हैं। वह वक्त था जब निर्भया कांड के समय सरकार को लोगों ने कठघरे में खड़ा कर दिया था लेकिन क्या आज हम ऐसा कर रहे हैं ? आज सभी बलात्कार को भी धर्म का रूप देने में लगे हैं तो वही कई लोग राजनीति की रोटी सेक कर अपनी वोट बैंक तैयार करने में लगे हैं। कैंडल मार्च से इस समस्या का समाधान नहीं होने वाला है। सिर्फ मोमबत्तियां जलाकर पुष्पाजंलि अर्पित करना सिर्फ एक मानसिक छलावा करने जैसे होगा, समस्या का निदान नहीं, न जाने कितनी मोमबत्तियां इसके पहले भी जलाई गयीं और श्रद्धासुमन अर्पित किया गए लेकिन परिणाम ज्यों-का-त्यों। बलात्कार जैसी घटनाओं से निजात पाने के लिए कानून का सख्ती से पालन करना होगा। सभी पोर्न साइट्स को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करना होगा। सामाजिक रूप से हर माँ-पिता का दायित्व बनता है कि अपने बच्चों को शिक्षा दें कि वह महिलाओं का सम्मान करे, उनका शोषण न करे क्योंकि ये जो लोग बलात्कार कर रहे हैं, वे हमारे समाज से ही निकल कर आते हैं। "अहिंसा हमारे जीवन का धर्म है तो भविष्य नारी जाति के हाथ में है।" महात्मा गाँधी का यह कथन महिलाओं की उपयोगिता को चरितार्थ कर रहा है। गांधी जी महिलाओं को सशक्तिकरण के विषय के रूप में नहीं देखते थे बल्कि उनका मानना था कि महिलाएं स्वयं इतनी सबल हैं कि खुद की ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। उनका कहना था कि अगर महिलाओं को आजाद होना है तो उन्हें निडर बनना होगा। परिवार और समाज के बंधनों को तोड़ते हुए उन पर थोपे गए अन्याय का विरोध करना ही उन्हें जुल्मों से मुक्ति दिला सकता है। उनका कहना था कि महिलाओं को अपने अधिकारों और कर्तव्यों का ज्ञान होना चाहिए। गांधी जी बराबर कहते रहे कि महिलाओं को सशक्त बनना है तो इसकी पहल परिवार से ही करनी होगी। गलत बातों को वह जब तक सहेगी उसके साथ जुल्म होता रहेगा। गांधी जी ने कहा था- जिस दिन से एक महिला रात में सड़कों पर स्वतंत्र रूप से चलने लगेगी, उस दिन से हम कह सकते हैं कि भारत ने स्वतंत्रता हासिल कर ली है। यहां महिलाओं को उपर्युक्त कानून बनाकर काफी शक्तियां दी गई हैं लेकिन ग्राउंड लेबल पर अभी भी बहुत ज्यादा काम करने की जरूरत है। इसके बावजूद महिलायें अपनी ज़िम्मेदारियां बखूबी और बेहद सुंदरता से और खास बात बगैर किसी अपेक्षा के निभाये जा रही हैं। भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलायी जाती हैं। इनमें से कई सारी योजनाएं रोजगार, कृषि और स्वास्थ्य जैसी चीजों के लिए चलायी जाती हैं। इन योजनाएं का गठन भारतीय महिलाओं के परिस्थिति को देखते हुए किया गया है ताकि समाज में उनकी भागीदारी को बढ़ाया जा सके। सचमुच नारी तो -"दुनिया की पहचान है औरत, हर घर की जान है औरत, बेटी, बहन, माँ और पत्नी बनकर घर-घर की शान है औरत।"

*ब्लॉक - A, गली नम्बर- 14/5, मकान नम्बर-238, कमल बिहार, कमाल पुर, संत नगर, बुराड़ी, नई दिल्ली।

रेशम वाणी

कहानी

पालने वाले पापा

रंगनाथ द्विवेदी*

आज थाने में अन्य दिनों की अपेक्षा कुछ कम काम था जिसे निपटाकर इंस्पेक्टर अंजली अपनी खाली कुर्सी पर बैठी उन दिनों की यादों में खो गई, जब वह एक मामूली और मैली-कुचैली सी फ्रॉक पहने एक झोले में रेलवे स्टेशन के बुक स्टॉल से कुछ कलम के पैकेट लेकर वे ट्रेन की विभिन्न बोगियों में कलम बेचा करती थी। अंजली के इस तरह ट्रेन की बोगी-दर-बोगी कलम बेचने के पीछे उसकी एक मजबूरी थी। वह मजबूरी कोई और नहीं बल्कि उसकी वह बीमार माँ थी जिसकी दवा खरीदने के साथ-ही-साथ उसे अपनी और अपनी माँ का खाली पेट भी भरना होता था क्योंकि उसके पापा एक लम्बी बीमारी की वजह से उसे और उसकी माँ को इस दुनिया में रहने के लिए अकेला छोड़कर चले गए थे। वह सुबह अपनी झोपड़ी से निकलती थी तो फिर शाम 7:00 बजे के बाद ही अपनी झोपड़ी और माँ के पास लौट पाती थी। एक तरह से अंजली को बचपन क्या होता है ? इसको समझने के लिए उसे कभी समय ही नही मिला। हां ! कभी-कभार जब उसे अपनी उम्र की अन्य लड़कियों को खेलते हुए या स्कूल जाते हुए देखती थी तो उसे एक पीड़ा सी होती थी लेकिन पीड़ा से किसी का पेट तो नहीं भरता। यही सोचकर अंजली अपने-आपको समझा लेती थी। इसी तरह अंजली एक दिन ट्रेन की एक बोगी में चढ़ी और सभी यात्रियों को वे कलम के पैकेट निकाल-निकालकर दिखाने लगी और उस कलम की खासियत के बारे में उन सभी को एक साथ बताने लगी । तभी अंजली को उसके एक कलम खरीदने वाले किसी ग्राहक ने अपने पास बुलाया तो अंजली ने अपने उस ग्राहक को यूं ही देखा जैसे कि वे अमूमन अपने अन्य कलम खरीदने वाले ग्राहक की तरफ देखा करती थी लेकिन जब उसके इस ग्राहक ने उसे बेटी कहकर बुलाया तो पता नहीं क्यों पहली बार अंजली को ऐसा लगा कि जैसे अगर आज उसके पापा जीवित होते तो शायद उसके इसी ग्राहक की तरह

प्यार से बेटी कहकर बुलाते। खैर ! उसकी किस्मत में यह कहा। तभी जब उसके उस ग्राहक ने उसे सम्बोधित करते हुए यह पूछा कि "बताओ बेटी कि तुम इस ट्रेन की बोगी में बैठे सभी यात्रियों से जो यह कहकर कलम के पैकेट पकड़ाती और उसके बढ़िया चलने के बारे में बताती जा रही हो, कि ले लो साहब ! यह कलम बहुत अच्छी चलती है। पर बेटी मुझे यह बताओ कि यह तुम्हें कैसे पता कि यह कलम बहुत अच्छी चलती है और लिखती है। क्या तुमने खुद कभी इस कलम को चलाकर या लिखकर देखा है।" तो अंजली ने अपने उस यात्री ग्राहक को बहुत ही ध्यान से देखा और बोली नहीं लेना है तो कोई बात नहीं साहब ! लेकिन मैं कभी स्कूल नहीं गई। अंजली ने जब स्कूल नहीं गई कहां तो जैसे उसके उस कहने से उसके स्कूल ना जा पाने की पीड़ा ना चाहते हुए भी उसके मासूम रूंधे गले से व्यक्त हो गई जिसे उसके उस अजनबी ग्राहक ने भली प्रकार से भाप लिया। उसने अंजली से यह पूछा– "बताओ बेटी ! क्या तुम पढ़ना चाहोगी ? अगर हां तो मुझे बताओ।" तो अंजली ने बहुत ही अनमने मन से कहा– नहीं साहब ! जबकि उसकी भी इच्छा थी कि वह अपने उस अजनबी ग्राहक से हां कह दे लेकिन वह क्या सोचेगा यही सोचकर वह अपनी कलम का पैकेट उस ग्राहक से लेना चाहा लेकिन यह क्या उस ग्राहक ने पूछा कि आखिर तुम क्यों नहीं पढ़ना चाहती बेटी ? इस बार अपने उस ग्राहक के बेटी सम्बोधन की वजह से अंजली अपने-आप को रोक नहीं पाई और उसने अपनी सारी सच्चाई उन्हें बता दी। तो उसके उस अंजाने कलम खरीदने वाले ग्राहक ने कहा कि अगर मैं तुम्हारी माँ से तुम्हारे पढ़ने के लिए बात करूं तो तुम्हें कोई दिक्कत तो नहीं होगी। उसने कहा, नहीं साहब ! मुझे क्या दिक्कत होगी। अंजली इतना कहकर अपने उस अंजान ग्राहक के साथ ट्रेन से उतरी और उतरने के बाद उसने अपने कलम के उस झोले को बुक स्टॉल वाले को जमाकर उस अनजान ग्राहक के साथ अपनी माँ और झोपड़ी की तरफ चल पड़ी। अंजली जब अपनी झोपड़ी के करीब पहुंची तो उसकी झोपड़ी के आस-पास कई सारे लोग और उस बस्ती की कुछ महिलाएं खड़ी थीं। उन्हें इस तरह अपनी झोपड़ी के पास खड़े देखकर अंजली को एक अजीब सा डर लगा और वह जब अपनी झोपड़ी के टिन और लकड़ी के फट्टे से बने जर्जर दरवाजे को धकेल कर अंदर गई तो अंजली चीख पड़ी। उसकी इस चीख को सुनकर उसका वे अजनबी ग्राहक भी उसकी झोपड़ी के अंदर आ गया। अंदर जब उसने एक टूटी हुई चारपाई पर मरी हुई महिला को देखा तो वे समझ गये कि अंजली की माँ यही औरत है जो कि अब जिंदा नहीं है बल्कि मर चुकी है। तभी अंजली बिना कुछ सोचे समझे उस अजनबी ग्राहक के सीने से लग कर रोने लगी। उस अजनबी ने भी अंजली को जी भरकर रो लेने दिया। जब अंजली रोकर कुछ सामान्य हुई तो उसने पूछा यह बताओ अंजली कि क्या तुम्हारा कोई करीबी या दूर का रिश्तेदार है ? अगर हो तो बताओ बेटी मैं उसे बुला दूँ । अंजली ने कहा नहीं मेरा दूर और करीब का कोई भी रिश्तेदार नहीं हैं। एक ले-देकर अकेली मेरे साथ मेरी माँ ही थी जो आज वह भी मुझे इस दुनिया में अकेले रहने के लिए छोड़कर चली गई। तभी उस अजनबी ने अंजली के सर और उसकी पीठ को ऐसे सहलाया जैसे किसी बिटिया को उसका पिता दुख की इस घड़ी में अपने पूरे वात्सल्य के साथ सहलाता है। फिर अंजली कुछ दिन वही रहकर अपनी माँ की आत्मा की शांति के लिए क्रिया-कर्म करके अपने उस अजनबी ग्राहक को अपने एक दूर का रिश्तेदार बताकर उनके साथ ट्रेन में बैठी और उनके मकान जो कि वाराणसी जैसे शहर में था, हमेशा के लिए रहने आ गई। तब मुझे पहली बार पता चला कि जिसे मैं एक अजनबी ग्राहक समझ रही थी, दरअसल उनका नाम दिग्विजय सिंह था जो कि मिलिट्री के एक बड़ी पद से रिटायर हुए थे लेकिन वह भी अपने मकान में बिल्कुल अंजली की तरह तन्हा और अकेले थे। कारण यह था कि किसी शादी से लौटते समय उनके पूरे परिवार का एक भीषण कार एक्सीडेंट हो गया था जिसमें इनकी पत्नी के साथ इनका इकलौता पुत्र भी ईश्वर को प्यारे हो गये थे। यह सब मुझे उस घर के नौकरों से पता चला और उस दिन मैं बहुत रोई। दूसरे दिन जब अंजली सुबह सो कर उठी तो दिग्विजय सिंह ने उससे बहुत ही प्यार से बिल्कुल अपनी बेटी की तरह पूछा कि उठ गई बेटी ! चलो जल्दी तैयार हो जाओ ! आज तुम्हारा स्कूल में एडमिशन भी तो कराना है। मैं तैयार होकर उनके साथ शहर के सबसे महंगे स्कूल में गई तो उस स्कूल को देखकर मैं अपने आँसू नहीं रोक पाई। रोक भी कैसे पाती, आखिर यह मुझ गरीब अंजली जैसी एक मामूली सी लड़की के लिए किसी सपने के सच होने जैसा था इसलिए मुझे अपनी किस्मत पर विश्वास नहीं हो रहा था लेकिन यह सच था उन्होंने ना सिर्फ उस स्कूल में मेरा एडमिशन कराया बल्कि उन्होंने पिता के कॉलम में बकायदा अपना नाम भी लिखा। उन्होंने उस दिन मुझे बाजार में तरह-तरह के ना सिर्फ नाश्ते कराये बल्कि एक पिता की तरह स्कूल ड्रेस, जूते,, मोज़े और कॉपी-किताब सब दिलाकर घर लौटे। मैं घर लौटते ही उनके सीने से लिपटकर खूब रोई फिर उन्होंने कहा कि– "अगर मेरी रानी बिटिया रोकर खाली हो गई हो तो वह अपने इस पापा के लिए थोड़ा सा हँस भी ले।" उन्होंने कुछ इस तरीके से कहा कि मैं हँसते हुए उनके सीने से लिपट गई। फिर वह हमेशा-हमेशा के लिए मेरे पापा हो गए और शायद मेरे खुद के जन्म देने वाले पापा होते तो वह भी मुझे इतना प्यार कभी नहीं दे पाते। इसी तरह मैं बड़ी होती गई और समय के साथ सब कुछ बदलता गया। मैं इंस्पेक्टर बनने के लिए कंपटीशन की तैयारी करने लगी क्योंकि मुझे ना जाने क्यों यह इंस्पेक्टर की नौकरी शुरू से ही बहुत ज्यादा पसंद थी और ईश्वर ने मेरा साथ भी दिया। मैं उस दिन जब सीढ़ियों से नीचे उतर रही थी तो पापा ने कहा, सुनो अंजली बेटा ! तो मैं हर रोज की तरह उनके पास गई और कहा - जी कहिए पापा ! तो उन्होंने कहा – बेटी ! मैं तुम्हें एक खुशखबरी देना चाहता हूं लेकिन पहले वादा करो कि तुम मेरा मुंह मीठा करवाओगी। अरे पापा ! यह भी कोई कहने की बात है। आप चाहे जब कहे मैं आपको बिना किसी खुशखबरी के ही मुंह मीठा करा सकती हूं क्योंकि मेरी सबसे बड़ी खुशखबरी तो आप ही हो पापा लेकिन पापा ने कहा कि नहीं बेटा ! आज ऐसा नहीं चलेगा तुम्हें जो खुशी मिली है उसे सुनकर मुझे यकीन है कि तुम खुशी से नाच उठोगी। अब मेरी भी उत्कंठा इस खुशी को जानने के लिए बढ़ गई और मैं सीधे पापा के पास पहुंची और बोली अब बता भी तो दो ना पापा ! क्यों परेशान कर रहे हैं अपनी मासूम बिटिया को और इतना कहकर अंजली ने झट अपने पापा के पीछे मुड़े हुए हाथ से पकड़े हुए लिफाफे को छीन कर जब उस लिफाफे को फाड़कर खोला तो उस लिफाफे में एक पत्र था जिसे पढ़कर वाकई में खुशी से झूम उठी। उस लिफाफे में मेरी इंस्पेक्टर की ट्रेनिंग का लेटर था लेकिन तभी मेरी सारी खुशी यह सोचकर काफूर हो गई कि जब मैं ट्रेनिंग के लिए अपने पापा से दूर चली जाऊंगी तो वे मेरे बगैर कैसे रहेंगे लेकिन तभी पापा ने कहा –मैं समझ सकता हूं बेटी कि इस समय तुम्हारी मन में क्या चल रहा है ? तुम यही सोच रही हो ना कि तुम्हारे बिना मैं अकेले आखिर कैसे रहूंगा ? तुम इसकी चिंता मत करो। अंजली बेटा तुम्हारे सामने तुम्हारा लक्ष्य है और किसी को भी अपने लक्ष्य पूरा करने के लिए थोड़ी परेशानी अवश्य होती है इसलिए तुम खुशी-खुशी जाओ और अपनी ट्रेनिंग कंप्लीट करो। मैं उसके दूसरे दिन ही

पापा के साथ ट्रेनिंग कैंप चली आई। मुझे पापा छोड़कर फिर घर चले गए। मैं पापा से प्रतिदिन शाम को 15 से 20 मिनट मोबाइल से बात कर उनकी हाल-चाल जान लिया करती थी। फिर मेरी ट्रेनिंग कंप्लीट हुई और मैं वाराणसी आ गई। मेरे आने के कुछ ही दिनों बाद पापा की तबियत अचानक खराब हुई और वह भी मुझे छोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए भगवान के पास चले गए। इसके बाद मेरी पहली नियुक्ति इलाहाबाद के एक थाने में इंस्पेक्टर के तौर पर हुई। फिर एक दिन अचानक मेरे पापा के बहुत ही करीबी मित्र आए जोकि एक एडवोकेट थे। मैं उन्हें चाय-नाश्ता कराने के बाद बोली और बताइए अंकल आप कैसे हैं ? तो उन्होंने कहा मैं तो ठीक हूं बेटी। बस ! एक जिम्मेदारी थी जिससे निवृत्त होने के लिए मैं आज तुम्हारे पास आया हूं ? दरअसल अंजली तुम्हारे पापा ने अपनी सारी चल-अचल संपत्ति का इकलौता वारिस अपने जिंदा रहते ही तुम्हें बना दिया था और मुझे अपनी कसम देते हुए बताया था कि कभी भी मैं उनके जिंदा रहते यह बात तुम्हें ना बताऊं। अब मैं उनके उस कसम से आजाद हूं इसलिए अंजली बेटी तुम अपनी अमानत को खुद संभालो। यह कहकर वकील अंकल ने सारे कानूनी कागजात मुझे सौंप दिए और मैं अपने उस पालन करने वाले पापा के घर को छोड़कर बाकी सारी संपत्ति, ऐसी लड़कियों के शिक्षा-दीक्षा के लिए दान कर दिया ताकि उस पुण्य आत्मा के पैसे से पढ़-लिखकर फिर कोई कलम बेचने वाली अंजली जैसी लड़की किसी थाने में इंस्पेक्टर अंजली बन सके। तभी थाने का अर्दली अंजली को बुलाता है मैम ! मैम ! उसकी तंद्रा भंग होती है और वह वर्तमान में लौट आती है। अर्दली पूछता है क्या हुआ मैम ? आज आपकी तबियत सही नहीं है क्या ? तो मुझे लगा कि मेरी आँखे थोड़ी-सी नम हो आई है जिसकी वजह से अर्दली को ऐसा लग रहा है। वह सामान्य हुई और झट बोली, नहीं ऐसा कुछ नहीं ! बस एक छोटा-सा कीड़ा आँख में चला गया जिसकी वजह से थोड़ी-सी आँख मलने की वजह से आँख में पानी भर आया।

*जज कॉलोनी, मियांपुर, जिला-जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

व्यंग्य

बेटी के ब्याह में बचत हेतु आजमाए हुए कुछ नुस्खे

ओम प्रकाश मंजुल'*

दूर के ढोल भले ही सुहावने न होते हों, पर दूर के दर्शन वास्तव में अच्छे होते हैं (मैं यहाँ केवल दूरदर्शन की बात नहीं कर रहा, वरन् दूर रखी या पड़ी हुई चीजों तथा दूर से दिखाई देने वाले लोग-लुगाइयों की बात भी रहा हूँ)। दूरदर्शन के व्यक्ति और वस्तु ही नहीं, विचार भी दूसरे से अच्छे लगते हैं। राष्ट्रीय दूरदर्शन के 'अब की बरस मोहे बिटिया ही दीजो' वाले विचार को ही देखें। वर्षों तक देखे-सुने जाने वाले इस जाने-माने नारे की जगह 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं' का नारा तब लाया गया जब हम जैसे किसी दुर्बुद्धि ने दिल्ली दूरदर्शन के दूरदर्शी नीति-निर्माताओं को दिशा-दर्शन कराया होगा कि 'भैया देश में पहले से ही जनसंख्या विस्फोट की स्थिति है, तो यह नारा देश और देश की नारियों, दोनों का स्वास्थ्य चौपट कर देगा।' बेटी के पक्ष में सरकार की एजेंसियाँ शोर-गुल कितना ही करें, पर बेटी वाले ही जानते हैं कि आज भी उन्हें बेटी के विवाह तक कितने पापड़ बेलने पड़ते हैं (पुड़ी-पिटौआ का बेलना तो तब तक जारी रहता है, जब तक बेटी ससुराल में रहते हुए बूढ़ी नहीं हो जाती है)। यहाँ मैं बेटी के ब्याह में बचत करने सम्बन्धी अनुभव में आये कुछ उन नुस्खों का उल्लेख कर रहा हूँ.... जिन्हें अपनाकर निकट भविष्य में अपनी बेटियों का विवाह करने वाले दम्पत्ति लाभ उठा सकते हैं। आप इस भ्रांति में न रहें कि अनिमंत्रित लोग, जो केवल विवाहोत्सव की शोभा बढ़ाने के लिए ही आये हैं, आपके व्यंजनों का भोग नहीं लगायेंगे। दुनिया में वस्तु और व्यक्ति दो ही प्रकार के होते हैं और लोगों की इनकी प्रति दृष्टिकोण भी दो प्रकार के होते हैं। कुछ लोग लिफाफा देकर भी भोजन नहीं करते, तो कुछ लोग बिना लिफाफा के ही भोजन करके जाते हैं। लिफाफा वालों में ऐसे अनेक मिल जायेंगे, जो आपके द्वारा आग्रह किए जाने के बावजूद भोजन नहीं करेंगे और कहेंगे, 'भाई साहब ! हम लड़की की शादी में भोजन नहीं करते।' ये लोग भोजन तक पहुँचने से पूर्व ही नाश्ता करके अपनी बोरी को ऊपर तक ठूँस लेते हैं। जहाँ तक लिफाफा वालों की बात है तो उनसे भोजन करने का आग्रह करने से पूर्व लिफाफा देखकर उसका मजमूं अवश्य भाँप लें। जैसे भागवत पढ़ने वाले व्यास यजमान का लिफाफा टटोलकर टेड़ी नजरों से चेक करके उसके वजन के अनुपात में ही यजमान को आशीर्वाद देते हैं, वैसे ही आप भी लिफाफे को टोहकर ही लिफाफे बाज को महत्व दें। हाँ, निरीनिरा लिफाफे की मोटाई पर भी मत जायें क्योंकि सौ की जगह दस के नोट रखकर लिफाफे को 10 गुना मोटा बनाया जा सकता है। ब्योहार में आये लिफाफों और खुले नोटों को लिखने के लिए लेखू के साथ एक टेंकू अवश्य बिठायें ताकि समाजवादी सिस्टम (लूट-खसोट) से पैसा सुरक्षित रहे। अक्सर ऐसा होता है कि इस मायावादी मेज के इर्द-गिर्द कुछ पतंगे उड़-फिर कर मंडराते रहते हैं कि कब मौका मिले और गोलमाल करें। "जीजा जी थोड़ी देर आप भी आराम कर लीजिए।" जाइए ! फ्रेश हो आइये।, जाइए ! आप भी थोड़ा नाश्ता कर आइये। तब तक आपका काम मैं देख रहा हूँ। दादा ! आप भी चाय-कॉफी पी आइये। इससे निश्चित रहें। इस तरह के मंगल वचन कहने वाले शुभचिंतकों से सचेत रहने के लिए अपने लेखू और टेंकू को पहले से ही सतर्क कर दें। इनमें हर समय 24 हजार वोल्ट चाल की चालूपन की बिजली चलती रहती है। बारात घर का मालिक आपका मित्र न हो तो उत्तम होगा। मित्र होने पर वह आपको अपेक्षित सुविधाएँ व श्रेष्ठताएँ तो न देगा (वह जानता है कि संकोचवश आप उससे कोई शिकायत नहीं कर सकते), पर आपको माल उचेलने के लिए वह फ्री-फ्री में सपरिवार ही नहीं, समुल्लाह पहुँचेगा। अपने घर और बैंक्वैट हॉल के पास-पड़ोस में रहने वालों को यथासंभव कम निमंत्रण दें। आप के पड़ोसी बाप का माल समझकर बिना 'चुल्हा-न्योते' के ही पूरे खानदान के साथ खाना

खाने पहुँच जायेंगे। हॉल के निकट रहने वाले आमंत्रित बहती गंगा पाकर बाल-बच्चों सहित हराम की डुबकी लगायेंगे। नेताओं को भी कम बुलायें। ये अपने पूरे लाव-लश्कर और तामझाम के साथ आकर माल पर हाथ साफ करते हैं और लिफाफा वही 151 का पकड़ाते हैं। हाँ, कवि जैसे साहित्यकारों को जरूर बुलायें। इनसे दो-दो लिफाफे मिल सकते हैं-एक मुद्रा वाला, दूसरा मुद्रण वाला (भले ही इनके सद्यमुद्रित ग्रन्थ की एम.आर.पी.सैकड़ों में हो और टी.आर.पी. डबल शून्य में हो)। हॉल के गेट पर आपके 2-4 ऐसे लोगों को पहरा जरूर हो, जो पास-पड़ोस के चेहरों से परिचित हों। ऐसे मौकों पर कुछ बहियात किस्म के लोग ऐसे बन-ठन कर आते हैं कि कन्या पक्ष और वर पक्ष, दोनों उन्हें एक-दूसरे के पक्ष का मानकर उन्हें नहीं छेड़ते। अलबत्ता, हॉल के पहरेदारें के सहारे कतई न रहें। सरकारी पहरे जितने ज्यादा होंगे, आपका माल उतना ही हड़पा जायेगा। ये लोग अपने मित्रों को ओब्लाइज करने के लिए एडवांस बुकिंग कर लेते हैं। उन महिलाओं की ओर विशेष नजर रखें जिनके साथ छोटे-छोटे बच्चे होते हैं और बच्चों के साथ में पॉलिथीन की छोटी-छोटी थैलियाँ होती हैं और इनके पास में मठरी, समोसा और हलुआ का स्टाल होता है। अपने पुराने ब्योहार के हिसाब से निमंत्रण न बाँटें। आजकल पुराने लोगों और पुराने नोटों की तरह पुराने ब्योहारों को भी भूलने की वयार चल रही है। वैसे भी पहले की बात अहले में गयी की कहावत है। संभव है, आपके ब्योहारियों की डेट एक्सपायर हो चुकी हो। संभव है जीवित होने पर भी वे अपनी जगह अपने लड़कों को भेज दें और आजकल के लड़के ? आप जानते ही हैं-लड़कों से गलती हो ही जाती है !

*प्रधानाचार्य, कामायनी काय स्थान, पूरनपुर-262122, जिला-पीलीभीत (उ.प्र.)

कहानी

आजादी का साक्षी झांसी का किला

अंजु अग्निहोत्री*

हमारे देश के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का साक्षी ग्रेनाइट और ईमारती पत्थर को जोड़कर निर्मित किया गया झांसी का ऐतिहासिक दुर्ग अपनी आन-बान-शान के साथ आज भी अपने अतीत की गौरव गाथा सुना रहा है। इस दुर्ग का निर्माण ओरछा नरेश वीर सिंह ने बंगरा की पहाड़ी पर सन् 1613 में कराया था। युद्ध की दृष्टि से झांसी का किला प्रदेश ही नहीं देश के सबसे मजबूत और बेहतरीन किलों में एक है। पहले झांसी को बलवंत नगर के नाम से जाना जाता था। सन् 1742 में किले पर मराठा सूबेदार नारू शंकर का आधिपत्य हो गया। महारानी लक्ष्मी बाई के ससुर व महाराजा गंगाधर राव के पिता शिवराम हरि ने सन् 1794-1814 के दौरान नगर के चारों ओर परकोटा बनवाया। सन् 1853 में महाराजा गंगाधर राव की मृत्यु के बाद किला रानी के अधिकार में आ गया लेकिन उन्होंने अंग्रेजों से स्वतंत्रता की खातिर किला छोड़ दिया तो अंग्रेजों ने अपना अधिकार कर लिया। साहित्यकार जानकी शरण वर्मा के अनुसार मराठी लेखक गोडसे ने अपनी पुस्तक 'माझा प्रवास' में लिखा है कि झांसी बड़ा ही सुंदर व रमणीक नगर है। पश्चिमी भाग में पहाड़ी पर किला बना है। उसके चारों ओर पानी से भरी खाई है और अंदर जाने का केवल एक रास्ता है। मुख्य महल सबसे ऊंचा है। बुर्जों के नीचे बड़े- बडे तहखाने हैं। 15 एकड़ में फैला झांसी दुर्ग सुदृढ़ एवं युद्धक रणनीति की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है। 15 एकड़ भूमि पर मुख्य दुर्ग व दुर्ग प्राचीर निर्मित है। इसके दो तरफ रक्षा खाई तथा कुल 22 बुर्ज है। दुर्ग का निर्माण तीन चरणों में हुआ। बुन्देल कालीन, मराठा कालीन निर्माण के बाद अंग्रेजों ने कुछ छोटे-मोटे परिवर्तन अंग्रेजी वास्तुकला के अनुसार कराये थे। दुर्ग को बारादरी, शंकरगढ़ व पंचमहल भागों में विभाजित माना गया है। नगर के चारों ओर बनाए गए परकोटे में 10 द्वार व चार खिड़कियां बनाई गई हैं। इन दरवाजों को खन्डेरा गेट, दतिया, उन्नाव, झरना, लक्ष्मी, सागर, ओरछा, सैनवर और चांद दरवाजों के नाम से जाना जाता है। किले में रानी झांसी गार्डन, शिव मंदिर और गुलाम गौस खान, मोती बाई व खुदा बक्श की मजार देखी जा सकती है। किले के अन्दर फांसी घर, तोप खाना, भण्डार गृह के अलावा एक गुप्त चोर रास्ता भी है इस रास्ते का प्रयोग युद्ध काल में किले से सुरक्षित बाहर निकलने के लिए किया जाता था। लेखक दत्रात्रेय बलवंत पारसनीस ने सन् 1857 का युद्ध देखा था। उन्होंने अपनी पुस्तक 'झांसी की रानी लक्ष्मी बाई' में लिखा कि किले में जगह-जगह 51 बड़ी तोपें रखी थीं। अंग्रेज अफसर ह्यूरोज ने लिखा कि किले में युद्ध की तैयारी का काम जैसे मोर्चा बांधना, बारूद व गोला देने का काम स्त्रियां करती थीं। झांसी एक ऐसा अपभ्रन्श शब्द है जिसे झांईसी कहा जाता था। यह नाम ओरछा नरेश ने दिया था। वक्त के कई थपेड़े सहने वाली झांसी में कभी जंगली आदिवासी रहा करते थे। पांचवीं शताब्दी में झांसी राजा हंस के अधिकार में आया और उनके पुत्र मिहिष गुला को हराकर एवं मारकर यहां पर राजा हर्षवर्धन ने अपना अधिकार जमा लिया। उस समय उत्तर भारत राजा हर्षवर्धन के अधीन था। सन् 1605 में अकबर की मौत के बाद वीर सिंह जू देव ओरछा के राजा बने जिन्हें झांसी के नामकरण का संस्थापक कहा जाता है। झांसी के नामकरण की कहानी के बारे में कहा जाता है कि एक दिन ओरछा के राजा वीर सिंह जू देव अपने मित्र जैतपुर नरेश के साथ किले के शिखर पर बैठे हुए थे तो वहां से उन्होंने झांसी का किला इशारे से बताया जिसपर जैतपुर महाराज बोले कि यह किला तो झाईसी (परछाई सी) दिख रहा है। नाम झांईसी पड़ गया था और अपभ्रंश होते-होते झांसी हो गया। मराठा शासन और विद्रोह झांसी को 1822 में रामचंद्र राव को सूबेदार के पद से बदलकर अग्रेजों ने राजा कहलाने की उपाधि दी किन्तु उनका शासन वेहद कमजोर रहा और वह 20 अगस्त, 1835 को बिना किसी संतान के वे परलोक सिधार गए जिनकी समाधि आज खण्डेराव गेट बाहर तहसील के पास जीर्ण-शीर्ण हालत में पड़ी हुई है। रामचंद्र के मरने के बाद उनके दत्तक पुत्र कृष्ण राव रिश्तेदार नारायण राव शिवराम भाऊ के दो उत्तराधिकारी रघुनाथ राव और गंगाधर

राव थे। गंगाधर राव का शासन बहुत अच्छा रहा। इसी दौर में उनकी पत्नी लाल बाई का देहांत हो गया था। झांसी नरेश की दूसरी शादी बिठूर के मोरोपंत की लड़की छबीली मनू बाई से हुई। अपना राजवंश चलाने के लिए झांसी नरेश ने गुरसराय के नेवालकर परिवार से एक लड़का गोद लिया जिसका नाम दामोदर राव रखा गया। 21 नवम्बर, 1853 में गंगाधर राव की मौत के बाद झांसी की रानी लक्ष्मी बाई पर एक बार फिर तुषारापात हो गया। अंग्रेजों ने दामोदर राव को झांसी का राजा मानने से इंकार कर दिया और झांसी पर कब्जे की बात करने लगे। रानी ने अपनी झांसी देने से इंकार कर दिया। कोई उत्तराधिकारी न होने की वजह से झांसी राज्य को ब्रिटिश सरकार ने अपने अधिकार में लिया और रानी लक्ष्मी बाई को खर्च चलाने के लिए पांच हजार रुपए मासिक पेंशन बांध दी। सन् 1854 से 57 तक झांसी में अशांति का दौर रहा। 1 जून 1857 से झांसी में विद्रोह शुरू हुआ। 6 जून को रानी और विद्रोहियों की एक सभा हुई जिसमें तय किया गया कि महल में रहने वाले अंग्रेजों को मार दिया जाए। बारहवीं रेजीमेण्ट कैप्टन डनलप के संरक्षण में थे। जेलगार्ड बक्शीश अली ने कैप्टन स्केन को मार गिराया पूरे नगर में कत्लेआम मचा था। जहां आज पुराना बस स्टैण्ड है वहां पर अंग्रेजों का मेमोरियल बना हुआ है, 11 जून तक यह विद्रोह चला। 10 अगस्त को ओरछा के दीवान ने झांसी पर चढ़ाई कर दी। बानपुर के राजा के हस्तक्षेप पर दीवान नत्थे खां को धेराबंदी हटानी पड़ी। 1 मार्च को ओरछा की फौज पर आक्रमण करके बेतवा और धसान के क्षेत्र में खदेड़ दिया। यह वो समय था जब रानी दुर्गा के रूप में उभरकर सामने आई। शहीद हुए कई सिपाही 24 जनवरी को जनरल ह्युरोज के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने एकबार फिर झांसी पर चढ़ाई शुरू की और 21 मार्च से ह्युरोज ने झांसी का घेरा शुरू किया। अंग्रेजी सेना के सर्जन डाक्टर सिल्वेस्टर ने लिखा है कि ग्यारह मील क्षेत्रफल के परकोटे पर हर तरफ तोपें थीं। 21 मार्च को एक और दस्ता चन्देरी से आया। बेगम भोपाल ने तोपखाना भेजा। अंग्रेजी सेना ने खाइयां खोदकर तोपों को लगाया। आक्रमण दो ओर से किया गया शहर के पश्चिम की तरफ से। जीवन शाह के टीले पर तोपें चढ़ाकर किले में आक्रमण किया गया जिनके गोले झांसी के किले के भीतर गिरते थे। नत्थे खां के आक्रमण का भी यही रुख था। महारानी लक्ष्मीबाई का यह बिद्रोह अपने राज्य के लिए नहीं अपितु स्वतन्त्रता का जय घोष था। इस बात की झलक बानपुर के राजा मर्दन सिंह को कुवार सुदी 14 संवत 1914 (1857 ई0) के उनके पत्र से मिलता है जो इस प्रकार है- श्री महाराजा श्री राजा मर्दन सिंह बहादुर जू देव एते श्री महारानी श्री रानी लक्ष्मी बाई जू देवि कै बाचनै आपर अपुन के समाचार भले चाहिजें, इहां के समाचार भले है, आपर पाती दिवान गनेश जूल आये सो पढ़कर खुई भई। आपर अपुनकी व हमारी राजा शाहगढ़ और नाना साहब व तात्या टोपे की जो सलाह परी थी कै सुराज भयो चाहिजें, अंग्रेजन को शासन न भओं चाहिजें, ऐसी हमारी राय है के सुराज होवो चाहिजें, भारत अपनी ही देश है और बानपुर के किले में अपुन ने तोपें व गोला ढरवाये है। ई बात का विदेशियों का जाहर नहीं भजो चाहिजें आपसे टीकमगढ़ की रानी लड़ई सरकार व नत्थे खां दीवान विदेशियों की मदद में है, ई बात में ज्यादा खियाल रखने है और इह बात जो है सो दिवान गनेशजू जाहर कर हे सो जानवी, पाती समाचार देवे में आवे-मु. झांसी" मुहर। उक्त पत्र से स्पष्ट है कि पूर्ण राष्ट्रीयता की भावना से रानी अन्य क्रान्तिकारियों से परामर्श कर रही थी और युद्ध की तैयारी की इच्छा शक्ति कितनी उच्च थी इसका परिचय कालपी से राजा मर्दन सिंह को लिखे पत्र की इन पंक्तियों से मिलता है- "सो आप सीधे नोट घाट पर सर ह्यूरोज की फौजे को मारत खेबड़त कालपी कूच करें इहां से हम आप सब जने मिल के ग्वालियर में अंगरेजन पर धावा करें, जब देर न करना चाहिजें।" उस उदात्त मना रानी ने झांसी वासियों में प्राण फूँक दिये थे। रानी का एक ही नारा था- "मैं अपनी झांसी ना देहौं" (मैं अपनी झोसी नहीं दूंगी) 'लक्ष्मी बाई रासो' के रचयिता मदनेशजी ने उनकी निष्ठा, लक्ष्य और समर्पण को इन शब्दों में लिखा है-

ना जान रानी मोय, सब राज तुमरो होय।
मोय दूर भये दियौ खान, अख्त्यार तुमहि सबान॥
सुन बाई लक्ष्मी बैन, भर आये सबके नैन।
ना मातु बिलखुं होउ, हमें जान निज सुत सोउ॥

22 मार्च को किले की घेंराबंदी कर आक्रमण कर दिया। इस हमले में रानी के कई जांबाज सिपाही मारे गए जिसमें गुलाम गौस खां, खुदा बख्श, मोती बाई जैसे वीर और वीरांगनाएं शामिल थे, मारी गईं। हमले के बाद रानी बची हुई फौज को लेकर कालपी की ओर निकल गई और ग्वालियर पहुंच गई। यहां पर उन्होंने सिंधिया नरेश से अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में सहयोग मांगा

जिसे सिंधिया ने इंकार कर दिया और ग्वालियर में युद्ध छिड़ गया तथा सिंधिया आगरा की ओर भाग गए। इसके बाद फूलबाग में एक शानदार जश्न मनाया जा रहा था जिसको देखकर रानी क्रोधित हो गई और उन्होने कहा कि यह समय नाचने-गाने का नही है बल्कि रणनीति बनाने का है। उसी समय अंग्रेजों ने एकबार फिर रानी की सेना पर हमला कर दिया। रानी पूरी बहादुरी के साथ लड़ी। उनका घोड़ा सोना नाले के पास जख्मी होकर गिर गया और अंग्रेजों की रानी से काफी मुठभेड़ हो गई तथा रानी जख्मी हो गई और उनकी मौत हो गई। झांसी के इस ऐतिहासिक "बुन्देलों हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी खूब लड़ी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी" सुभद्रा कुमारी चौहान की ये पंक्तियां बुन्देलखंड के गढ़ माने वाले झांसी के संघर्षशील इतिहास को सटीक परिभाषित करती हैं। 1857 में झांसी की रानी लक्ष्मी बाई ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार करने के स्थान पर उनके विरुद्ध संघर्ष करना उचित समझा। वे अंग्रेजों से वीरतापूर्वक लड़ी और अन्त में वीरगति को प्राप्त हुईं। झांसी का दुर्ग रानी लक्ष्मी बाई की वीरता की सुनहरी याद को आज भी याद दिला रहा है। दुर्ग पर लहर-लहर लहराता तिरंगा वीरता को चहु दिशा से दिखा रहा है।

*ए-305, ओ.सी.आर. बिल्डिंग, विधानसभा मार्ग, लखनऊ।

लघु कहानी

मदद करने वाले हाथ

महेश कुमार केशरी*

बुढ़िया बीमार तो नहीं है। हाँ, दिनभर तो ठीक ही दिखती है। काम-धाम भी समय से कर लेती है। हाँ, लेकिन इधर कुछ दिनों से ज्यादा ही खाँस रही है। रात-बिरात बुढ़िया जब ज्यादा खाँसने लगती है तो चंदन की नींद उचट जाती है और तब उसे सारी रात नींद नहीं आती। बुढ़िया को चंदन परोक्ष रूप में बुढ़िया कहता है। सामने से जब भी मिलती है तो वो उनको माई ही कहकर सम्बोधित करता है। खाँय-खाँय की आवाज से चंदन की नींद खराब हो जाती है। इसके लिए वो नहीं चिढ़ता बल्कि उसकी चिंता कुछ दूसरे किस्म की है। वो पेशे से कामगार है। कंपनी की होर्डिंग लिखता है, शहर-शहर घूमकर। पिछले साल राजस्थान में था। उस समय एक ऐसी ही बुढ़िया माई उसे मिली थी। इसी बुढ़िया माई की तरह। फर्क सिर्फ इतना था कि वो दूसरे मजहब की थी। मुसलमानी। लेकिन, चेहरे-मोहरे में इसी बुढ़िया माई की तरह थी। नाम था रजिया। एकदम बुढ़िया माई की तरह ही गोरी-चिट्टी और दुबली-पतली लेकिन काम करने में फरहर (तेज) थी। उसे साल भर पहले की बात अच्छी तरह याद है। जब वो बाड़मेर में फँस गया था। तब कोविड की दूसरी लहर चल रही थी। बहुत ही भयंकर समय था। आदमी-आदमी से नफरत करने लगा था। तब बुढ़िया रजिया ने उसे दसियो दिन खाना खिलाया था। उसे भी वो रजिया चाची ही कहता था। चंदन ने तो मजाक-मजाक में एकबार कहा भी था-रजिया चाची, मैं दूसरे धर्म का हूँ। मेरे रोटी खाने से धर्म नहीं बिगड़ जायेगा। तब रजिया चाची ने कहा था - रोटी का कौनों धरम होता है क्या बेटा ? इंसान मुसीबत में हो तो वो धरम नहीं देखता। फिर, भूख का भी तो कोई धरम नहीं होता। क्या तुम्हारी और क्या मेरी भूख ? सबकी भूख तो एक जैसा ही है। हमको तो अक्षर ज्ञान भी नहीं है, बेटा। ज्यादा पढ़ी-लिखी भी नहीं हूँ लेकिन धरम सियासतदानों के लिए है और वे हमें आपस में लड़वाने के लिये ही इसका इस्तेमाल करते हैं और अंतत: उसी रात चंदन ने तय कर लिया था कि कल सुबह वो बुढिया माई के लिए खाँसी का सिरप लेकर आयेगा। लेकिन क्या वो खाँसी का सिरप उससे लेगी। इस निष्ठुर दुनिया में बुढ़िया माई का कोई नहीं था। बच्चों ने बुढ़िया माई को घर से निकाल दिया था। बुढ़िया माई दूसरों के घरों में झाड़ू-बर्तन करके किसी तरह गुजारा करती थी। अगले दिन वो खाँसी का सिरप लेकर आया तो मंजू चौंक पड़ी और चंदन से पूछा ये खाँसी की सिरप किसके लिए लेकर आये हो.. ? बुढ़िया माई के लिए। चंदन कुर्सी पर सिरप रखते हुए बोला। बुढ़िया माई से क्या तुम्हारा कोई रिश्ता है ? "मंजू आश्चर्य से चंदन की ओर ताकते हुए बोली। अचानक से चंदन को रजिया चाची याद आ जाती। वो रजिया चाची के बारे में सोचता है तो उसे बुढ़िया माई याद आ जाती है। क्या इन दोनों में कोई सम्बन्ध है ? फिर वो धरम-करम से ऊपर उठकर सोचता है तो उसे एक ही बात समझ आती है, धरम-जाति तो इंसान अपनी कुंठा के कारण गढ़ता है, नफरत करने के लिये। जब वो मूढ़ हो जाता है। नितांत स्वार्थी। समाज और देश से परे अपना अस्तित्व समझने लगता है। फिर ये सियासतदानों का काम है। मदद करने वाले हाथ का कोई धरम नहीं होता। उसका तो बस एक धरम होता है, इंसानियत का धरम। रजिया से चंदन का कोई रिश्ता था क्या ? जो रजिया ने परदेश में चंदन की मदद की। फिर बुढ़िया माई से उसका क्या कोई रिश्ता है ? अगर कोई रिश्ता नहीं है तो वो क्यों जब कोई अच्छी चीज पकाती है तो उसके और मंजू के लिये ले आती है। चंदन ने सिरप उठाया और बुढ़िया माई के घर चल पड़ा। बुढ़िया माई घर पर ही मिल गई। "बुढ़िया माई, ये खाँसी की सिरप तुम्हारे लिये लेकर आया हूँ। दो-दो चम्मच रोज पीना। खाँसी जड़ से खत्म हो जायेगी। चंदन मुस्कुराते हुए बोला। बुढ़िया माई एक अनचिन्हें और नये रिश्ते को ताक रही थी। उसके अपने बच्चों ने उसे घर से निकाल दिया था लेकिन ये चंदन तो उसका अपने सगे रिश्ते से भी बड़ा निकला। बुढ़िया माई के हृदय से जैसे आशीर्वाद का सोता फूट पड़ा था।

*मेघदूत मार्केट फुसरो, बोकारो, झारखंड।

लघु कहानी

मैंने पा लिया

मृत्युंजय कुमार मनोज*

दिल्ली के 'रॉयल फार्मा कम्पनी' का पटना ब्रांच। उसके बॉस के.के. गोयल की पी.ए. करिश्मा ने शर्माजी को संदेश भिजवाया। 'सर, क्या में अंदर आ सकता हूँ ?' शर्मा जी ने पूछा। 'आइए शर्माजी, प्लीज़ बी सीटेड। मैं आपकी मेहनत और निष्ठा से बहुत प्रसन्न हूँ। आपने पिछले साल बहुत अच्छा परफॉर्म किया है। इसलिए मैंने आपको प्रोमोशन के साथ हरियाणा में एरिया मैनेजर बनाकर ट्रान्सफर करने का फैसला किया है। आर यू हैप्पी और नॉट' -गोयल जी ने कहा। 'जैसी आपकी आज्ञा। मेनी मेनी थैंक्स सर' - शर्मा जी ने कहा। 'लेकिन इस बात को अभी अपने तक सीमित रखिएगा '- गोयल जी ने समझाते हुए कहा। 'कुछ बात है मिश्राजी। आपने शर्माजी को आज देखा है। जब से बॉस के केबिन से बाहर निकले हैं, बड़े खुश लग रहे

हैं' - ऑफिस के स्टाफ राकेश वर्मा ने कहा। 'हाँ भाई। सुना है बॉस मेहरबान हैं'- मिश्रा जी ने हामी भरते हुए कहा। 'कम्पनी में नए साल में कई प्रमोशन होने वाले हैं, हरियाणा में एरिया मैनेजर के लिए कई लोग लगे हुए हैं। देखते हैं किसकी किस्मत खुलती है' - राकेश जी ने कहा। आर.के.शर्मा रॉयल फार्मा कम्पनी में 'एम. आर.'(मेडिकल रिप्रेजेन्टेटिव) हैं। राकेश जी और शर्मा जी दोनों कम्पनी में सात साल से एम. आर. के पद पर कार्यरत् हैं। शाम को शर्माजी 'दिलखुश स्वीट्स' के दुकान से समोसे और जिलेबियाँ लेते हुए अपने घर पहुँचे। 'कांता डार्लिंग, कहाँ हो ? प्रभु ने हमारी सुन ली। दिलखुश के समोसे, जिलेबी लाया हूं' - शर्मा जी ने कहा। 'क्या हुआ ? क्यों शोर मचा रहे हैं ? बड़े खुश लग रहे हैं' -कांता ने पूछा। शर्मा जी ने ऑफिस में दिनभर हुए घटनाक्रम के बारे में अपनी पत्नी को बताया। 'कल मंदिर जाकर मन्नत उतारूंगी। उनकी कृपा से ही यह अच्छी खबर सुनने को मिली है' - कांता ने कहा। 'जब तक प्रोमोशन लेटर नहीं मिल जाता है तब तक यह बात किसी को नहीं बताना। अपनी फास्ट फ्रेंड रमा को भी नहीं। तुम्हारे पेट में बात नहीं पचती है' - शर्मा जी ने कांता को समझाते हुए कहा। 'सुनिए, सबसे पहले बैंक का पर्सनल लोन चुकता करेंगे' - कांता ने कहा। 'नहीं, पहले बिट्टू को क्रिकेट अकादमी में और पंखुड़ी को डांस स्कूल में एडमिशन कराएँगे, दो साल से टाल रहे हैं' -शर्माजी ने कहा। नहीं, नहीं ...हाँ...हाँ ... , बहस होने लगी। 'पापा, मम्मी प्लीज शांत हो जाइए। आप लोगों के बहस के चक्कर में समोसे ठंडे हो रहे हैं'-पंखुड़ी ने कहा। मीडिल क्लास फैमिली में अचानक मिली मनचाहे खुशी की खबर-मात्र उत्सव का माहौल बना देती है और बात यदि पैसे की हो तो सारे सपनों को पंख लग जाते हैं। बहस और शोरगुल माहौल में आशा और जोश का संचार करते हैं। ॐ जय जगदीश हरे... पापा आपका मोबाइल रिंग हो रहा है। 'बधाई हो, शर्माजी। छुपे रुस्तम निकले। प्रोमोशन हो गया और बताया भी नहीं। पार्टी के बिना बात नहीं बनेगी। ऑफिस में थोड़ा व्यस्त था इसलिए वहाँ मिल नहीं सका' - मेहता जी ने कहा। 'बधाई किसलिए ? समझ नहीं पाया'- शर्माजी ने अनजान बनते हुए कहा। 'चलो, आप बताना नहीं चाहते। कोई बात नहीं'- कल ऑफिस में मिलते हैं'- मेहता जी ने कहा। पता नहीं कल क्या होगा ? ख़बर पहले ही उड़ गई। शर्माजी सोच में पड़ गए। फ़ोन कट होते ही होने वाले सैलरी बढ़ोतरी को लेकर कांता के साथ प्लानिंग शुरू हो गई। अभी पच्चीस हजार रुपए महीने सैलरी और इंसेंटिव मिलाकर पैंतीस हजार रुपए तक शर्माजी कमा लेते थे। एरिया मेनेजर की तनख्वाह चालीस हज़ार रुपए थी और इंसेंटिव अलग से। शर्मा जी के लिए यह सब एक सुखद स्वप्न जैसा था क्योंकि पिछले सात साल से वे एम. आर. के पद पर कार्यरत् थे। उनकी मेहनत और निष्ठा की सभी चर्चा करते थे किंतु कभी साहब की मेहरबानी नहीं हुई लेकिन शर्माजी अंदर से कुछ डरे हुए भी थे क्योंकि इस प्रमोशन के लिए कई कर्मचारी लगे हुए थे। शर्माजी ने एक खुशी और अजीब -सी बेचैनी के बीच वह रात गुजारी। अगली सुबह... शर्माजी ने बाइक स्टार्ट की और ऑफिस चल पड़े। ऑफिस पहुँचकर शर्माजी अपने काम में लग गए और बड़ी बेसब्री से एडमिन ऑडर का इंतजार करने लगे। कुछ देर बाद एडमिन ऑर्डर निकला। लेकिन शर्माजी एडमिन ऑर्डर की कॉपी देखकर सन्न रह गए। उनकी जगह उनके परम मित्र राहुल सक्सेना को प्रोमोशन दी गई थी। शर्माजी को इसकी भनक तक नहीं लगी। समझ नहीं पाए, खुश हों कि दुखी हों। राहुल और शर्माजी एक ही साथ कम्पनी में एम.आर.के पद पर नियुक्त हुए थे। पटना के शास्त्री नगर मुहल्ले में दोनों पड़ोस में रहते हैं। दोनों के परिवारों में गहरी दोस्ती है। दोनों परिवार सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ देते हैं। कांता और राहुल की पत्नी रमा में सगी बहनों जैसा प्यार है। ऑफिस में भी सभी लोग उनकी दोस्ती के कायल हैं। उस समय राहुल ऑफिस के काम से मार्केट में निकला हुआ था। शाम में। 'बहुत-बहुत बधाई हो राहुल' -शर्मा जी ने राहुल जी को विश करते हुए कहा। 'थैंक्स शर्मा जी। आई डिजर्व इट' -राहुल जी ने कॉन्फिडेंस से कहा। शाम में शर्मा जी रास्ते भर बड़े कश्मकश में घर पहुँचे। घर पहुँचते ही पत्नी ने गरमा-गरम पकोड़े और चाय के साथ शर्माजी का स्वागत किया। 'कब जाना है। उससे पहले कल हनुमान मंदिर में प्रसाद चढ़ाने चलेंगे'- कांता ने कहा लेकिन जैसे ही शर्माजी ने दिनभर का वृत्तांत सुनाया, उनकी पत्नी क्रोध से लाल हो गई। 'तभी दोपहर में रमा बड़ी इतरा कर चल रही थी। मैंने टोका, तो सीधे मुँह देखा तक नहीं। भगवान सब देख रहा है। दूसरे का हक मारने वालों का कभी भला नहीं होगा। ऐसे दोस्त से दुश्मन भले' - कांता गुस्से में बोले जा रही थी। 'राहुल के डॉक्टर जीजा जी और मेरी कम्पनी के बॉस का आपस में उठाना-बैठना है। शायद इसी कनेक्शन के कारण, कारण... - शर्मा जी कांता को बता रहे थे। अगले दिन ऑफिस में। 'आज दोपहर में मैंने एक छोटी-सी पार्टी रखी है। जरूर आना। तुम्हारे बिना पार्टी में रौनक नहीं आएगी'- राहुल जी ने शर्मा जी को इन्वाइट करते हुए कहा। पार्टी में, 'मेनी मेनी थैंक्स टु ऑल ऑफ यू। मैं जानता था आई डिजर्व दिस। मैंने पा लिया...' -राहुल जी पार्टी में बोल रहे थे। वहाँ उपस्थित दूसरे लोगों की निगाहें शर्मा जी को ढूंढ रही थीं।

*निराला एस्टेट, टेकजोन -4, ग्रेटर नोएडा (पश्चिम), उत्तर प्रदेश।

रेशम वाणी

कहानी

रास्ते और भी हैं

नमिता सिंह 'आराधना'*

आज फिर नीरू की आलोक से कहा सुनी हो गई। अब तो यह तकरीबन रोज की ही बात होती जा रही थी। बात-बात में आलोक चिढ़ जाता। घर की कोई जिम्मेदारी लेना ही नहीं चाहता था। बाजार से फल, सब्जी लाने की बात हो या फिर बेटे सौरभ के स्कूल का कोई काम हो, सभी जिम्मेदारियाँ नीरू अकेले ही निभाती थी। वैसे तो घर का सामान ऑनलाइन आ जाता था लेकिन फल और सब्जियाँ वे कई बार बासी ले आते। इस कारण नीरू स्वयं बाजार जाकर उनकी खरीददारी करती थी। आखिर स्वास्थ्य का सवाल था। इसके अलावा सौरभ का होमवर्क करवाना, उसे तैयार कर स्कूल भेजना भी नीरू की ही

जिम्मेदारी थी। कल गलियारे में रखे स्टूल से उसके पैर में चोट लग गई थी। दर्द काफी था। इसीलिए उसने आलोक से ऑफिस से लौटते समय सब्जी और फल लाने की बात की तो वह बुरी तरह बिफर गया। "मेरे पास कहाँ इतना टाइम होता है कि मैं सब्जी मार्केट जाकर तुम्हारे लिए फल और सब्जियाँ खरीदता फिरूँ।" "मेरे लिए ? क्या सिर्फ मैं ही फल और सब्जियाँ खाती हूँ ? तुम लोग नहीं खाते ? मेरे पैर में चोट लगी है, दिखता नहीं तुम्हें ?" "सँभल कर चला करो, चोट कैसे लग जाती है ?" "तो क्या मैंने जान-बूझकर अपना पैर स्टूल पर दे मारा ?" नीरू का गुस्सा भी सातवें आसमान पर जा पहुँचा। उसके चोट के बारे में पूछना तो दूर, आलोक ने हड़बड़ाते हुए अपना बैग उठाया और घर से निकल गया। नीरू दुख और अपमान से तिलमिलाकर रह गई। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। मूड इतना ऑफ हो गया कि ऑफिस जाने का भी मन भी नहीं किया। फोन करके उसने ऑफिस से छुट्टी ले ली। बेडरूम में जाकर लेटी तो पिछली कई बातें उसके जेहन में कौंधने लगीं। पिछले शनिवार को ही सौरभ के स्कूल में पैरंट टीचर मीटिंग थी। हर बार नीरू अकेले ही उस मीटिंग में जाती थी लेकिन पिछले शनिवार को ऑफिस में बड़े बॉस आने वाले थे। इसीलिए उसका ऑफिस में होना जरूरी था। उसने आलोक को मीटिंग में जाने को कहा तो इस पर आलोक ने बवाल मचा दिया। कहने लगा कि पैरंट टीचर मीटिंग में नीरू का भी जाना कितना आवश्यक है लेकिन वह यह भूल गया कि आज तक वह एक या दो ही पैरंट टीचर मीटिंग में उपस्थित रहा होगा। हर महीने नीरू ही समय निकालकर अकेले पैरंट टीचर मीटिंग अटेंड किया करती थी। तब तो नीरू ने उससे कभी कुछ नहीं कहा। अपनी गलतियों को छुपा जाना और हर इल्जाम नीरू के सिर मढ़ देना उसकी आदत बन गई थी। अगर उसके दोस्त नहीं बन पाए तो उसकी वजह नीरू है। कोई रिश्तेदार अगर उससे बात नहीं करता है तो उसकी भी वजह नीरू है। ऑफिस में प्रमोशन नहीं मिला तो उसकी वजह भी नीरू है। नीरू की समझ में यह कभी नहीं आया कि भला वह कैसे हर बात की वजह बन जाती है और तो और कभी नीरू प्रतिवाद करती तो वह अपना शारीरिक बल प्रदर्शन करने से भी बाज नहीं आता। बेटे के लिए मन पर पत्थर रखकर वह अपने बिखरे वैवाहिक जीवन को समेटने की कोशिश करती रहती। इस कलह का असर सौरभ पर भी पड़ने लगा था। वह भी डरा-सहमा सा रहता। उसका स्वयं का आत्मविश्वास और व्यक्तित्व भी खोता जा रहा था। घर की सारी जिम्मेदारियाँ उठाने के बावजूद आलोक उसे गैर-जिम्मेदार और बेवकूफ ठहराता रहता। विचारों के आवेग से वह उद्विग्न हो उठी। उसे लगा कि अब वह घर में एक पल भी रही तो उसका सिर फट जाएगा। अत: कार लेकर वह घर से निकल पड़ी। पैर में उसने पट्टी करवा ली थी और दर्द नाशक दवाइयों के कारण उसे अभी दर्द महसूस नहीं हो रहा था। शहर की भीड़-भाड़ और शोर-शराबे से तंग आकर उसने कार शहर से बाहर जाने वाली सड़क की ओर मोड़ दिया। शहर से बाहर की सड़क पर इक्का-दुक्का गाड़ियाँ ही आ जा रही थी। तभी उसकी नजर गाँव की एक स्त्री पर पड़ी जो गोद में बच्चा लिए, सिर पर लकड़ी का बोझ उठाए जा रही थी। सूरज आग उगल रहा था। ऐसी क्या मजबूरी रही होगी उस स्त्री की, कि इस भीषण गर्मी में वह अपने छोटे से बच्चे को लेकर सड़क पर अकेली जा रही है। वैसे बात इतनी बड़ी भी नहीं थी। शायद वह किसी मजदूर वर्ग की स्त्री होगी जिसके लिए यह साधारण सी बात थी लेकिन नीरू के मन में न जाने क्या आया, उसने अपनी कार धीमी की और उस स्त्री के पीछे-पीछे चल पड़ी। थोड़ी दूर चलने के बाद वह स्त्री बाईं ओर एक कच्ची सड़क पर मुड़ गई। नीरू ने भी अपनी कार उधर मोड़ दी। थोड़ी दूर पर एक छोटी सी बस्ती दिखाई दे रही थी। उस बस्ती के सबसे पहले मकान में उस स्त्री ने प्रवेश किया। शायद यह उसका घर था। मकान भी क्या था, ईंट और मिट्टी की दीवारें और फूस की छत की झोपड़ी थी। दरवाजे के नाम पर टिन का एक चदरा था ताकि कोई जानवर आसानी से अन्दर प्रवेश न कर पाए। नीरू ने कार रोकी और उतर कर उस झोपड़ी के दरवाजे की और बढ़ी। टिन के दरवाजे से अंदर झाँका। बच्चा झोपड़ी के एक कोने में बैठा मिट्टी के एक खिलौने से खेल रहा था। झोपड़ी के दूसरे कोने में मिट्टी का एक चूल्हा था जिसमें स्त्री लकड़ियाँ सुलगाने की कोशिश में लगी थी। चूल्हे पर एक पतीला रखा था। शायद भोजन बनाने की तैयारी चल रही थी। तभी बच्चे ने नीरू को देख लिया और मुँह से कुछ अस्पष्ट सी आवाजें निकाली जिसे सुनकर उस स्त्री ने पीछे पलट कर देखा। आश्चर्य से नीरू को देखते हुए वह दरवाजे तक आई। "आप कौन ? मुझसे कुछ काम था क्या ?" उस स्त्री ने आश्चर्य मिश्रित स्वर में पूछा। "नहीं ... वो मैं इधर से गुजर रही थी... इतनी गर्मी में तुम्हें सड़क पर बच्चे के साथ अकेली देखा तो..." नीरू से कुछ कहते नहीं बन रहा था। अनायास पूछे गए प्रश्न का उसके पास कोई जवाब नहीं था। वह अत्यधिक तनाव में थी और सोच-समझकर तो यहाँ आई नहीं थी लेकिन वह स्त्री अनपढ़ होने के बावजूद काफी सुलझी हुई लग रही थी। उसने नीरू को आदर से अंदर बुलाया और चटाई बिछाकर उस पर बैठने का इशारा किया। "शायद आप कुछ परेशान हैं।" नीरू को पानी का गिलास पकड़ाते हुए उसने कहा। "यह तुम कैसे कह सकती हो ?" जवाब में पहले वह फिक्क से हँसी, फिर कहा, "तो ऐसे उटपटांग काम कौन करता है ? आप मुझे जानती भी नहीं, मुझसे कुछ काम भी नहीं। फिर भी मेरे पीछे-पीछे यहाँ तक आ गईं।" "घर में कोई मर्द नहीं है जो लकड़ियाँ लेकर आए।" नीरू ने बात बदलते हुए कहा। "मरद था दीदी, पर किसी काम का नहीं बल्कि मुसीबत ही था।" अचानक उस स्त्री के स्वर में आत्मीयता झलकने लगी। "रात-दिन शराब पीकर पड़ा रहता। काम करके मैं दो पैसे घर में लाती उसका वह शराब पी लेता। मुझसे और पैसे माँगता। मैं कहाँ से देती पैसा ? बच्चे के दूध के लिए जो पैसा रखती, वह भी छीनकर उसका शराब पी लेता। पैसा नहीं मिलने पर मुझे बहुत बुरी तरह मारता। कब तक सहन करती मैं ? उसकी मार खाकर शरीर में इतनी ताकत भी नहीं बचती कि मैं कोई काम करने जाऊँ।" क्षण भर की मुलाकात में ही स्त्री मुखर हो चली थी। शायद अब तक जो दर्द का गुबार उसने अपने दिल में दबा रखा था, आज मौका पाकर एक अजनबी के सामने फूट पड़ा था। "अब कहाँ है तेरा आदमी ?" "पता नहीं। छोड़ दिया मैंने उसे। दीदी, मेरे सामने दो ही रास्ते थे या तो मैं अपनी पूरी जिंदगी लड़ाई-झगड़े और उसकी मार खाते हुए गुजारती या फिर उससे अलग होकर खुद कमाकर शांति से अपना और अपने बच्चे का पेट भरती। मैंने दूसरा रास्ता चुनना सही समझा। आप ही बताइए दीदी, आप तो पढ़ी-लिखी हैं। मुझसे ज्यादा नियम कानून जानती हैं, मुझसे ज्यादा समझ रखती हैं। पत्नी पर हाथ उठाने का अधिकार किसी मरद को होता है क्या ? औरत क्या इंसान नहीं है ? उसे दुख, तकलीफ नहीं होती ? वह क्यों मार खाकर रहे ? औरत की भी अपनी इज्जत होती है। इसी इज्जत की खातिर मैंने अपने बच्चे के साथ वो घर छोड़ दिया।" उसका बात करना नीरू को अच्छा लग रहा था। एक तो इसलिए क्योंकि उसके स्वयं के विचारों के आवेग पर ब्रेक लग सके और दूसरा उसका और उस स्त्री के दुःख लगभग एक समान थे। पर इस अनपढ़ स्त्री के सामने नीरू स्वयं को बहुत छोटा महसूस करने लगी। वह तो पढ़ी-लिखी है। उसके पास

लगी-लगाई नौकरी है। अच्छी आमदनी है। इसके बावजूद वह क्यों नहीं इतना साहस जुटा पाई कि आलोक के दुर्व्यवहार का विरोध कर सके। उससे अलग होकर अपना नया संसार बसा सके जिसमें वह खुलकर साँस ले पाए। कभी-कभी ऑफिस में किसी कारणवश उसे देर तक रुकना पड़ जाता तो आलोक के तीखे व्यंग्य वाण उसे सहने पड़ते। एकबार फॉरेन डेलीगेट्स के ऑफिस में आ जाने के कारण उसे लौटने में रात के दस बज गए थे। थकान से बेहाल उसने घर में प्रवेश किया ही था कि आलोक ने तीखे व्यंग से उसका स्वागत किया, "तो तुम लौट आई। मुझे तो लगा था कि आज की रात बाहर ही गुजारने का इरादा है।" शब्दों में घुले जहर को उसने चुप रहकर आत्मसात कर लिया था। ऑफिस के काम से कभी शहर से बाहर जाना होता तब तो हजारों सवालों से उसका कलेजा बींध दिया जाता, "साथ में कौन जा रहा है, कहाँ रुकना है, तुम ही क्यों जा रही हो, कोई और क्यों नहीं ?" वगैरा-वगैरा। इन सवालों में फ़िक्र कम, शक और जाँच पड़ताल का पुट ज्यादा होता। एक तो ऑफिस के काम का दवाब, दूसरे आलोक के व्यंग्य वाण और टीका-टिप्पणी से उसका मानसिक संतुलन बिगड़ने लगा था। अत्यधिक तनाव से उसकी सोचने-समझने की शक्ति भी खत्म होती जा रही थी। "अनपढ़ होते हुए भी कितनी गहरी सोच रखती है यह स्त्री।" उसने मन-ही-मन सोचा। अचानक उसका मन उस स्त्री के लिए श्रद्धा से भर उठा। तभी उसे माँ की कही बात याद आई कि वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता। हो सकता है कि इस कथन में दम हो और उसके जीवन में बदलाव के लिए ईश्वर ने शायद यही वक्त मुकर्रर किया हो। "शायद परमात्मा मुझे जीवन की एक नई राह पर भेजना चाहता है। उस पथ का मार्गदर्शन करने हेतु ही उसने मुझे इस स्त्री से मिलवाया।" नीरू के मन में एक के बाद एक कई विचार चल रहे थे। विचारों की श्रृंखला से स्वयं को मुक्त करते हुए नीरू ने उस स्त्री से पूछा, "रिश्तेदारों ने तो साथ दिया होगा न तुम्हारा ? वरना तुम अकेली कैसे...?" नीरू के सवाल को बीच में ही काटते हुए वह बोली, "नाते रिश्तेदार तो बस नाम का ही अपने होते हैं दीदी। मुसीबत में देखकर सबसे पहले भागने वालों में अपने रिश्तेदार ही होते हैं। अब मुझे दो-चार घरों में काम मिल गया है और पैसे भी अच्छे मिलने लगे हैं तो रिश्तेदार भी लौट आए हैं।" व्यंग्य की एक स्मित रेखा उसके मुख पर दौड़ गई। "जीवन के गणित और व्याकरण का गहन अनुभव है इस स्त्री को।" नीरू ने मन-ही-मन सोचा। अभी कुछ महीने पहले ही की बात है। उसने अपनी बड़ी चचेरी बहन को, जिन्हें वह अपना बहुत करीबी समझती थी, आलोक के हिंसक व्यवहार के बारे में बताया। उसके बाद से जब भी वह उन्हें फोन करती, वह अपने व्यस्त होने का बहाना बना और बाद में फोन करने का आश्वासन देकर फोन रख देती। "चलो तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि अब सब कुछ ठीक हो गया।" नीरू ने उसे सांत्वना देने के ख्याल से कहा लेकिन जवाब में वह स्त्री हँसते हुए बोली,"यह किस्मत-विस्मत मैं नहीं मानती दीदी। कोई नहीं आता आपकी किस्मत सँवारने। अपनी किस्मत तो स्वयं ही सँवारनी पड़ती है। अगर मैं हाथ-पर-हाथ धरे बैठी रहती तो वह मेरा पति अब तक मेरा बदन तोड़ रहा होता।" उसके विचारों की सुघड़ता देखकर नीरू दंग थी। वह अनपढ़ स्त्री नीरू के जीवन में मानो एक प्रकाश पुँज बनकर आई थी जिसके आलोक में उसे न केवल जीवन का एक नवीन मार्ग दृष्टिगत हुआ बल्कि उस पर अग्रसर होने का हौसला भी हासिल हुआ। आर्थिक रूप से सशक्त न होते हुए भी एक अनपढ़ स्त्री अगर शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना का विरोध कर सकती है और अपने जीवन का इतना बड़ा फैसला सिर्फ अपने दम पर ले सकती है तो वह क्यों नहीं ? वह तो हर दृष्टि से सशक्त है। कायरों की तरह अपनी किस्मत को कोसते हुए अब तक वह आलोक का दुर्व्यवहार सहती रही लेकिन अब और नहीं। मन-ही-मन उस स्त्री का धन्यवाद करते हुए और मन में एक दृढ़ निश्चय करते हुए नीरू उठ खड़ी हुई।

*B-401, सानिध्य रॉयल, 100 फीट त्रागड़ रोड, न्यू चांदखेड़ा, अहमदाबाद, गुजरात।

लघु कहानी

दर्द ईंटों का

पुष्पेश कुमार पुष्प*

एक भट्ठे से दो व्यक्ति ने अपने-अपने कामों के लिए एक समान ईंटों को खरीदकर ले गये। एक व्यक्ति ने उन ईंटों से आम जनता के लिए एक मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ करवाया तो दूसरे ने भाइयों के झगड़ों को समाप्त कराने के उद्देश्य से एक आलीशान भवन के आंगन में बंटवारे की दीवार खड़ी करवाने का काम आरम्भ करवाया। जब मंदिर पूर्ण रूप से तैयार हो गया तो लोगों में प्रसन्नता की सीमा न रही। लोग उस मंदिर में श्रद्धा और भक्ति से पूजा-पाठ करने लगे। वहां के लोग मंदिर के निर्माण होने से परम शांति का अहसास कर रहे थे। लोगों के बीच वह मंदिर आस्था का केंद्र बन गया था। लोग उस मंदिर में पूजा-पाठ करने के साथ-साथ उन ईंटों का भी नमन करते थे। ईधर आलीशान भवन के आँगन में बंटवारे की दीवार भी पूर्ण रूप से तैयार हो गयी लेकिन बंटवारे की दीवार की ईंटों को काफी दुख सहना पड़ रहा था। लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे और काफी बुरा-भला कहते थे। जब भी कोई व्यक्ति उस आलीशान भवन में आता तो आंगन के बीच खड़ी दीवार को नफरत की निगाहों से देखता। छोटे-छोटे बच्चों के लिए खेलने वाला वह बड़ा-सा आँगन अब काफी संकीर्ण हो गया था। बच्चे भी उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस प्रकार घर का पूरा माहौल घुटन भरा हो गया था। समय बीतता गया किंतु आज भी वह मंदिर और वह बंटवारे की दीवार मौजूद है। मंदिर की दीवारों को आज भी लोग नमन करते हैं और मंदिर की दीवार की ईंटों पर लिखा है – प्रेम, श्रद्धा और भक्ति। वही आंगन के बीचों-बीच खड़ी दीवार की ईंटों पर लिखा है – नफरत और घृणा।

*विनीता भवन, निकट – बैंक ऑफ इंडिया, काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक, बाढ़, बिहार।

संस्थान की गतिविधियाँ

केन्द्रीय रेशम बोर्ड के प्लेटिनम जुबली समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी. चौधरी एवं आईसीएआर, सिफरी के निदेशक समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान करते हुए।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड के 75 साल पूरे होने पर प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम में माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह से बेस्ट साइंटिस्ट का अवार्ड प्राप्त करते संस्थान के वैज्ञानिक-डी डॉ.जय प्रकाश पाण्डेय।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड के 75 साल पूरे होने पर प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम में केन्द्रीय रेशम बोर्ड के स्मारक सिक्का जारी करते माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह एवं अन्य गणमान्य अतिथि।

संस्थान के 60वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में माननीय रक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री संजय सेठ का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

संस्थान के 60वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर आयोजित कार्यक्रम में बुकलेट का विचोमन करते माननीय रक्षा राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री संजय सेठ, संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं अन्य वैज्ञानिकगण।

संस्थान में आयोजित अनुसंधान सलाहकार समिति की 54वीं बैठक का एक दृश्य।

रेशम निदेशालय, उत्तर प्रदेश

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

रेशम रत्न सम्मान 2024

(श्रेणी– लाईफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड)

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड,
रॉची झारखण्ड को टसर रेशम क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु

योगी आदित्यनाथ

माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

द्वारा दिनांक 22 अक्टूबर, 2024 को

राकेश सचान

माननीय मंत्री, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी
एवं ग्रामोद्योग,रेशम, हथकरघा, वस्त्रोद्योग विभाग, उत्तर प्रदेश

की गरिमामयी उपस्थिती में

प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है

सुनील कुमार वर्मा, आई.ए.एस.
विशेष सचिव एवं निदेशक ,रेशम
उ0प्र0 शासन, लखनऊ

बी0एल0 मीणा, आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव, रेशम
उ0प्र0 शासन, लखनऊ